ऑल-टाइम ग्रेट क्लासिक्स
द एडवेंचर्स ऑफ
रॉबिनसन क्रूसो
अंग्रेजी उपन्यास The Adventures of Robinson Crusoe
का संक्षिप्त हिंदी रूपांतरण
डेनियल डिफो

ऑल-टाइम ग्रेट क्लासिक्स

द एडवेंचर्स ऑफ
रॉबिनसन क्रूसो

डेनियल डिफो की सर्वाधिक चर्चित कृति

रूपांतर

अनीता गौड़

मनोज पब्लिकेशन्स

प्रकाशक :
मनोज पब्लिकेशन्स
761, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, 27611546
मोबाइल : 9868112194
ईमेल : *info@manojpublications.com*
(For online shopping visit our website)
वेबसाइट : *www.manojpublications.com*

शोरूम :
मनोज पब्लिकेशन्स
1583-84, दरीबा कलां, चांदनी चौक, दिल्ली-110006
फोन : 23262174, 23268216, मोबाइल : 9818753569

ISBN:978-81-310-1754-8

प्रथम संस्करण : 2018

मुद्रक :
जय माया ऑफसेट
झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110095

रॉबिनसन क्रूसो : *डेनियल डिफो*

प्रकाशकीय

प्रतिस्पर्धा के इस युग में किसी के पास इतना समय नहीं है कि वह लंबे उपन्यासों को गहनता से पढ़ सके। लंबे उपन्यास उस समय इसलिए लिखे गए थे क्योंकि तब पढ़ने के लिए लोगों के पास काफी वक्त होता था। तब सप्ताहांत में अच्छा साहित्य पढ़ना ही मनोरंजन का मुख्य स्रोत हुआ करता था। लेकिन अब समय पूरी तरह से बदल गया है। अब पाठक ऐसी साहित्यिक सामग्री को खोजते हैं, जो छोटी, प्रभावी और चित्रों से अच्छी तरह सुसज्जित हो। कहानी को समझने में यह चित्र मदद करते हैं। हमारी यह प्रस्तुति पाठकों की इन सभी मांगों को पूरा करती है।

एक सामान्य हिंदी पाठक को सामने रखते हुए हमने उपन्यास की भाषा को कठिन शब्दावली से बचाकर कथानक को सुगम रूप से प्रस्तुत करने की कोशिश की है। जगह-जगह पर चित्रों से इस पुस्तक को सजाया गया है और प्रत्येक अध्याय को बहुत ही आसान और दिलचस्प तरीके से प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के अंत में प्रत्येक अध्याय पर आधारित कुछ प्रश्न हैं, जिनका उद्देश्य पाठकों द्वारा स्वयं का परीक्षण करना है कि उन्होंने उपन्यास को कितनी एकाग्रता से पढ़ा है।

हमें विश्वास है कि अंग्रेजी उपन्यासों को पढ़ने के इच्छुक हिंदी भाषी पाठकों के लिए तो यह उपन्यास शृंखला उपयोगी होगी ही साहित्य में रुचि रखने वालों की व्यक्तिगत लाइब्रेरी की शेल्फ की भी शोभा बढ़ाएगी।

आपके सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

❑❑

जीवन परिचय

13 सितंबर, 1660 में डेनियल डिफो का सेंट क्रिपलगेट (लंदन) में जन्म हुआ था। वे एक अंग्रेजी लेखक और पत्रकार थे, जिन्होंने अपने इस महान उपन्यास 'रॉबिनसन क्रूसो' से काफी ख्याति अर्जित की थी। उनके पिता जेम डिफो चर्बी से मोमबत्ती बनाने का काम करते थे, लेकिन उन्होंने फैसला लिया कि वे यह कारोबार नहीं करेंगे। तब उन्होंने हॉजरी और उनसे बने वस्त्रों समेत शराब का कारोबार शुरू किया। डेनियल का विवाह मेरी टफ्ली के साथ हुआ। डेनियल को पहली बार 1697 में उस समय प्रसिद्धि हासिल हुई जब सामाजिक और आर्थिक सुधारों पर उनकी शृंखला प्रकाशित हुई। 1719 से 1724 के दौरान डेनियल के उपन्यास प्रकाशित हुए, जिनसे दुनियाभर में उन्होंने ख्याति अर्जित की। वर्ष 1719 में प्रकाशित उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'रॉबिनसन क्रूसो' ने उनको एक महान उपन्यासकार की श्रेणी में ला खड़ा किया। इस उपन्यास में समुद्री यात्राओं के साथ एक निर्जन टापू में रहने के पराक्रम को दर्शाया गया है। स्कॉटिश जहाज के डूबने पर जीवित बचे एलेक्जेंडर सेलकर्क को आधार बनाकर इस कहानी को लिखा गया है।

'रॉबिनसन क्रूसो' की सफलता ने रातोरात उनका सितारा बुलंद करते हुए उन्हें एक नायक बना दिया। इससे उन्हें बहुत आमदनी भी हुई, जिससे उन्होंने अपनी सारी उधारी चुकता कर दी। उन्होंने कई अन्य उपन्यास भी लिखे जैसे मॉल फ्लेंडर्स, कर्नल जैक, कैप्टन सिंगलटन, द फोर्चुनेट मिस्ट्रेस।

जीवन के तीसरे पड़ाव में, उनके बच्चों ने उन्हें अकेला छोड़ दिया था। 71 वर्ष की उम्र में 1731 में उन्होंने इस धरती को अलविदा कहते हुए अंतिम सांसें लीं।

विषयानुक्रम

अध्याय-1

मेरी पहली समुद्री यात्रा

सन् 1632 में, सिटी ऑफ यॉर्क के एक संभ्रांत परिवार में, मेरा जन्म हुआ था। मेरे दो बड़े भाई थे। इनमें से एक फ्लांडर्स में अंग्रेजी सेना की पैदल रेजिमेंट में लेफ्टीनेंट कर्नल थे और स्पेनियार्ड्स के खिलाफ युद्ध के दौरान डनकिर्क में मारे गए थे। मेरे दूसरे भाई के बारे में मुझे कोई खास जानकारी नहीं है। जहां तक मुझे याद है, मेरी मां और पिताजी को मेरे बारे में भी, बाद में, कुछ पता नहीं चल पाया होगा।

एक दिन ह्यूल में जहां मैं आमतौर पर रहता था, मेरा एक दोस्त अपने पिता से मिलने के लिए समुद्री जहाज से लंदन जाने वाला था। मेरी समुद्री यात्रा की लालसा को जानते हुए, उसने मेरे सामने अपने साथ चलने का प्रस्ताव रखा। मेरे पास किराए आदि के लिए पैसे नहीं थे, तो भी उसने बिना किसी खर्च के इस यात्रा को कराने का मुझसे वादा किया। किसी अन्य युवा की तरह मैं भी इस साहसिक यात्रा का अवसर नहीं छोड़ना चाह रहा था। इसलिए मैं शीघ्र ही इस लंबी यात्रा के लिए तैयार हो गया। अभी यात्रा शुरू भी नहीं हुई थी कि एक अजीबोगरीब स्थिति सामने आ खड़ी हुई।

जहाज अभी लंगर से बंधा हुआ ही था कि तेज हवाएं चलने लगीं और समुद्र में ऊंची तरंगें उठने लगीं। सब बड़ा भयानक था। चूंकि मैंने पहले कभी समुद्र को देखा नहीं था इसलिए मेरे दिमाग में हलचल पैदा होने लगी, मेरा पूरा शरीर भय से कांप उठा और मैं बुरी तरह से डर गया।

देखते-ही-देखते सागर में भयंकर आंधी आ गई। मेरे सामने एक

ऐसा आतंक छाया हुआ था, जिससे सभी भयभीत थे। यहां तक कि वो भी जो सागर में अकसर रहा करते हैं—वह उनके घर जैसा है।

आंधी ने उग्र रूप धारण कर लिया था। मैं देख रहा था कि जहाज के कप्तान समेत तमाम कर्मचारी अपने कार्यों के प्रति कुछ ज्यादा ही संवेदनशील हो गए थे और बाकी लोग ईश्वर की प्रार्थना कर रहे थे कि वह उनके जहाज को बचा ले।

आधी रात को जब आंधी खत्म हुई तो निराशा की स्थिति में कुछ लोग जहाज का जायजा लेने के लिए निकले और घबराए हुए वापस आए। उन्होंने बताया कि जहाज में एक स्थान पर छेद हो गया है, जहां चार फीट तक पानी भर गया है।

सभी को उस पानी को निकालने के लिए बुलाया गया। इन हालात को देखकर मैं डर गया। मुझे लगा कि मौत अब मेरे सामने खड़ी है और केबिन में अपने बिस्तर के पास ही घबराकर गिर गया। हालांकि वहां मौजूद अन्य लोगों ने मुझसे कहा कि घबराने से कुछ नहीं होगा, अभी हमारे पास बचने का मौका है। यदि हम लोग सारा पानी बाहर निकाल दें, तो हम बच सकते हैं।

इसके बाद हम सभी उस काम में पूरी तरह से जुट गए। लेकिन काफी कोशिशों के बाद भी पानी कम होने का नाम नहीं ले रहा था। आंधी की वजह से जहाज समुद्र में रास्ता भटककर इतनी दूर तक आ गया था कि वहां से दूर-दूर तक कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। हम समुद्री किनारे से इतनी दूर थे कि वहां तक तैरकर पहुंच पाना किसी भी तरह से मुमकिन नहीं था।

तभी हमारे जहाज से कुछ दूर एक छोटा जहाज दिखाई दिया, जिससे मदद मांगने के लिए कप्तान ने बंदूक से फायरिंग की। वह नौका हमारी मदद के लिए नजदीक आई, लेकिन इस जहाज से उस नौका पर सवार होना काफी मुश्किल लग रहा था। हालांकि उस नौका पर सवार लोग दयालु थे और हमें बचाने का अथक प्रयास करते हुए हमें जोरों से आवाज लगा रहे थे। जहाज पर मौजूद यात्रियों ने इसका हल
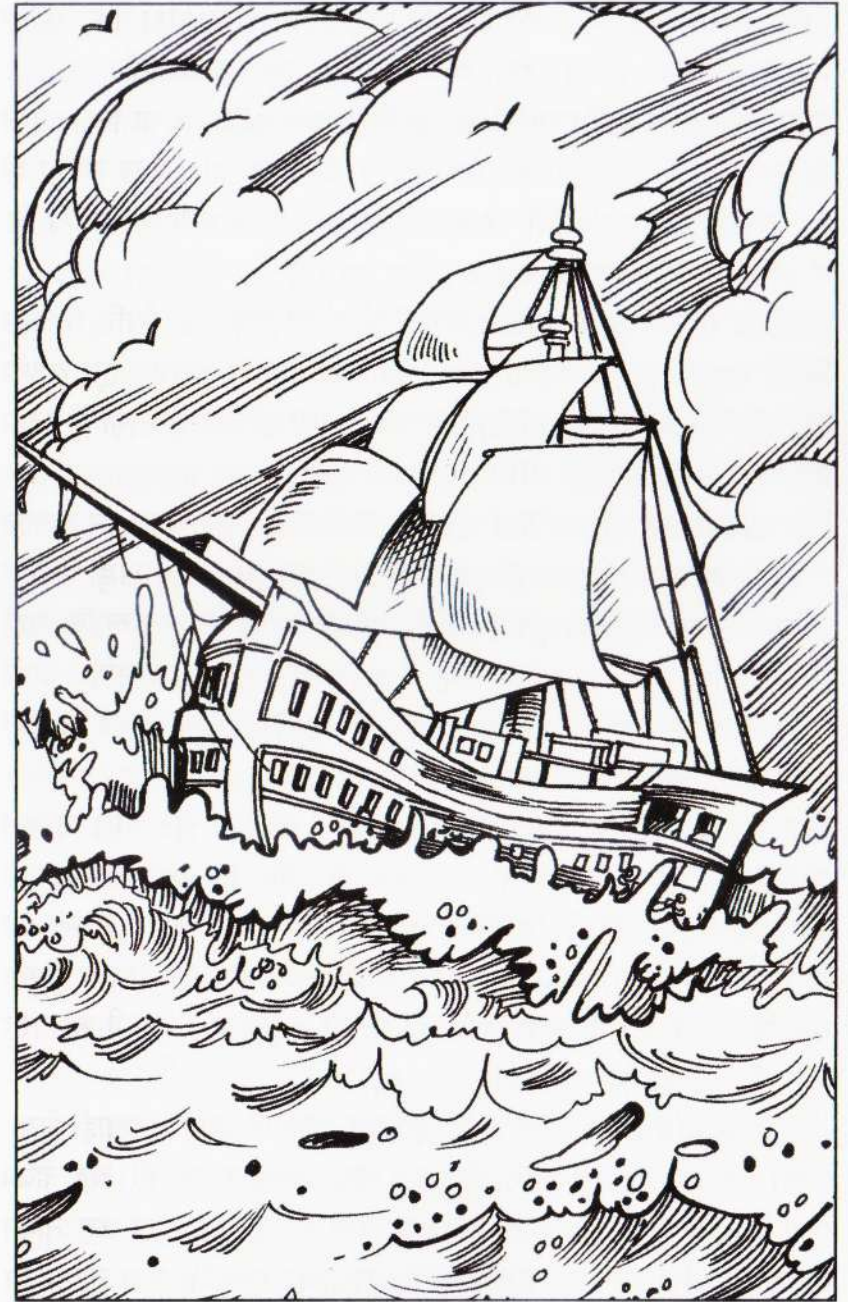
जहाज लंगर से बंधा हुआ था और उधर तेज हवाएं चलने लगी थीं। देखते ही देखते समुद्र में भयानक तरंगें उठने लगीं थीं।

निकाला और एक मोटी रस्सी को उस नौका पर फेंकते हुए दोनों छोरों को कसकर बांध दिया। काफी मेहनत के बाद इस काम में हमें सफलता हासिल हुई और आखिरकार हम उस नौका तक पहुंचने में कामयाब भी हो गए।

इस नौका में सवार होने के बाद न तो उनके और न ही हमारे दिमाग में अपने गंतव्यों तक पहुंचने की बात आ रही थी। दोनों ही तरफ के लोगों के बीच एक मौन सहमति इसी बात को लेकर थी कि जल्द ही किसी समुद्री तट पर पहुंचा जाए। हमारे कप्तान ने उनसे वादा किया कि एक बार समुद्री तट आ जाने के बाद, परिस्थितियों के अनुसार, हम पूरी मदद के लिए तैयार रहेंगे। इस प्रकार समुद्र में तैरते हुए हमारी नौका विंटनटॉन नेस से दूर नॉर्थवार्ड की ओर किनारे पर जा पहुंची।

हम जब अपने जहाज से बचकर निकले थे, उसके महज 15 मिनट के बाद ही वह समुद्र में डूब गया था। तब मैंने पहली बार यह समझा कि समुद्र में तैरने वाले जहाज के पानी में डूबने का क्या अर्थ होता है।

जब हमारी यह नौका समुद्री किनारे के नजदीक पहुंच रही थी, ठीक उसी समय वहां जोरदार लहरें उठने लगीं। वहां समुद्र किनारे काम करने वाले श्रमिकों और मल्लाहों ने हमारे हालात को भांप लिया और सभी लोग हमारी मदद को आगे बढ़े। लेकिन तेज लहरों में उनकी गति इतनी धीमी थी कि वे कितने समय में हमारे पास पहुंचेंगे, इसका अंदाजा हम नहीं लगा पा रहे थे। आंधी का स्पष्ट प्रभाव यहां भी दिखाई दे रहा था। यहां का लाइट हाउस ध्वस्त हो चुका था। तेज तूफान ने समुद्री किनारों को बुरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था।

किसी तरह हम लोग किनारे पर पहुंचे और नौका से सुरक्षित बाहर उतरे। यहां से कुछ दूर चलते हुए हम लोग यारमाउथ पहुंचे, जहां हमें ऐसा महसूस हुआ कि हम दुर्भाग्यशालियों को अच्छे लोगों का साथ मिल गया और हम बच गए। हमारा हालचाल जानने के लिए शहर में मजिस्ट्रेट भी हमसे मिलने आए थे। उन्होंने वहां अच्छे घरों में ठहराने का हमारा इंतजाम किया, साथ ही हमें पर्याप्त रकम भी मुहैया कराई, ताकि

हम अपनी इच्छा के अनुसार लंदन तक की यात्रा पूरी कर सकें या फिर वापस ह्यूल लौट सकें।

अब मेरा दिमाग दुनिया को समझने लगा था और वापस अपने घर ह्यूल जाने की बात को सोचकर खुश था। लेकिन मेरा दुर्भाग्य मुझे कहीं और लेकर जाना चाह रहा था–इसलिए वह मेरी इस सोच में आड़े आ रहा था।

मेरे दोस्त ने, जिसने कई बार विपरीत परिस्थितियों में मेरी सहायता की थी, जो उस जहाज के मालिक का बेटा था, मुझे अपने साथ चलने को राजी कर लिया। मैं उसकी सारी बातें सुनता रहा और उसकी 'हां' में 'हां' मिलाता रहा, हालांकि उसके पिता ने मुझे अपनी यात्रा यहीं खत्म कर वापस घर जाने के लिए कहा था। उन्होंने मुझसे कहा था, "नौजवान, तुमने अभी ज्यादा समुद्री यात्राएं नहीं की हैं। समुद्र में आने वाले खतरों को तो तुम देख ही रहे हो। इसलिए मेरी बात मानो और वापस अपने घर चले जाओ।"

और कुछ समय बाद मैं उनसे बिछुड़ गया, मैं उन लोगों को नहीं खोज पाया। वे लोग किस रास्ते से कहां गए, मैं नहीं जान सका। जहां तक मुझे याद है, मेरी जेब में उस समय कुछ ही पैसे थे। मैं सड़क मार्ग से लंदन के लिए विदा हो गया और वहां की सड़कों पर मैंने बहुत संघर्ष किया। मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि मुझे घर लौट जाना चाहिए या समुद्र की यात्रा पर जाना चाहिए।

लेकिन घर लौटने के बारे में सोचते ही उसके बाद की स्थितियों को भांपकर मैं सहम जाता था। मुझे घर लौटने के नाम से ही शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। मैं जानता था कि मेरे घर लौटने से किसी को खुशी नहीं होती–मेरे माता-पिता समेत मेरे पड़ोसी भी मेरी हंसी उड़ाते।

मैं लंदन में, एक कंपनी में काम करने लगा, जहां कुछ सहयोगी मेरे साथ काफी बुरा बर्ताव करते थे। वे दुष्ट प्रकृति के थे और कई चीजों में मेरा हिस्सा हड़प जाते थे। उन्हीं दिनों एक बार मौका मिलते ही मैं सोने की गिन्नियों का कारोबार करने वाले समुद्र के तट पर एक जहाज

के मालिक के साथ उस पर सवार हो गया और मुझे वहां कामयाबी भी मिली। मैं एक बार फिर से आगे की यात्रा पर निकल पड़ा। मेरी बातचीत से वे बहुत प्रभावित हुए, वो मेरी बातों से सहमत भी थे। मेरी पूरी बात को सुनने के बाद उन्होंने मुझसे कहा, 'तुममें दुनिया देखने का माद्दा है और इसकी पूरी क्षमता भी है। यदि तुम चाहो तो मेरे साथ समुद्री यात्रा पर चल सकते हो और उसके लिए तुम्हें कुछ भी खर्च नहीं करना होगा। इसके लिए मुझे उनका दोस्त बनना होगा।' इस प्रकार की उत्साहपूर्ण बातें सुनने के बाद मैंने उनके साथ चलने की योजना बनाई और वाकई में यह बहुत ही साहसिक कदम था।

मैंने इस मौके को हथियाते हुए कप्तान के साथ दोस्ती गांठ ली। कप्तान एक ईमानदार और नेकदिल इंसान था। यात्रा के दौरान आने वाली दिक्कतों से दो-दो हाथ करते हुए हम आगे बढ़ रहे थे, साथ ही इस मामले में मेरी परिपक्वता भी बढ़ रही थी। कप्तान के निर्देशानुसार मैंने तकरीबन 40 पाउंड के खिलौने और कुछ सस्ती चीजें खरीदकर अपने साथ रख लीं। ये 40 पाउंड मैं अपनी पहली साहसिक यात्रा शुरू करते समय अपने साथ लेकर चला था, जिन्हें मैंने अपने रिश्तेदारों आदि से इकट्ठा किया था।

जहां तक मैं समझता हूं, केवल यही समुद्री यात्रा मेरे जीवन में सफल कही जा सकती है। इस दौरान मैंने अपने कप्तान मित्र से एकता और ईमानदारी का पाठ सीखा। उनसे मैंने गणित और नौकायन के नियमों का पर्याप्त ज्ञान हासिल किया। समुद्री यात्रा के दौरान होने वाली तमाम गतिविधियों को मैंने बारीकी से देखा और उन्हें समझा। एक नाविक को किन चीजों की जरूरत होती है, इन सारी बातों को भी मैंने जाना-समझा। सारांश में कहा जाए तो इस यात्रा के दौरान मैंने नाविक के कार्यों और समुद्री व्यापार के तमाम पहलुओं को समझा। घर से चलते वक्त मैं अपने साथ पांच पाउंड नौ औंस के मूल्य की सोने की गिन्नियां लेकर चला था, जो लंदन पहुंचते-पहुंचते बढ़कर तकरीबन 300 पाउंड हो गई थीं। इससे मेरी सोच में जो बदलाव आया था, उसे मैं आज महसूस कर रहा हूं।

अध्याय-2

समुद्री डाकुओं द्वारा कब्जा

अब तक मैं सोने की गिन्नियों के व्यापारी के रूप में स्थापित हो चुका था। लेकिन मेरे साथ एक दुर्भाग्यशाली घटना यह हुई कि मेरे उस मित्र का यहां देहांत हो गया। मैंने फिर से समुद्री यात्रा पर जाने की तैयारी पूरी कर ली। अपनी पिछली यात्रा से सबक लेते हुए इस बार मैं पूरी तैयारी के साथ यात्रा पर निकला और जहाज पर नियंत्रण कायम रखने का भी मैंने पूरा बंदोबस्त किया। परंतु इस बार की यात्रा मेरे लिए लाभकारी नहीं रही। इसमें मुझे 100 पाउंड का नुकसान हुआ। इस प्रकार मेरे पास अब 200 पाउंड बचे हुए थे, जिससे मैं अपने दोस्त की विधवा की मदद करना चाहता था। मेरे सिवाय उसका अब कोई भी मददगार नहीं था। इस तरह यह समुद्री यात्रा मेरे लिए नुकसानदेह साबित हुई। पहले तो हमारा जहाज कैनरी द्वीप समूह की ओर भटक गया। फिर इन द्वीप समूहों और अफ्रीकी किनारों के पास चला गया। और बाद में, इसी दौरान, तुर्की के समुद्री लुटेरों ने हमारा पीछा करते हुए हमारा सारा माल लूट लिया।

वह पूरी तैयारी के साथ हम पर आक्रमण करने आए थे। उनसे हमने खुद ही अपना बचाव किया। जब हम बोर्ड पर थे, उसी दौरान 60 लुटेरे वहां डेक पर आए और तेजी से हम सबको घेर लिया। हमने अपने साधनों और पूरी ताकत के साथ उनका मुकाबला किया और उनसे लोहा लेते हुए दो बार उन्हें डेक पर से खदेड़ दिया। हालांकि, इस दर्दनाक हादसे में न केवल हमारा जहाज क्षतिग्रस्त हुआ, बल्कि हमारे तीन लोग मारे गए तथा आठ घायल भी हो गए। बाकी बचे लोगों को बंदी बनाकर

ले जाया गया, जो उस समय मूर्स के कब्जे में था। यहां आकर मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था। यहां किसी ने भी मुझे तंग नहीं किया और न ही कोई मुझे यहां के शासक के दरबार में ले गया, जबकि मेरे साथ के अनेक लोगों को वहां ले जाया गया। कप्तान ने अपने व्यवसाय के योग्य जानकर हमें अपना गुलाम बना लिया।

चूंकि मेरा नया मालिक या संरक्षक मुझे अपने साथ अपने घर लेकर गया था, इसलिए मुझे इस बात की उम्मीद बंध-सी गई थी कि अब जब कभी यह समुद्री यात्रा पर जाएगा, तो मुझे जरूर अपने साथ लेकर जाएगा। मुझे विश्वास होने लगा था कि मेरा भाग्य एक दिन जरूर मुझे स्पेन या पुर्तगाल पहुंचा देगा, इसलिए अब मुझे निश्‍चिंत हो जाना चाहिए। लेकिन मेरी उम्मीदों को उस समय एक बड़ा झटका लगा, जब मुझे अकेला किनारे पर छोड़कर मालिक यह आदेश देकर चला गया कि मैं उसके घर की देखरेख करने वाले गुलामों की निगरानी करने के साथ ही उसके बगीचे की देखभाल भी करूं। और फिर जब वह यात्रा से लौटा तो उसने मुझे जहाज के केबिन की देखरेख करने का भार दिया।

यहां मैं अपने बचाव के सभी रास्तों की खोज करता रहा, परंतु मुझे अब इसकी संभावना कम होती दिखाई दे रही थी। मैं किसी को जानता भी नहीं था कि उससे इन बातों को साझा करता। न तो कोई गुलाम, न अंग्रेज, न आयरिश या न स्कॉटिश। तकरीबन दो सालों तक मैं इन सबसे जूझता रहा और इस दौरान किसी भी तरह की प्रेरणा मुझे नहीं मिली।

इस तरह की विपरीत परिस्थितियों में दो साल गुजारने के बाद हालात कुछ इस तरह के बने कि मैं स्वयं में सकारात्मक सोच भरने लगा। स्वयं को मुक्ति के लिए मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार करने लगा। अपने जहाज को पूरी तरह ठीक किए बिना ही मेरा मालिक, जैसा कि मैंने सुना था, धन पाने की लालसा में सप्ताह में एक या दो बार मौसम ठीक रहने पर अकसर सड़क मार्ग से ही मछली पकड़ने के लिए बाहर जाने लगा था। चूंकि वह अकसर मुझे अपने साथ ले जाता था और मैं मछली पकड़ने में उसकी काफी मदद भी करता था, इसलिए

वह कभी-कभी मुझे अपने एक संबंधी मुअर और एक अन्य नौजवान मेरेस्को के साथ भेजता था। वे लोग उसकी पसंद के अनुसार मछली पकड़कर लाते थे।

एक दिन ऐसा हुआ कि सभी लोग एक शांत-सी सुबह के घने कुहासे में मछली पकड़ने के लिए निकले। किनारे से कुछ ही दूर जाने पर कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। हमें वहां कोई भी रास्ता नहीं सूझ रहा था। हम लोग समुद्र तट से महज डेढ़ मील दूर थे, इसके बावजूद कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। हम लोग रात भर मेहनत करते रहे और जब सुबह हुई तो देखा कि किनारे की ओर जाने की बजाय हम किनारे से 6 मील दूर निकल गए हैं। उस समय तक हम बुरी तरह से थक चुके थे और खतरों से जूझते हुए दोबारा प्रयास में लग गए। इधर हम सभी जोरों की भूख से बेहाल भी हो चुके थे।

लेकिन हमारे मालिक ने सबको इस आपदा के लिए सतर्क किया हुआ था और भविष्य में इससे बचाव के लिए सबको सावधानी बरतने का निर्देश भी दिया हुआ था। उसने हमें कहा था कि अपने साथ उसका अंग्रेजी जहाज लेकर जाएं। साथ ही हमें सुझाव दिया था कि मछली पकड़ने के लिए कंपास और जरूरी सामानों के बिना कभी भी समुद्र में नहीं जाना चाहिए। अत: उसने अपने जहाज के बढ़ई को आदेश दिया कि लंबी नौका के बीच में एक छोटा-सा कमरा या केबिन बना दे, ताकि वहां एक-दो लोग अपने घर की तरह आराम से काम कर सकें। वह बढ़ई भी एक अंग्रेज गुलाम था। उस केबिन में सभी चीजें दुरुस्त कर दी गईं। उसमें एक-दो गुलामों को रखने का प्रबंध भी किया गया। साथ ही एक खाने की टेबल और एक छोटा-सा लॉकर, जिसमें शराब की कुछ बोतलें, ब्रेड समेत चावल और कॉफी स्टोर की गई, ताकि जरूरत के वक्त उनका उपयोग किया जा सके।

हम लोग नौका से मछली मारने के लिए तेजी से निकल पड़े। चूंकि मछली पकड़ने में मैं उन सभी लोगों में सबसे ज्यादा दक्ष था, इसलिए मुझे अपने साथ लिए बिना वे कभी भी इस काम के लिए नहीं जाते थे।

ऐसा अकसर होता था कि वे घूमने के इरादे से या फिर मछली पकड़ने के इरादे से बाहर निकलते तो दो या तीन हब्शियों को जरूर साथ लेते। इसके बाद उन्हें बोर्ड पर भेजा जाता ताकि वे उसे पाउडर से पूरी तरह से साफ रखें। उस जगह पर उन्होंने मछलियों को फंसाने और पकड़ने की कुछ युक्तियां लगा रखी थीं।

मैं उनके दिशा-निर्देशों के अनुसार सभी चीजों को दुरुस्त कर, अगली सुबह नाव की साफ-सफाई करने के बाद उनके मेहमानों को सभी चीजें मुहैया कराने का इंतजार कर रहा था। कुछ देर बाद मेरे मालिक बोर्ड पर अकेले आए और मुझसे कहा कि मेरे दोस्त अपने कारोबार के सिलसिले में बाहर चले गए हैं। उन्होंने मुझे आदेश दिया कि सदा की तरह एक आदमी और लड़के के साथ मैं नौका से मछलियों को पकड़ने के लिए जाऊं। उनके मित्र खाना खाने के लिए उनके यहां आने वाले हैं और उनके आदेशों के मुताबिक कुछ मछलियां मुझे लाकर उनके घरों तक पहुंचानी हैं। मैं इस सबकी तैयारी में जुट गया।

इस दौरान मुझे यह जानकर खुशी हुई कि एक समय वह भी था, जब मैं एक छोटे से जहाज पर नियंत्रण नहीं रख पाता था। मेरे मालिक चले गए और मैं खुद को तैयार करने में लग गया, मछलियों के कारोबार के लिए नहीं, बल्कि समुद्री यात्रा के लिए। हालांकि मैं अब तक यह नहीं समझ पाया था कि मुझे क्या करना चाहिए और कहां जाना चाहिए।

इस मामले में मैंने पहली युक्ति यह लगाई कि बोर्ड पर ही अपने जीविकोपार्जन के लिए दूसरे तरीकों के बारे में हब्शी से बातचीत की जाए। मैंने उससे कहा कि हमें अपने मालिक की आजीविका को नहीं छीनना चाहिए। उसने अपनी सहमति जताते हुए कहा कि यह सही है। वह एक बड़ी टोकरी लेकर आया, जिसमें बिस्कुट समेत खाने की कुछ अन्य सामग्रियां और ताजे पानी के तीन जार थे। इन सबको हमने नाव पर रखा।

मुझे मालूम था कि मेरे मालिक इन बोतलों को कहां रखते हैं। मैंने सभी चीजों को ठीक तरह से रखने के बाद किनारे पर खड़े हब्शी को

नौका में आने के लिए बुलाया और उसे अन्य जरूरी सामग्रियों को नौका में रखने के लिए कहा।

इस तरह से जरूरत की सभी चीजों को रखने के बाद हम लोग मछली पकड़ने के लिए समुद्र में निकल पड़े। उत्तर-पूर्व से हवा चल रही थी, जो मेरी जरूरतों के विपरीत थी। यदि यह दक्षिण दिशा की ओर से चलती तो हम निश्चित रूप से स्पेन के तट की ओर जाते और केडिज की खाड़ी पहुंच जाते। लेकिन मैंने भी ठान लिया था कि चाहे जिस दिशा में हवा चले, मुझे उस दिशा में जाना है। मैंने भयानक स्थानों पर पहुंचने और इस भूमि से आगे बढ़ने का इरादा पक्का कर लिया था।

जब मैंने पीछे नजर डाली तो देखा कि मैं तीन मील दूर निकल चुका हूं। तब मैं चाहता तो मछली का शिकार कर सकता था। जब मैंने उस लड़के को नाव की पतवार थमाई तो मैं यह देखने के लिए बढ़ा कि वह हब्शी कहां है। मैंने कुछ ही क्षण बाद उसे अपने पास पाया। वह बोर्ड पर इस प्रकार से लेटा हुआ था कि थोड़ी-सी भी असावधानी होने पर वह समुद्र में गिर सकता था। वह तेजी से जागा और उसने मुझसे गुहार लगाई कि वह दुनिया में कहीं भी मेरे साथ चलने को राजी है। नौका से बाहर भी वह तैर सकता था। मैं केबिन के भीतर गया और पकड़ी हुई मछलियों को लाकर उसे खाने के लिए दिया। मैंने उसे आश्वासन दिया कि मैं उसका कोई नुकसान नहीं करूंगा। यदि वह शांत रहा तो मैं उसे कुछ नहीं कहूंगा। अतः वह वहां से तैरते हुए किनारे की ओर चला गया। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि वह आसानी से किनारे तक पहुंच गया होगा, क्योंकि वह एक शानदार तैराक था।

जब वह चला गया तो मैं उस लड़के की तरफ मुड़ा, जिसका नाम जूरी था। मैंने उससे पूछा, "यदि तुम मेरे विश्वासपात्र बनोगे तो मैं तुम्हें महान आदमी बना दूंगा, लेकिन यदि तुम मेरे साथ धोखाधड़ी करोगे, तो मैं तुम्हें समुद्र में फेंक दूंगा।"

वह लड़का मेरी ओर देखकर मुस्कराया और बड़े ही निर्दोष भाव से बोला, "मुझे आप पर पूरा भरोसा है।" उसने मेरा भरोसा कायम रखने की

शपथ ली और हमेशा मेरा साथ निभाने का वादा किया। जैसे-जैसे शाम का धुंधलका छाता जा रहा था, वैसे-वैसे हम लोग दक्षिण से पूरब की ओर बढ़ते जा रहे थे। मुझे महसूस हो रहा था कि हम लोग अब काफी आगे निकल चुके हैं। यहां काफी ताजी हवा चल रही थी तथा समुद्र पूरी तरह से शांत था। मुझे विश्वास हो रहा था कि हम लोग अगले दिन दोपहर तीन बजे तक किसी तट के समीप पहुंच सकते हैं। अभी हम सेले से डेढ़ सौ मील से कम की दूरी पर पहुंच चुके थे, जो मोरक्को साम्राज्य से थोड़ा पहले था।

तट के नजदीक पहुंचकर मैंने वहां उतरने का साहस बटोरा और एक छोटी-सी नदी के मुहाने के पास पहुंचा। मुझे नहीं पता था कि मैं कहां, किस देश में, कितने अक्षांश या किस नदी के पास पहुंच चुका हूं। मुझे वहां दूर-दूर तक न तो कोई आदमी दिखाई दे रहा था और न ही मुझे किसी की जरूरत थी। मैं यहां केवल शुद्ध पानी की खोज में आया था। हम लोग इस खाड़ी में शाम के वक्त पहुंचे थे और अंधेरा होने से पहले इसका समाधान कर कोई देश खोज लेना चाहते थे। लेकिन जैसे-जैसे अंधेरा गहराने लगा, वैसे-वैसे हमें जानवरों के दहाड़ने, चिल्लाने और चिंघाड़ने की भयानक आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। इन भयानक आवाजों से भयभीत होकर बेचारा वह लड़का बुरी तरह से थरथर कांपने लगा और मुझसे किनारे पर नहीं जाने की प्रार्थना करने लगा।

समुद्र में उठने वाली लहरों के थमने के बाद हमें शुद्ध जल की खोज के लिए कहीं भटकना नहीं पड़ा। उस खाड़ी में वहीं पास में ही साफ पानी का एक अच्छा स्रोत हमें दिखाई पड़ा।

इस ठहराव के बाद हम लगातार दस या बारह दिनों तक दक्षिण दिशा की ओर लगातार बढ़ते रहे। अब हमारे पास रखी हुई सारी चीजें खत्म होने के कगार पर पहुंच गई थीं। हम अब जल्द ही समुद्र का किनारा पाने को व्याकुल हो रहे थे, ताकि कहीं से शुद्ध पानी का इंतजाम किया जा सके। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हम अब गाम्बिया या सेनेगल नदी की ओर जा रहे थे। मुझे उम्मीद थी कि उस जगह हमें कुछ
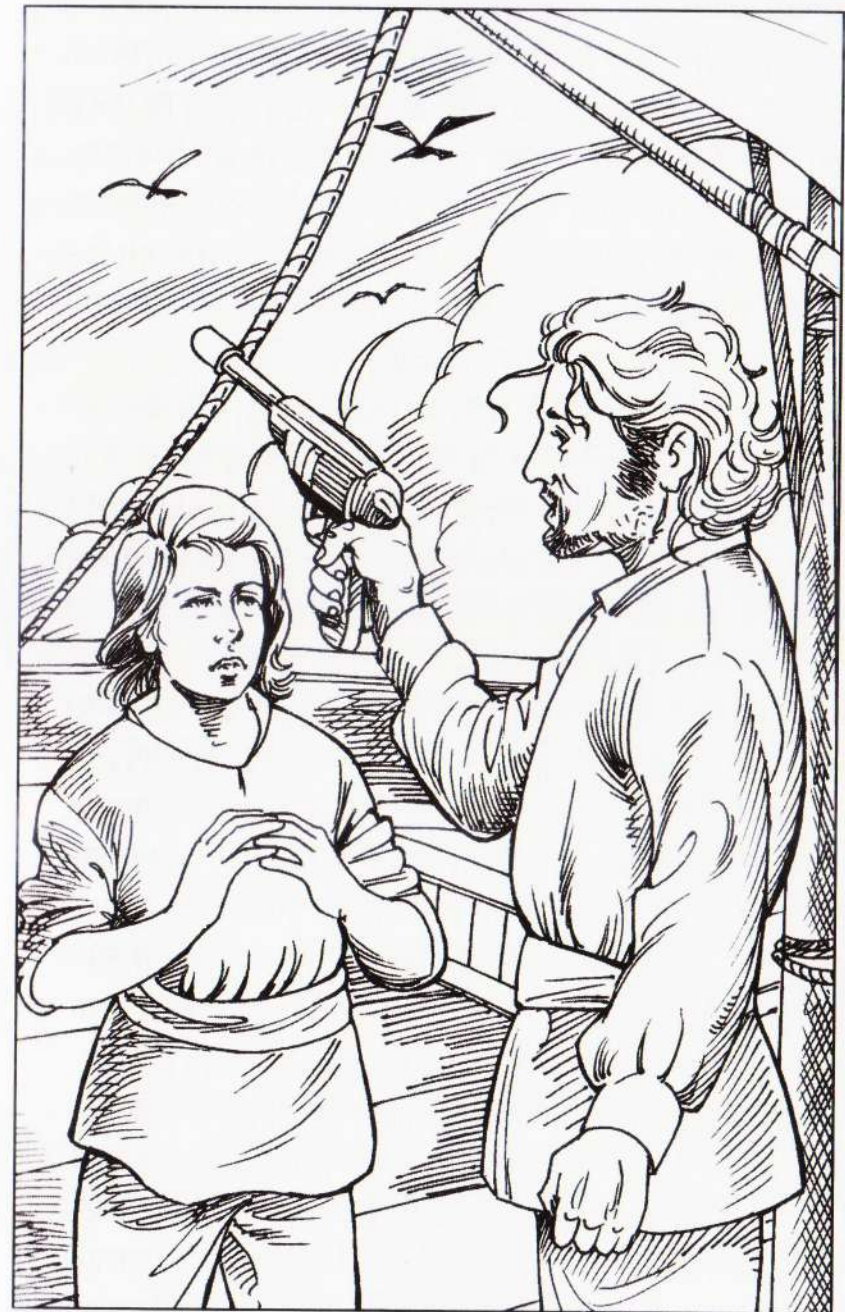
मैंने जूरी से कहा, "यदि तुम मेरे विश्वासपात्र बनोगे तो मैं तुम्हें महान आदमी बना दूंगा।"

यूरोपीय जहाज मिल सकते हैं। मैं अपनी इस विचारधारा पर दस दिनों तक कायम रहा। जैसा कि मैंने कहा था, मुझे अब दूर से ही धरती दिखाई देने लगी थी, जहां कुछ आवास भी थे। वहां हमने अपना लंगर डाला। वहां दो या तीन जगहों पर लोग हमारी ओर देख रहे थे। वे लोग देखने में अश्वेत लग रहे थे। मैं एकाएक उन लोगों की तरफ मुड़ा और उनसे बात करने के लिए तट पर आगे की ओर बढ़ा। लेकिन यहां जूरी ने एक बेहतर सलाहकार की भूमिका निभाते हुए मुझसे कहा, "वहां जाने की कोई जरूरत नहीं है। आप वहां मत जाओ।" फिर भी मैं उसकी बात को काटते हुए तट पर उनसे बात करने के लिए आगे की ओर बढ़ा तो मैंने देखा कि वे लोग अच्छी नीयत से मेरी ओर बढ़े हुए आ रहे हैं।

मैंने देखा कि उनमें से किसी के हाथ में कोई हथियार नहीं था। केवल एक आदमी के पास एक हथियार था, जिसका नाम जूरी ने लांस बताया था और उसे वे बहुत दूर से फेंक कर मारने में सक्षम थे। इसलिए मैंने उनसे कुछ दूरी बनाए रखी और इशारों से ही उनसे बात करने की कोशिश की। वे खासतौर पर कुछ खाने के लिए इशारा कर रहे थे। वे मुझसे वहां अपनी नाव रोककर कुछ भोजन करने को कह रहे थे और मेरे खाने के लिए वे कुछ मांस के टुकड़े लेकर आए भी।

इसके बाद मैं वहां ठहर गया। लेकिन उनमें से दो लोग बस्ती की ओर भागकर गए और तकरीबन आधे घंटे के बाद कुछ सूखे मांस के टुकड़े और अनाज लेकर वहां आए। हालांकि मुझे यह नहीं पता कि उस अनाज की पैदावार वहां होती थी या नहीं और वे लोग कौन थे, फिर भी हमने खाना खाया। यह सब क्यों हुआ था–यह एक अलग विषय था। मैं वहां किसी तरह का पराक्रम नहीं दिखा रहा था, लेकिन वे लोग कुछ हद तक भयभीत जरूर दिख रहे थे। उन लोगों ने हमसे दूरी बनाकर रखी थी और जब मैं किनारे पर आ गया, तब भी उन लोगों ने मुझसे एक पर्याप्त दूरी ही कायम रखी।

तब मैंने उनसे इशारे से कुछ पानी मुहैया कराने की मदद मांगी और अपना पानी का कनस्तर उन्हें उलटकर दिखाया कि वह बिलकुल खाली

है और मैं इसे भरना चाहता हूं। उन्होंने कुछ दोस्तों को वहां बुलाया। इतने में दो महिलाएं तट की ओर आगे बढ़ीं। मैंने जूरी को तीनों खाली कनस्तर लेकर उसमें पानी भरकर लाने के लिए तट पर भेजा।

अब तक मैंने वहां से हासिल हुए सभी अनाज को सही तरीके से ठिकाने लगा दिया था। इन नीग्रो दोस्तों से हुई एक अच्छी मुलाकात के बाद मैं बिना किसी समुद्री तट के पास फटके तकरीबन ग्यारह दिनों तक लगातार समुद्र में तब तक रहा, जब तक मुझे धरती नहीं दिखाई दी। मैंने देखा कि इस शांत से सागर में तकरीबन 12 से 15 मील की दूरी पर समुद्र का तट और उससे लगी धरती दिखाई दे रही है। मैंने वहां तक पहुंचने का प्रयास तेज कर दिया। सागर तट से तकरीबन छह मील की दूरी शेष रहने पर वहां तक पहुंचना और भी कठिन लग रहा था। वहां दूर मैदानी जमीन दिखाई दे रही थी, जिससे मैंने यह अंदाजा लगाया कि हम किसी सही जगह पर पहुंच गए हैं–वह जगह केप डी वर्ड द्वीप समूह था, हालांकि किनारा अभी मुझसे दूर था। मैं अच्छी तरह नहीं कह सकता कि वहां तक पहुंचने के लिए बेहतर प्रयास क्या किया जाता, क्योंकि ताजी हवाएं हमें वहां तक जल्द पहुंचने में मुश्किल पैदा कर रही थीं।

इस उहापोह की स्थिति से मैं काफी बेचैन था। मैं केबिन में आकर बैठ गया। इधर जूरी ने पतवार थाम रखी थी। थोड़ी ही देर बाद वह लड़का जोर से चिल्लाया, "मालिक, मालिक! सागर में एक जहाज दिखाई दे रहा है!" और वह बेवकूफ लड़का डर से कांपने लगा। वह सोच रहा था कि वह जहाज निश्चित रूप से हमारा पीछा कर रहा है। मैं केबिन से तेजी से बाहर निकला। मुझे जहाज पर दूर से ही नाम लिखा हुआ दिखाई दिया। वह एक पुर्तगाली जहाज मालूम हो रहा था। मैं सोच रहा था कि मुझे गिन्नियों के लिए नीग्रो तट तक जल्द ही पहुंचना चाहिए। इतने में मैंने अनुमान लगाया कि वे लोग अब दूसरी दिशा की ओर जा रहे थे। सागर की ओर देखते हुए मैंने उनसे, संभव होने पर, बातचीत करने का मन बनाया।

सागर की लहरों पर हमारी नौका तैरते हुए आगे बढ़ रही थी। मुझे

लगा कि हमें अब उनकी ओर नहीं बढ़ना चाहिए। वे लोग इतनी दूर निकल चुके थे कि उन्हें सिगनल भी नहीं दिखाया जा सकता। धीरे-धीरे वह जहाज नजदीक आता हुआ दिखा। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि वह जहाज भी अपना रास्ता भटक चुका था और वह कोई यूरोपियन जहाज था। उन लोगों ने हमें अपने पास बुलाया, जिससे मेरा उत्साह कुछ बढ़ा। समुद्री यात्रा के बहुत से टिप्स मैंने अपने मालिक से सीखे थे। उन्होंने सिखाया था कि धुआं उठता देख सावधान हो जाना चाहिए और गन की आवाज पर ध्यान लगाना चाहिए। इस सिगनल को देखकर कि वे सहृदयता से मेरी ओर बढ़ रहे थे और फिर मेरे नजदीक मेरी सहायता के मकसद से आ पहुंचे।

❑❑

अध्याय-3

मेरा अकेले छूट जाना

उन्होंने मुझसे पुर्तगाली, स्पेनिश और फ्रेंच में कुछ पूछना चाहा, लेकिन मैं उनकी कोई भी बात समझ नहीं पाया। आखिरकार बोर्ड पर मुझे एक स्कॉटिश नाविक ने बुलाया। मैंने उसकी बात का जवाब देते हुए उसे बताया कि मैं एक अंग्रेज हूं और सेले के हब्शियों की गुलामी से बचकर वहां से भाग निकला हूं। तब उन्होंने मुझे बेचारगी से देखा और मेरे पास पड़े सामान पर नजर डाली।

उस समय मैं इतना खुश हुआ कि उसका वर्णन नहीं कर सकता। मैं इस अनिश्चितता की स्थिति से खुद को उबरता हुआ महसूस कर रहा था। मैंने तुरंत उस जहाज के कप्तान से खुद को सुरक्षित अपने साथ लौटा कर ले चलने की गुहार लगाई और बदले में मैंने अपना सारा सामान उसे लेने के लिए कहा। उसने बड़ी सहृदयता के साथ मुझसे कहा कि तुम्हें कुछ भी देने की जरूरत नहीं है। तुम हमारे साथ चल सकते हो और जब तुम ब्राजील पहुंच जाओगे, तो सबकुछ अपने साथ रखना।

उसने अपनी उदारता दिखाते हुए अपने सहयोगियों को आदेश दिया कि कोई भी इनमें से किसी भी सामान को हाथ नहीं लगाएगा। इसके बाद उन्होंने मेरा सारा सामान सुरक्षित तौर पर अपनी निगरानी में रख लिया और मुझसे सही जगह पर वापस करने का वादा किया। मेरे पास उस समय तक तीनों कनस्तर भी मौजूद थे।

चूंकि मेरी नौका ठीक-ठाक स्थिति में थी, इसलिए उसने इसे मुझसे खरीदने का प्रस्ताव रखा। उसने कहा कि उसे इस जहाज पर रखने के लिए एक नौका की जरूरत है। उसने इस नौका की कीमत पूछी। मैंने

कहा कि आपने मेरे प्रति इतनी उदारता दिखाई है कि मैं आपसे इस नौका की कीमत नहीं ले सकता। यह सुनकर वह खुश होते हुए बोला कि 'मैं ब्राजील पहुंचने पर अस्सी डॉलर अदा करूंगा। वहां पहुंचकर यदि कोई इसका अधिक मूल्य लगाएगा तो मैं वह भी दूंगा।' साथ ही उसने मुझसे मेरे साथ के लड़के जूरी के बदले भी साठ डॉलर देने का प्रस्ताव रखा, लेकिन मैं नहीं चाहता था कि उसके साथ मैं किसी तरह का अन्याय करूं। मैं उसे एक आजाद जिंदगी देना चाहता था। पूरी यात्रा के दौरान उसने मेरे प्रति आस्था जताई थी तथा मेरा विश्वास जीत लिया था। लेकिन जब मैंने उसे इसका कारण बताया तो उसने कहा कि यदि वह ईसाई बन जाएगा तो अगले दस सालों में उसे मुक्ति मिल जाएगी। जूरी ने बताया कि उसकी इच्छा मेरे साथ रहने की है तो मैंने यह बात कप्तान को भी बता दी।

तकरीबन बाइस दिनों की समुद्री यात्रा के पश्चात हम ब्राजील की टोडोस लोस सेंटोस की खाड़ी या सेंट्स की खाड़ी पहुंच चुके थे। अब मैं यहां अपने जीवन में किसी भी तरह के हालात को झेलने के लिए तैयार था। मेरे साथ अब क्या होने वाला है, वह मुझे अब समझ में आ रहा था।

कप्तान ने मेरे साथ जितनी उदारता दिखाई, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसने मुझे सुरक्षित रूप से यहां तक पहुंचाने की एवज में कुछ भी नहीं लिया और जहाज पर मौजूद मेरा सारा सामान सही हालत में मुझे लौटा दिया। मैं उन्हें अपना कुछ सामान बेचना चाह रहा था, जिसमें कुछ बोतलें, मेरी दो गन और मोमबत्ती बनाने में उपयोगी वैक्स शामिल थे, दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो मुझे सभी सामान के बदले दो सौ अस्सी डॉलर प्राप्त हुए। इस रकम को लेकर मैं ब्राजील के तट पर उतर गया।

मैं यहां ज्यादा समय तक नहीं रहना चाहता था, लेकिन उसने मेरी मुलाकात पास ही में बने एक मकान में रहने वाले खुद की तरह के ही एक ईमानदार आदमी से कराई। उसका नाम इंजेनियो था, उसका एक

कप्तान ने मेरे साथ जितनी उदारता दिखाई, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

चीनी घर और नर्सरी का कारोबार था। मैं कुछ समय उसके साथ रहा और उसके पौधारोपण एवं चीनी बनाने के तरीकों से बेहद प्रभावित हुआ। मैंने देखा कि वह कैसे इस कारोबार से धनी हो गया है। मैंने सोचा कि मैं भी इस तरह से यहां एक धनी आदमी बन सकता हूं, लेकिन इसके लिए मुझे यहां रहने का लाइसेंस हासिल करना होगा। मैं उसकी तरह की एक नर्सरी चलाना चाहता था। मैंने लंदन में कमाए हुए अपने धन को हासिल करने का समाधान खोजना चाहा।

मैं अब सोच रहा था कि क्या मुझे यहां ठहर जाना चाहिए। मेरे पास रहने के लिए एक अच्छा घर था, जहां मेरे पिता मुझे एक खुशहाल जिंदगी देने का सपना देख रहे थे और रिटायर होने के बाद शांति से अपने दिन गुजारना चाहते थे।

चूंकि अब मैं अपने माता-पिता से काफी दूर आ गया था, इसलिए अब इन सब बातों का कोई मतलब नहीं रह गया था। मैं अब नर्सरी के कारोबार से बेशुमार दौलत कमाना चाह रहा था और ऐसी खुशहाल जिंदगी जीना चाह रहा था, ताकि अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए इस प्रकृति का पूरा आनंद ले सकूं।

ब्राजील में चार सालों के भीतर ही मैं वहां पूरी तरह से घुल-मिल गया। मेरा नर्सरी का कारोबार तरक्की करता रहा और इस दौरान मैंने न केवल वहां की भाषा सीख ली, बल्कि वहां के तमाम लोगों के बीच अपनी अच्छी-खासी जगह भी बना ली। फिर उनसे दोस्ती भी कर ली। इसमें उस बंदरगाह सेंट सल्वाडोर के कई व्यापारी भी थे। मैंने अपना अनुभव साझा करते हुए उन्हें बताया था कि मैं अपनी दो समुद्री यात्राओं के दौरान गिन्नियों के तट पर भी हो आया हूं। वहां खिलौने, चाकू, कैंची और कांच से बनी अनेक वस्तुओं समेत सोने के डस्ट, गिन्नियां, हाथी दांत आदि खरीदना भी सीखा है। वहां ब्राजील के लिए काम करने वाले नीग्रो भी बड़ी तादाद में हैं, जो खरीद-फरोख्त का धंधा करते हैं।

वे मेरी बातों को बड़े गौर से सुनते थे। खासकर नीग्रो खरीददारों से जुड़ी बातों में उनकी बहुत दिलचस्पी होती थी। उस समय यह व्यापार न

केवल बहुत दूर प्रतीत होता था, जो वहां के एसिएंटो द्वारा किया जाता था, बल्कि इसके लिए स्पेन और पुर्तगाल के राजा से भी इसकी अनुमति लेनी होती थी। इस तरह से कुछ नीग्रो वहां ले जाए गए थे, जो बहुत ही मिलनसार स्वभाव के थे।

मेरी बातों से कुछ नर्सरी कारोबारी बहुत प्रभावित हुए। अगली सुबह इनमें से तीन लोग मुझसे मिलने आए। उन्होंने मुझसे गोपनीय रखते हुए एक बात बताई कि उनके दिमाग में एक युक्ति आई है कि एक जहाज लेकर गिन्नी चला जाए। वे सभी मेरी ही तरह नर्सरी का कारोबार करते थे। वहां जाकर वे नौकरी करना चाहते थे, ताकि ज्यादा धन अर्जित किया जा सके। चूंकि यह एक तरह का ऐसा व्यापार था, जिसे ढोया नहीं जा सकता। वे सार्वजनिक तौर पर इन सामग्रियों को हब्शियों को नहीं बेच सकते थे, इसलिए हब्शियों को निजी तौर पर वे अपने साथ ले जाना चाहते थे और उन्हें उनके मालिकों में बांटना चाहते थे। वे एक बार समुद्री यात्रा पर जाना चाहते थे। गिन्नियों के तट की यात्रा की तैयारी के लिए मैंने जहाज में व्यापारिक सामग्रियों को रखने के लिए एक कार्गो बनाया। उन्होंने हब्शियों के साथ किए जाने वाले इस व्यापार में बिना किसी लागत के मुझे बराबर का साझीदार बनाने की पेशकश की।

यह एक अच्छा प्रस्ताव था, जिसे निश्चित रूप से स्वीकार किया जा सकता था। अब सवाल यह पैदा हुआ कि हम लोगों के यहां से जाने के बाद हमारी नर्सरियों की देखभाल कैसे होगी। चूंकि मैं इस नर्सरी के कारोबार का पुराना खिलाड़ी नहीं था, फिर भी पिछले तीन-चार सालों से तो मैं इसे चला ही रहा था, इस प्रकार कुछ ही सही, परंतु मेरे पास तीन से चार हजार पाउंड स्टर्लिंग जमा थे और उनमें धीरे-धीरे बढ़ोतरी भी हो रही थी।

मैंने उन लोगों से कहा कि मैं उनके साथ तभी चल सकता हूं, यदि मेरी अनुपस्थिति में मेरी नर्सरी की देखभाल करने का जिम्मा कोई उठाए। यदि मैं यहां वापस नहीं लौट सका तो वह बाद में मेरे दिशानिर्देशों के मुताबिक इसका संचालन कर सके। इसके लिए मैंने एक औपचारिक

वसीयत भी तैयार की। इसमें मेरी मृत्यु की दशा में चीजों को निपटाए जाने के बारे में लिखा गया था। मैंने उसमें लिखा कि मेरी मृत्यु के बाद पूर्व में एक बार मेरी जिंदगी बचाने वाले जहाज के कप्तान को यह नर्सरी दे दी जाए। मेरी संपत्ति का निस्तारण करते समय उसका आधा हिस्सा उन्हें दिया जाए और बाकी को इंगलैंड भेज दिया जाए।

इधर हमारा जहाज बनकर तैयार हो गया। इस पर इसके मालिक, उसके लड़के और मेरे अलावा अन्य चौदह लोग सवार हुए। साथ ही, छह बंदूकें भी उस पर रखी गईं। हमने हब्शियों के साथ व्यापार की जरूरी वस्तुएं–जैसे कांच के टुकड़े, विचित्र प्रकार की सस्ती चीजें, छोटे और दिखने में सुंदर शीशे, चाकू, कैंची आदि अपने साथ जहाज पर रखीं। हम लोग उसी दिन सागर की यात्रा पर निकल पड़े। हम अपने तट से उत्तर की ओर बढ़ चुके थे। उत्तरी अक्षांश के तकरीबन 10 या 12 डिग्री पर जब हम अफ्रीकी तट की ओर बढ़े, तब तक तो हम अपने तट से बहुत दूर निकल चुके थे। उन दिनों को याद करते हुए अब भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कुछ समय के बाद मौसम सुहावना हो गया था। हमारे तट की अपेक्षा यहां केवल गर्मी तपाने वाली थी। हम अब केप सेंट ऑगस्टीनो की ऊंचाई तक पहुंच चुके थे। हम समुद्र से इतनी दूर निकल गए थे कि अब दूर-दूर तक धरती नहीं दिखाई दे रही थी। अपना रास्ता नापते हुए हमारा जहाज फर्नांड डी नोरोन्हा द्वीप समूह के मार्ग से पूर्वोत्तर होते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।

इस दौरान हम लोगों ने बारह दिनों तक यात्रा जारी रखी। अंत में हमने पाया कि हम 7 डिग्री उत्तरी अक्षांश पर हैं। उस समय ऐसा भयानक तूफान टोरनेडो या हेरीकेन उठा, जो हमारी समझ से परे था। यह दक्षिण-पूर्व की ओर से उठा था और इतना भयानक था कि ऐसा लगा मानो अब कुछ नहीं बचने वाला है। अब हमें भाग्य ही बचा सकता था। तूफान के वेग को देखकर लोग भयभीत थे। पिछले इन बारह दिनों में कई बार छोटे-मोटे झटके आए, लेकिन यह तो अत्यंत विनाशकारी तूफान था।

इस हादसे में हम पूरी तरह से आंधी की चपेट में फंस चुके थे। इस दर्दनाक घटना में हमारा एक साथी मारा गया, जबकि एक आदमी और वह लड़का घायल हो गए। तकरीबन बारहवें दिन जाकर मौसम कुछ साफ हुआ और मालिक ने मौसम और हालात का जायजा लिया तो पता चला कि हम लोग 11 डिग्री उत्तरी अक्षांश पर हैं, लेकिन यह जगह केप सेंट ऑगस्टिनो से 22 डिग्री पश्चिम की दूरी पर स्थित है। उसे लगा कि वह गिन्नियों के तट की ओर या फिर ब्राजील के उत्तरी हिस्से की ओर पहुंच रहा है, जो कि अमेजन नदी के बाद का इलाका है! इधर एक और नदी ओरोनोकू भी थी, जिसे आमतौर पर ग्रेट रिवर के नाम से जाना जाता है। उन्होंने मुझसे सलाह लेते हुए पूछा कि अब हमें क्या करना चाहिए। जहाज में कई जगह छेद हो चुके थे और कुछ हद तक अब यह क्षतिग्रस्त होने की कगार पर पहुंच चुका था, इसलिए वे सीधे ब्राजील के तट की ओर वापस होना चाह रहे थे।

मैं उनके इस फैसले के बिलकुल खिलाफ था। उनके साथ अमेरिका के समुद्री तटों का चार्ट देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि कैरिबियाई द्वीप समूहों के घेरे में आबादी वाला कोई भी ऐसा इलाका नहीं है जहां हम ठहर सकें, इसलिए हमने बारबडोस में ही ठहरने का फैसला किया। तकरीबन 15 दिनों की लगातार समुद्री यात्रा के दौरान हम मेक्सिको की खाड़ी में भी नहीं रुके, जहां हम आसानी से जीवन यापन कर सकते थे। इधर दूसरी ओर के हालात कुछ इस तरह के थे कि हमारा जहाज तो क्षतिग्रस्त हो ही चुका था, हम भी भीतर से टूट चुके थे, इसलिए अफ्रीका के तट तक पहुंचना हमें मुमकिन नहीं लग रहा था।

तमाम परिस्थितियों को देखते हुए हमने अपना रास्ता बदला और अंग्रेज द्वीप समूह की ओर जाने के लिए पश्चिम से उत्तर-पश्चिम का रास्ता पकड़ा। मुझे उम्मीद थी कि वहां हमें कुछ राहत मिल सकती है। जब हम 12 डिग्री अक्षांश पर थे, तो उस समय एक दूसरा तूफान उठा, जो हमें पश्चिम की ओर तेजी से बहाए ले जा रहा था। सागर के थपेड़ों से दो-दो हाथ करते हुए किसी तरह हमारी जान तो बच गई, लेकिन

अब हमें यह डर सता रहा था कि यहां जंगली मानव हमें मार न डालें। अपने वतन लौट पाना हमें मुमकिन नहीं लग रहा था। हम निराशा के इस भंवरजाल में फंसे ही थे कि इतने में हवा का तेज झोंका आया और सुबह-सुबह हमारा एक आदमी चिल्लाया, "जमीन!" और हम लोग तेजी से केबिन से बाहर यह जानने के लिए दौड़ पड़े कि आखिरकार हम दुनिया के किस हिस्से में पहुंच चुके हैं। इतने में ही जहाज बालू के ढेर से टकराया और कुछ ही पल में वह वहीं रुक गया। हमें लगा कि समुद्र ने किसी-न-किसी बहाने हमें खत्म करने की ठान ही ली है। हम तेजी से किसी सुरक्षित ठिकाने की खोज में थे।

किसी ऐसे आदमी को इस विषम परिस्थिति के बारे में बताना थोड़ा मुश्किल है, जो इस तरह के हालातों से कभी दो-चार नहीं हुआ हो। हमें कुछ नहीं पता था कि हम कहां आ गए हैं या फिर हम किस धरती पर पहुंचे हैं? क्या यह कोई द्वीप समूह है या फिर मुख्यभूमि? यहां लोग रहते भी हैं या यह जगह निर्जन है? हवा के तेज झोकों को देखकर एकबारगी यह उम्मीद खत्म हो गई कि अब हम बच भी पाएंगे या नहीं, लेकिन एकाएक एक प्रकार का चमत्कार ही हुआ जो तेज हवा शांत हो गई।

जब हवा कुछ शांत हुई तो जहाज बालू से टकराकर गिरने लगा था। हम इस खतरनाक हालात में पहुंच गए थे कि अब भी कुछ कर पाने में सक्षम नहीं हो रहे थे। अब हमारे लिए अपनी जान तक बचाना मुश्किल हो रहा था, लेकिन हमने हार नहीं मानी और जिंदगी की लड़ाई लड़ते रहे। यात्रा प्रारंभ करते समय हमने ऐसी परिस्थितियों से मुकाबला करने के लिए एक छोटी-सी नौका रखी थी, किंतु तूफान ने ऐसी तबाही मचाई कि सबकुछ क्षतिग्रस्त कर दिया और बचाव का वह माध्यम भी हमसे छीन लिया। हम स्वयं को बेहद असहाय-सा महसूस कर रहे थे। अब हमारी उम्मीदें खत्म होने लगी थीं। किसी भी क्षण हम पानी में डूब सकते थे। हमारे पास बोर्ड पर एक और नौका थी, लेकिन उसे सागर की लहरों पर कैसे उतारा जाए, यह समझ में नहीं आ रहा था। हालांकि अब इन सब बातों पर बहस करने का समय नहीं बचा था और हरेक मिनट

हमारे लिए आफत के तौर पर बीत रहा था। किसी ने हमें बताया कि वह नौका भी उस तूफान में टूट चुकी थी।

इस निराशाजनक स्थिति में जहाज के मेट ने वहां मौजूद सभी लोगों की सहायता से नौका उतारी और सारे लोग उसमें सवार हो गए। हम ग्यारह लोगों ने इसे ईश्वर की नियति मानकर इस भयंकर सागर से बाहर निकलने में एक-दूसरे की मदद का वादा किया। हमें उम्मीद थी कि हम इस भयानक हालात से जल्द ही उभरकर किसी तट के पास अवश्यमेव पहुंच पाएंगे।

इतने में हमने स्पष्ट तौर पर देखा कि समुद्र की लहरें इतनी ऊंची हो गई हैं कि नौका को बचाना मुश्किल है और अब हमें डूबने से कोई नहीं बचा पाएगा। नाव को खेने के अलावा हम कुछ भी नहीं कर सकते थे। जैसे कोई आदमी अपनी मुक्ति के लिए पूरी ताकत लगाता है, उसी तरह से हम पतवार को तेजी से चलाते जा रहे थे, ताकि जल्द ही इस भयानक दौर से बाहर निकल सकें और किसी किनारे पर पहुंचने में कामयाबी हासिल हो, अन्यथा समुद्र हमारे टुकड़े-टुकड़े कर सकता है। हालांकि हमने पूरी तल्लीनता से खुद को ईश्वर के भरोसे छोड़ दिया था और तेज हवा हमें किनारे की ओर बहाए ले जा रही थी, लेकिन जैसे-जैसे हम तट की ओर बढ़ रहे थे, वैसे-वैसे अपने हाथों से अपने विनाश की इबारत गढ़ रहे थे। लेकिन इसके अलावा हमारे पास दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं था।

हमें नहीं मालूम कि जहां समुद्र तट मिलेगा वह कैसा होगा। चट्टान होगी या बालू, जमीन ढाल होगी या साफ होगी, इस बारे में हमें कुछ नहीं पता, बस इतनी उम्मीद थी कि कैसी भी हो, इस भयंकर समुद्र से बेहतर ही होगी। हमने सोचा कि यदि हम किसी खाड़ी या नदी के मुहाने पर पहुंचने में कामयाब हुए तो अपनी नाव छोड़कर ताजे पानी की तलाश में निकल पाएंगे। लेकिन वहां ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं दिया था। हमारी आशाएं उस समय धूमिल हो गईं, जब हमें नजदीक आने पर जमीन का किनारा तो दिखाई दिया, लेकिन वह इस समुद्र से भी भयानक था।

अब हम समुद्री किनारे से तकरीबन साढ़े तीन मील की दूरी पर थे। हम यह देखकर भयभीत हो गए कि पर्वत की ऊंचाई के समान गर्जना करती हुई एक लहर हमारी ओर आ रही है। एक शब्द में कहा जाए तो यह इतनी डरावनी थी कि इसने पूरी नौका को अपने थपेड़े में लेते हुए सबकुछ अस्त-व्यस्त कर दिया। न केवल नौका ने हमारा साथ छोड़ दिया, बल्कि हम एक-दूसरे से भी बिछड़ गए। उस आपदा ने हमें इतनी तेजी से अपने चपेट में लिया कि हमारे पास ईश्वर का ध्यान करने का समय भी नहीं मिला।

जब मैं पानी में पूरी तरह डूब गया था, उस समय मैंने कैसा महसूस किया, इसे मैं बता नहीं सकता, लेकिन चूंकि मुझे तैरना अच्छी तरह से आता था, इसलिए मैं लहरों से तब तक टकराता रहा, जब तक मैं समुद्र के किनारे तक नहीं पहुंच गया। हालांकि समुद्र का यह तट खतरनाक था। इसके किनारे पर कीचड़ वाली मिट्टी थी और यहां की बंजर धरती थी। यहां मुख्य भूमि में दूर-दूर तक ताजे पानी की संभावना कम ही दिखाई दे रही थी। इन सारी बातों को सोचते हुए मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ और दूसरी लहर के आने से पहले मैं वहां से आगे बढ़ जाना चाहता था। सागर में लहरों से दो-दो हाथ करते समय मैंने वहां अपनी सांस और तैरने की क्रिया पर काबू रखा, ताकि मैं किसी तरह सुरक्षित रूप से किनारे तक पहुंच सकूं। मुझे इस बात का यकीन था कि एक बार तट तक पहुंचने पर वहां से लहरें मुझे लौटा नहीं पाएंगी।

दोबारा जब लहर आई तो उसने मुझे अपने आगोश में लेते हुए बीस से तीस फीट की गहराई में धकेल दिया। मैंने महसूस किया कि किसी ईश्वरीय शक्ति ने मुझे इस गहराई से उबारते हुए चंद सेकंड के बाद पानी की सतह के ऊपर फेंक दिया। इससे मुझे सांस लेने में सहायता मिली और कुछ हद तक मैंने राहत महसूस की। अपने दोनों हाथ पानी से बाहर निकालते हुए मैंने तैरने का प्रयास किया, जिसमें मुझे कामयाबी मिली। जब मैंने दोबारा सांस ली, तब मेरी हिम्मत लौटी। कुछ ही प्रयास के बाद मैंने अपने पैरों को जमीन पर टिका पाया और कुछ देर रुककर

आराम किया। अब चूंकि पानी मेरे से दूर जा चुका था, इसलिए मैं पूरी ताकत लगाते हुए वहां से जमीन की ओर भागा। लेकिन मुझे इस बार भी कामयाबी नहीं मिली, क्योंकि वहां का समुद्री तट बहुत ही उथला था और एक बार फिर लहरों ने मुझे उसी तरह से आगोश में लेते हुए पानी में डुबो दिया।

हालांकि इस बार लहर की ऊंचाई पहले की तरह नहीं थी, इसलिए मैं खुद को बचाने में आसानी से कामयाब रहा। इसके बाद भी कुछ लहरें आईं, लेकिन मेरा शरीर उनमें डूबने से बचा रहा। इस प्रकार मैं लहरों से दो-दो हाथ करते हुए मुख्यभूमि के करीब पहुंच गया। यहां लहरों की पहुंच से दूर, खतरों से बाहर निकलते हुए घास पर बैठकर मैंने बहुत राहत महसूस की।

जब मैंने दूर से नौका की ओर देखा तो लहरों के नजारों से मैं सहम गया और सोचने लगा, 'हे ईश्वर, यह कैसे संभव हो पाया कि मैं किनारे तक पहुंच सका?'

खुद को यह सांत्वना देने के बाद कि चलो किसी तरह बच तो गए–जान बची तो लाखों पाए, मैंने अपने आसपास की चीजों को देखा। हालांकि उस समय मेरे सारे कपड़े भीग चुके थे और उन्हें निकालकर दूसरा पहनने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं था। न तो मेरे पास कोई खाने की वस्तु थी और न ही पीने के लिए पानी। मुझे जोरों की भूख लगी थी।

आसपास के जंगलों में रहने वाले भयानक जानवरों का डर भी सता रहा था कि कहीं वे मुझे मार न डालें। मेरे पास उनसे लड़ने का कोई हथियार नहीं था और न ही छोटे जीवों को मारकर खाने के लिए ही कुछ साधन था। एकाएक मुझे खयाल आया कि मेरे पास एक छोटी डिब्बी होनी चाहिए जिसमें एक चाकू, एक तंबाकू पाइप और कुछ तंबाकू आदि होने चाहिए।

हालात पर गौर करने के बाद मैंने एक मोटे से पेड़ पर आश्रय लेने का मन बनाया। मैं उस पर रातभर बैठा रहा और सोचता रहा कि क्या
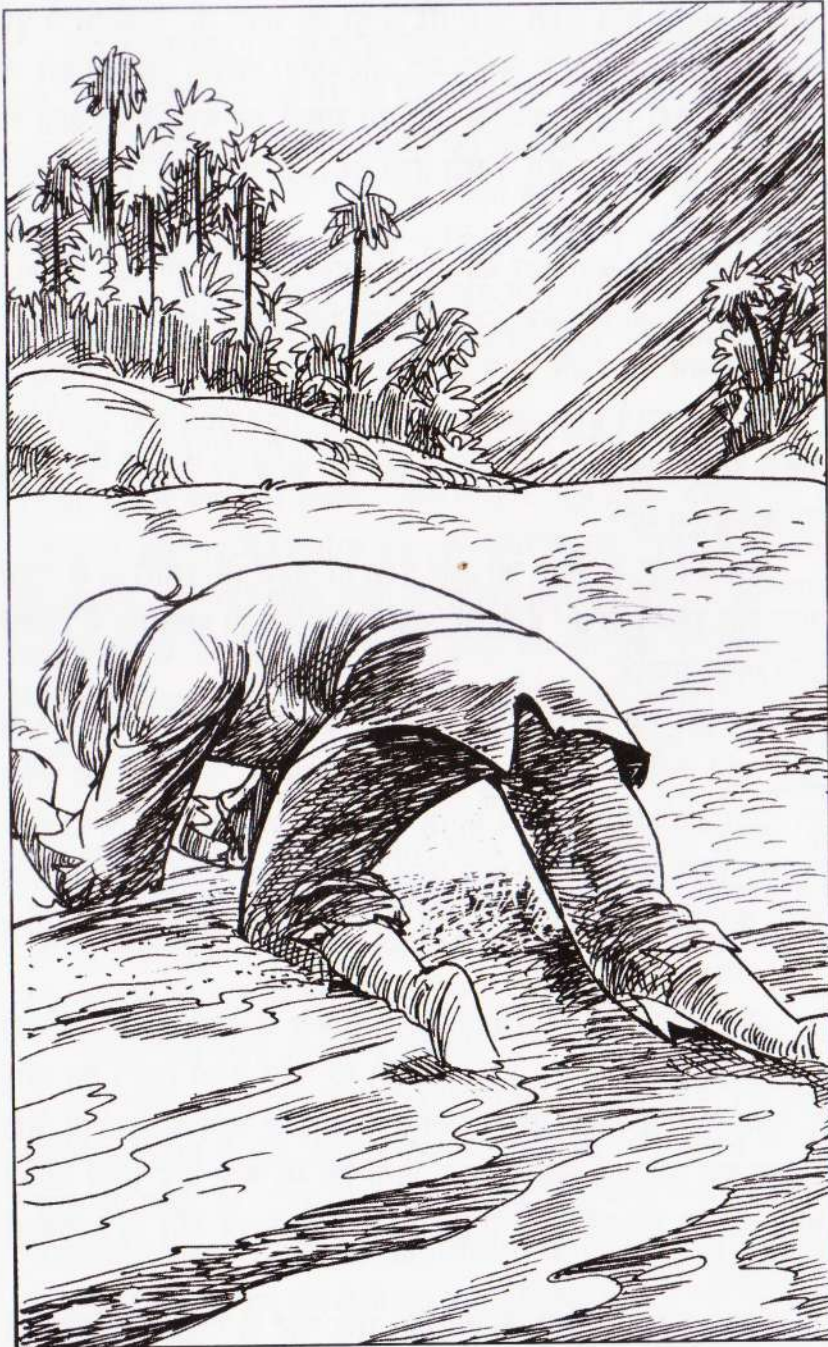
मैं पूरी ताकत लगाते हुए वहां से जमीन की ओर भागा।

इसी तरह से मेरी मौत होनी चाहिए। मेरे जीने की संभावनाएं कम होती जा रही थीं। रातभर आराम करने के बाद मैं कुछ फर्लांग की दूरी तक पीने के लिए ताजे पानी की तलाश में गया। मेरी तलाश पूरी हुई और मैंने वहां पेट भर पानी पीया और तंबाकू को मुंह में भरकर भूख मिटाने की कोशिश की। दोबारा पेड़ के पास आकर अपने पास सुरक्षा के लिए एक डंडा लेकर मैं वहां सो गया। मैं काफी थका हुआ था, यह सोच रहा था कि मेरे साथ अब कुछ भी बीत सकता है। इतने में, न जाने कब, मुझे नींद ने अपनी आगोश में ले लिया।

❑❑

अध्याय-4

उपयोगी चीजों को एकत्रित करना

अगले दिन जब मैं सोकर उठा तो मौसम साफ था और तूफान थम चुका था। इसलिए समुद्र पहले की तरह अब खतरनाक तथा भयावह नहीं लग रहा था। लेकिन एक चीज देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि रात में समुद्र में आए ज्वार की वजह से जहाज एक चट्टान से टकराकर ठहरा हुआ था। मैं जहां था वहां के निकटतम समुद्री तट से तकरीबन एक मील की दूरी पर वह अटका पड़ा था। मेरे दिमाग में एकदम से यह बात कौंधी कि उस पर मेरी बहुत सी जरूरी वस्तुएं नुकसान होने से शायद बच गई होंगी।

जब मैं पेड़ पर आराम करने वाली जगह से नीचे आया तो सबसे पहले मुझे उस जहाज तक पहुंचने के लिए एक नौका की जरूरत महसूस हुई। एक नौका मुझे दिखाई दे रही थी, लेकिन वह मुझसे आधा मील दूर पानी में थी। मैं बिना किसी देरी के जहाज तक पहुंचना चाह रहा था, ताकि अपनी वर्तमान जरूरतों के लिए वहां से कुछ सामान अपने साथ ला सकूं।

दोपहर के बाद समुद्र काफी शांत हो गया, ज्वार थम चुका था। अब मैं जहाज तक जाने में सक्षम हो सकता था। हालांकि उस तक पहुंचने का कोई भी साधन मुझे समझ नहीं आ रहा था। मुझे मालूम था कि सागर किनारे पर सुरक्षित रूप से रहने के लिए मुझे जिन चीजों की जरूरत है, वे सब उसमें हैं—इसलिए मैं उन चीजों को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाह रहा था। मेरे सभी साथी मुझसे बिछड़ गए थे। वे कहां और किस हाल में होंगे, यह मैं बिलकुल भी नहीं जानता था। यह सोचकर

मैं रो पड़ा, लेकिन मुझे यह जानकर थोड़ी राहत महसूस हुई कि एक बार जहाज तक पहुंचने में कामयाबी मिलने से काफी कुछ हासिल किया जा सकता है। बिछड़े साथियों के बारे में भी कोई सुराग हासिल हो सकता है। मौसम गर्म था, इधर मैंने अपने कपड़े निकाले और पानी में घुस गया।

लेकिन जब मैं जहाज के पास पहुंचा तो यह जानकर मेरी दिक्कतें और बढ़ गईं कि पानी के तल से ज्यादा ऊपर होने की वजह से मैं जहाज के ऊपर कैसे चढ़ पाऊंगा। वहां तक पहुंचने का कोई भी साधन वहां मुझे नजर नहीं आ रहा था। मैं तैरते हुए दो बार पूरे जहाज का चक्कर लगा चुका था। फिर मेरे मन में एक विचार आया कि एक रस्सी को बांधकर मैं ऊपर चढ़ सकता हूं, परंतु इस काम को भी अकेले ही कर पाना मुमकिन नहीं लग रहा था। उसकी बगल में एक चेन लटक रही थी, किंतु वहां तक भी चढ़ पाना मुश्किल था। मैंने कोशिश की और आखिरकार रस्सी के सहारे मुझे जहाज पर चढ़ने में कामयाबी मिल गई। मुझमें उम्मीद जागी।

वहां मैं स्पष्ट रूप से देख पा रहा था कि जहाज में कई जगह पानी भर चुका था, लेकिन शायद यह कहीं किनारे पर बालू में धंस गया था या जमीन में गड़ गया था। इसलिए काफी सारी गाद भी इसमें भरी हुई थी। खैर, इसमें जरूरी सामान रखे जाने वाले हिस्से बचे हुए थे और मैं वहां तक पहुंच चुका था। मैंने सबसे पहले कुछ खाने का सामान खोजा। काफी सारी खाने की सामग्री मेरे हाथ लगी। मैंने भरपेट ब्रेड खाए और पानी पीया। रूम में जाकर वहां मैंने बिस्कुट समेत तमाम चीजों को एकत्रित किया और बिना समय गंवाए केबिन में जा पहुंचा। यहां एक बड़े पीपे में काफी सारी रम रखी हुई थी, जो उस समय बेहद जरूरी चीज थी। अब मुझे ज्यादा चीजों की जरूरत भी नहीं थी, लेकिन इस सबको यहां से ले जाने के लिए एक नाव की आवश्यकता थी।

यहां एक जगह बैठकर मैंने सोचा और आगे की रणनीति पर गौर किया। वहां पास में दो-तीन लकड़ी के बड़े टुकड़े रखे हुए थे। जहाज

ब्रेड रूम में जाकर वहां मैंने बिस्कुट समेत तमाम चीजों को एकत्रित किया।

में मुझे कुछ और के भी मिलने की उम्मीद थी। इन सबको आपस में जोड़ते हुए उन्हें कसकर रस्सी से मैंने बांध दिया और उसके सहारे बाहर निकल आया। इन सबको जोड़कर मैंने उसे एक राफ्ट का रूप तो दे दिया, लेकिन उससे ज्यादा वजन वाले सामान को ले जाना संभव नहीं था, इसलिए अब मैं बढ़ई के रखे औजारों और सामानों वाले कमरे में गया। मैंने वहां से जरूरी औजार लाकर उस राफ्ट को ज्यादा उन्नत व भारवाहक बनाने के लिए काफी लकड़ियों को उसमें जोड़ा। इतनी मेहनत के बाद मैं बुरी तरह से थक गया था। लेकिन कामयाबी मिलने से मैं प्रोत्साहित भी था। मैं इन परिस्थितियों से उबरने के अपने प्रयास में पूरी तरह से सफल हो रहा था।

अब मेरा यह राफ्ट पहले से ज्यादा मजबूत और ज्यादा भार ढोने वाला बन चुका था। अब मेरा अगला कदम तमाम जरूरी चीजों को उस पर रखते हुए समुद्री लहरों से सुरक्षित बचकर निकलना था, परंतु मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था। मैंने तैरने वाली चीजों को बाहर निकाला और उस पर सबसे जरूरी चीजों को रखता गया। सबसे पहले मैंने राफ्ट पर ब्रेड, चावल, तीन डच चीज, कुछ सूखे मांस के टुकड़े और कुछ तादाद में यूरोपियन कॉर्न साथ में रखे, जो समुद्री यात्रा के प्रारंभ में हमने अपने साथ लाई मुर्गियों को खाने के लिए रखे थे, किंतु सारी मुर्गियां मर चुकी थीं। कुछ जौ और गेहूं भी रखे गए थे। मुझे यह देखकर बहुत निराशा हुई कि चूहों ने उसे खा लिया था या फिर उन्हें बर्बाद कर दिया था। कुछ बोतलों और कनस्तरों में पीने वाला पानी रखा हुआ था। वैसे इन सबको साथ लेकर जाने की जरूरत नहीं थी, इसलिए उन्हें मैंने वहीं छोड़ दिया।

जब मैं यह काम कर रहा था तो मुझे लगा कि एक बार फिर से ज्वार उठने लगा है। मैं अपने कपड़े किनारे पर बालू में ही छोड़ आया था, इसलिए मुझे अब उनकी चिंता भी सताने लगी थी। वर्तमान में इस्तेमाल में आने वाली सभी जरूरी चीजों को पर्याप्त मात्रा में समेटने के बाद मैं बढ़ई के कक्ष से भी सभी उपयोगी चीजों को अपने साथ ले जाना चाहता

था, क्योंकि भविष्य में कभी भी उनकी जरूरत पड़ सकती थी। इसके अलावा वहां कई संदूक भी थे, जिनमें पर्याप्त रूप से आपातकालीन स्थितियों में इस्तेमाल में लाए जाने के लिए अनेक प्रकार के सामान एवं औजार आदि भरे हुए थ। ये सामान उस समय मेरे लिए सोने से लदे हुए जहाज से ज्यादा मूल्यवान लग रहे थे। मैंने इन सबको राफ्ट पर रखा और बिना समय गंवाते हुए वहां से निकल जाना चाहा।

एकाएक मुझे कुछ हथियारों के रखे होने का खयाल आया। बड़े केबिन में मुर्गियों को मारने वाले दो धारदार हथियार तथा दो पिस्टल्स को मैंने सुरक्षित रखा। एक बैग में कुछ कारतूस और बारूद तथा दो पुरानी तलवार भी मिलीं। मुझे मालूम था कि जहाज में तकरीबन तीन बंदूकें भी रखी थीं। लेकिन यह नहीं पता था कि गनर उन्हें कहां रखता था। परंतु खोजने पर वे भी मुझे मिल गईं। इनमें से दो सही थीं और तीसरी में पानी घुस चुका था। मैंने सभी हथियारों के साथ इन दोनों को भी राफ्ट पर रख दिया। अब मैं हवा की दिशा का अनुमान लगाते हुए यह जानने का प्रयास कर रहा था कि किस प्रकार इन सबको लेकर सुरक्षित किनारे तक पहुंचा जाए।

फिलहाल, तीन चीजें मेरे अनुकूल थीं–पहला शांत समुद्र, दूसरा उठ रहा ज्वार, जो किनारे तक पहुंच रहा था तथा तीसरा हवा का हल्का झोंका भी उसी ओर बह रहा था। इस प्रकार दो या तीन पतवार ज्यादा सामानों के बोझ से टूटने लगे थे तो मैंने उसका भार कम करने के लिए एक भारी हथौड़ा, एक कुल्हाड़ी समेत कुछ सामान समुद्र में फेंक दिया। इस राफ्ट से मैं अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते हुए तकरीबन एक मील की दूरी तय कर चुका था और धरती के करीब पहुंचने लगा था। तभी मैंने देखा कि मैं एक नदी के मुहाने की तरफ बढ़ रहा हूं, जहां कि नदी के होने की उम्मीद लग रही थी। किसी खाड़ी या नदी के मिलने से मेरी उम्मीदें बढ़ीं कि वहां मैं ठीक तरीके से सभी सामान को उतार पाने में सक्षम हो सकूंगा।

मैंने जैसी कल्पना की थी, वैसा ही हो रहा था। जमीन का एक छोटा

टुकड़ा दिखाई दिया और मैं ज्वार के एक तेज बहाव के सहारे उधर की ओर जा रहा था। अपने राफ्ट को मैं धारा के मध्य में रखते हुए निर्देशित कर रहा था। लेकिन इतने में वहां एक क्षतिग्रस्त जहाज के टुकड़े ने मेरी धड़कनें बढ़ा दीं, जब मेरी राफ्ट उससे टकराई और मेरा सारा सामान गिरने लगा। मैंने सभी जरूरी चीजों को कसकर थाम लिया और मुश्किल से किसी तरह उन सबको गिरने से बचाया। पूरी ताकत लगाते हुए मैंने उन्हें थाम लिया। तकरीबन आधे घंटे तक इस तरह से जूझने के बाद पानी के उठने से मेरी राफ्ट फिर से तैरने लगी और पतवारों के सहारे मैं चैनल की ओर ऊपर उठ रहा था। कुछ ही देर बाद तेज धारा या ज्वार में बहते हुए मैंने खुद को एक छोटी नदी के मुहाने के समीप पाया। यहां दोनों ओर धरती थी। मैं दोनों ओर मुआयना कर रहा था कि सारा सामान लेकर कहां उतरने में सुविधा होगी। मैंने इस उम्मीद से कि शायद समुद्र में जाने वाला कोई जहाज भी दिखाई देना चाहिए, किनारे से ज्यादा दूर जाना मुनासिब नहीं समझा।

कुछ ही दूर इस छोटी खाड़ी के दाईं ओर मैंने एक छायादार दर्रा देखा, जहां अपनी राफ्ट को बड़ी मुश्किल से लेकर मैं आगे बढ़ा और पतवारों के सहारे 'अंत में' उसके नजदीक पहुंचने में कामयाब भी हो गया। लेकिन वहां पहुंचकर भी मेरी परेशानी अभी खत्म नहीं हुई थी। वहां नदी का तल इतना उथला था कि किसी भी सामान को सुरक्षित उतार पाना आसान नहीं था। दूसरे किनारे पर जाने में भी इस बात का खतरा था कि कहीं फिर से राफ्ट समुद्र की ओर न बह जाए। इन हालातों को देखते हुए, मुझे सारा सामान फिर से डूब जाने का भय सता रहा था। अब मेरे पास यही उपाय बचा था कि मैं दोबारा से ज्वार के आने का इंतजार करूं। मैं राफ्ट की पतवार को जोर से थामे हुए किनारे की उस जमीन के टुकड़े पर तेजी से पहुंच जाना चाहता था। मुझे उम्मीद थी कि पानी का बहाव तेज होने पर ऐसा होना मुमकिन हो पाएगा। जैसे ही वहां पर्याप्त मात्रा में पानी का झोंका आया तो मैंने देखा कि तकरीबन एक फुट पानी वहां बढ़ गया है। तब मैंने एक लकड़ी के सहारे उसे धक्का

दिया, जिससे राफ्ट वहां से आगे बढ़ा। और इस प्रकार मैं एक किनारे पर सुरक्षित पहुंच गया, जहां सभी सामान को किनारे पर मैंने ठीक से रखा।

अब मेरा अगला कदम उस देश में यह तलाशना था कि क्या वहां मेरे लिए कोई आवास का समुचित इंतजाम हो सकता है? मैं वहां सुरक्षित ठहर सकता हूं? और मेरा सामान सुरक्षित रह पाएगा? मैं नहीं जानता था कि वह कोई महादेश था या द्वीप समूह? वहां लोग थे भी या फिर वह निर्जन था? वहां खतरनाक जंगली जानवर थे या नहीं? तकरीबन एक मील की दूरी पर उत्तर दिशा में मुझे एक ऊंची पहाड़ी दिखाई दे रही थी। उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि वहां कुछ और पहाड़ियां हो सकती हैं। मैंने अपने हाथ में एक पिस्तौल थाम ली तथा कुछ बारूद साथ लेकर, पूरी तरह से हथियारों से लैस होकर, पहाड़ी पर अपने खोजी अभियान के लिए निकल पड़ा। इस दौरान मुझे काफी श्रम और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मैं इस बात से खुश था कि भाग्य ने अब तक मेरा साथ नहीं छोड़ा था। वह हर कदम पर मेरा साथ दे रहा था। मैं एक ऐसे टापू पर लाकर छोड़ दिया गया था—जहां दूर-दूर तक जीवों के अस्तित्व का पता नहीं चल रहा था। हालांकि कुछ बड़ी चट्टानें वहां जरूर थीं। तकरीबन नौ मील पश्चिम दिशा की ओर दो छोटे टापू और भी दिखाई दे रहे थे।

वह टापू उजाड़ ही होगा, ऐसा मानने का मेरे पास कारण भी था। वहां दूर-दूर तक जंगली जानवरों को छोड़कर और किसी भी जीव के होने का आभास नहीं हो रहा था। वहां मैंने कुछ अलग किस्म की मुर्गियां भी देखीं, लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि वे आदमी के खाने योग्य हैं या नहीं। वापस लौटते समय मैंने एक विशाल पक्षी को देखा, जो एक पेड़ की बहुत बड़ी टहनी पर बैठा हुआ था। मेरा मानना है कि धरती की रचना के बाद से शायद पहली बार वहां मेरी पिस्तौल चली होगी, जब मैंने उस पक्षी को निशाना बनाते हुए गोली चलाई थी। जैसे ही मैंने गोली चलाई, वहां उन पक्षियों में अजीब-सी हलचल मची और

उनमें से कई मुर्गियां इधर-उधर भागने लगीं। मैं उनमें से किसी भी प्रकार के पक्षी को समझ पाने में असमर्थ था। वैसे मैंने जिस पक्षी का शिकार किया था, वह एक प्रकार का बाज था, जिसका मांस मेरे लिए किसी काम का नहीं था।

इस खोजी अभियान के बाद मैं पुनः अपने राफ्ट पर वापस आ गया और अपने सारे सामान को किनारे की ओर सुरक्षित ले जाने की जुगत में लग गया। मैं नहीं जानता था कि आज की रात मैं कहां सोऊंगा और मेरे साथ क्या होने वाला है, इसलिए मैं कुछ ज्यादा भयभीत था। यह सोचकर भी मुझे डर लग रहा था कि कहीं रात में जंगली जानवर मुझे अपना शिकार न बना लें। फिर मैंने अपने भीतर साहस पैदा किया कि मुझे इन सब जीवों से डरने की कोई जरूरत नहीं है, जो होगा देखा जाएगा।

हालांकि मैंने अपने साथ लाए सभी संदूकों और बोर्ड से एक प्रकार का सुरक्षित घेरा बना दिया था ताकि कोई भी उसके अंदर घुस न पाए। रात में सोने के लिए उसी के भीतर एक प्रकार की झोपड़ी भी बना ली थी। वैसे खाने की मुझे कोई चिंता नहीं थी। अब मेरे पास खाने का काफी सामान पड़ा था और आसपास कुछ मुर्गियां भी थीं, जिन्हें मारकर मैं अपना काम बखूबी चला सकता था।

अब मैं यह सोच रहा था कि यदि जहाज पर बची हुई जरूरत की कुछ और चीजों को मैं वहां से निकाल लूं, खासकर मस्तूल और जहाज के संचालन से जुड़ी जरूरी चीजों को तो वे भविष्य में अगली समुद्री यात्रा की तैयारी में मेरे काम आ पाएंगी। यह भी संभव है कि अगले तूफान में वह जहाज पूरी तरह से क्षतिग्रस्त जाए, इसलिए उसके नुकसान होने से पहले ही मुझे वहां से सभी जरूरी चीजों को निकालना था। तब मैंने अपने मन से यह सवाल किया कि मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे राफ्ट से वापस जाना चाहिए? लेकिन वह अब काम के लायक रह नहीं गया था। इसलिए मैंने ज्वार कम होने पर वहां जाने का निर्णय लिया और मैंने ऐसा ही किया भी।

वहां जाने के लिए मैंने दूसरा राफ्ट तैयार किया और पहली बार के अनुभव से मैंने इसे ज्यादा मजबूत बनाया था, ताकि इस पर उपयोग में लाए जाने वाले ज्यादा-से-ज्यादा भारी वजन का सामान ढोया जा सके। सबसे पहले मैं बढ़ई के केबिन में घुसा, जहां दो-तीन बैग में कील और इसी तरह की नुकीली चीजें, एक बड़ा-सा स्क्रू जैक, दरवाजों की तरह इस्तेमाल में लाए जाने वाले एक दर्जन बोर्ड और इन सबसे भी ज्यादा उपयोगी एक सान चढ़ाने वाला पत्थर रखा हुआ था। मैंने इन सबको सुरक्षित तौर पर साथ में रखा। कुछ खाने-पीने के सामानों के अलावा एक बड़े बैग में गोली, शीट लेड का एक बड़ा रोल भी साथ में ले लिया। अंतिम सामग्री इतनी भारी थी कि मैं उसे लेकर जहाज के किनारे तक पहुंच नहीं पा रहा था।

इन सब चीजों के अलावा, मैंने वहां पड़े सभी लोगों के कपड़े समेत बेडिंग और इस तरह की तमाम अन्य चीजों को भी रख लिया था। इन सारी वस्तुओं को मैंने अपने दूसरे राफ्ट पर रखा और उन्हें लेकर सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ चला।

❑❑

अध्याय-5

समुचित छांव की खोज में

उस धरती पर से थोड़ी देर के लिए निकलने के बाद से मैं इस बात को लेकर आशंकित था कि वहां तक किनारे की ओर से कोई जीव गया होगा या नहीं। लेकिन जब मैं वहां वापस पहुंचा तो मुझे इस प्रकार कुछ भी महसूस नहीं हुआ। ऐसा लग नहीं रहा था कि यहां कोई आया भी था, केवल मुझे वहां एक जंगली बिल्ली की तरह दिखने वाला एक जानवर दिखाई दिया, जो मेरे आते ही वहां से उठकर कुछ दूर तो भागा। फिर रुककर मेरी ओर ढीठ की तरह देखने लगा। मैंने उसे अपनी पिस्तौल दिखाई तो उस पर उसका कोई असर नहीं हुआ। शायद उसे पता ही नहीं होगा कि यह क्या चीज हो सकती है। मैं उसे खाने को कुछ बिस्कुट देना चाह रहा था, लेकिन चूंकि मेरे खुद के पास वह कम मात्रा में थे—इसलिए मैं चाहकर भी उसे दे न सका। हालांकि मैंने उसे जब कुछ बिस्कुट खाने को दिए तो वह उस तक लपका और थोड़ा सूंघने के बाद उसने उन्हें खाया भी। फिर उसने खुशी से कुछ और पाने की चाहत में मेरी ओर देखा। लेकिन मैं उसे ज्यादा देने में असमर्थ था। वह वहां से चला गया।

इधर मैं अपने साथ जो दूसरा कार्गो लेकर आ चुका था, उसके सामान को सलीके से रखने की तैयारी करने लगा, ताकि उसमें रखी सामग्री को सुरक्षित तौर पर रखा जा सके। उसमें कई सामान के पैकेट बहुत भारी थे, जिनमें टेंट बनाने वाले भी कुछ सामान थे। उन सबको मैं उतार लेना चाहता था, ताकि एक अच्छा टेंट बना सकूं। इसके लिए मैंने कुछ खंभे भी तैयार कर लिए थे। मुझे मालूम था कि बहुत सारा सामान

बारिश या धूप में खराब हो सकता है, इसलिए मैं जल्द-से-जल्द खाली संदूकों का घेरा बनाते हुए टेंट खड़ा कर लेना चाहता था, ताकि खुद को आदमी या जानवर के अचानक हमले से बचा सकूं।

जब मैंने इसे बना लिया तो अपने साथ लाए खाली संदूकों और कुछ बोर्ड को आपस में जोड़ दिया। सोने के लिए एक सुरक्षित स्थान तैयार कर लिया। कुछ बोर्ड को मैंने बिस्तर की तरह सोने के लिए जमीन पर बिछा दिया और अपने सिरहाने पिस्तौल रखकर सो गया। चूंकि मैं इस तरह के बिस्तर पर पहले कभी नहीं सोया था, दूसरे मेरे शरीर में काफी चीजें बंधी हुई थीं, इसलिए मुझे सोते समय बहुत भारीपन महसूस हो रहा था। मैंने उस दिन बहुत काम किया था। मेरा पूरा शरीर टूट चुका था। मैं थककर चूर हो गया था। मुझे नींद आ गई और मैं सो गया।

मेरे पास उस समय काफी सारा सामान एकत्रित हो चुका था, जो किसी एक आदमी के लिए समुचित कहा जा सकता था। लेकिन अभी भी मैं पूरी तरह संतुष्ट नहीं था, क्योंकि मुझे पता था कि जहाज में अभी और भी बहुत-सी चीजें रखी हुई हैं। वैसे उनमें से कुछ तो खराब हो चुकी होंगी, परंतु बहुत-सी अभी भी सही-सलामत होंगी, यह पूरी उम्मीद थी। जहाज के नष्ट होने या उसे वहां से बह जाने से पहले ही मैं उन सभी वस्तुओं को उसमें से निकाल लेना चाहता था। इसलिए मैं तीसरी बार उस जहाज में सामान की तलाशी के लिए गया। मुझे कुछ रस्सियों की भी जरूरत थी, जो वहां मस्तूल में मुझे काफी मात्रा में मिल गईं। उन रस्सियों को काटकर मैंने छोटा किया और समेटकर ठीक से रख लिया। मैं इस बार जहाज पर पूरे सामान को बेतरतीबी से उधेड़ रहा था, क्योंकि मैं जानता था कि मैं यहां अंतिम बार आया हूं। इस बार मैं जरूरत की किसी भी चीज को छोड़ना नहीं चाहता था।

इस दौरान मैंने अपने पिछले पांच या छह समुद्री यात्राओं के अनुभव के आधार पर जहाज को छान मारा और सभी चीजों की बारीकी से तलाशी ली। फलस्वरूप जहाज में मुझे कुछ ऐसी चीजें भी मिलीं, जिनकी मुझे कतई उम्मीद नहीं थी। तहखाने में खाने के लिए काफी

मात्रा में बिस्कुट सुरक्षित रखा था, जो पानी से बिलकुल भी प्रभावित नहीं हुआ था। साथ ही, वहां कुछ रम के पीपे, एक बक्से में चीनी और एक पीपे में अच्छा आटा भी रखा हुआ था। मैं यह देखकर हक्का-बक्का रह गया कि ये चीजें बिलकुल ही वैसी रखी हुई हैं। पानी से कुछ भी बर्बाद नहीं हुआ था। मैंने तेजी से उस तहखाने को खाली किया और सारा सामान अपने साथ किनारे पर सुरक्षित ले गया।

अगले दिन मैं फिर अगली यात्रा पर निकला और अब उस ठहरे हुए जहाज से मैं सबकुछ निकाल कर ले आना चाहता था। उस पर काफी सारे केबल्स समेत ऐसी कई चीजें थीं, जिन्हें मैं हाथ से ले जाने में आसानी से सक्षम था। मैंने केबल्स को टुकड़ों में काटा और उन्हें घुमाते हुए ले जाने लायक बनाया। वहां जहाज को चलाने और बांधने वाला एक बड़ा रस्सा भी मेरे हाथ लगा, जिसे काटकर मैंने रख लिया। इस बार मैंने सारे सामान को बड़ी ही सावधानी से राफ्ट पर रखा, ताकि आगे चलकर किसी तरह की कोई असुविधा न हो। मैंने सारा भारी सामान उस पर लाद दिया। इस बार भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया। जब मैं अपने रहने के स्थान के पास के दर्रे के करीब पहुंचा तो राफ्ट का संतुलन बिगड़ गया और उस पर लदा हुआ सारा सामान पानी में डूब गया। जहां तक मेरा सवाल है तो चूंकि मैं तट के करीब पहुंच चुका था, इसलिए मुझे इस घटना से कोई क्षति नहीं पहुंची। इस तरह मैं पूरी तरह से सुरक्षित रहा। वैसे इसमें बहुत-सी जरूरी चीजों का मुझे जरूर नुकसान हुआ, खासकर उसमें रखे लोहे के सामान का, जो मेरे लिए काफी उपयोगी साबित हो सकता था। हालांकि जब ज्वार खत्म हुआ तो मैंने उनमें से केबल के कई टुकड़ों समेत काफी सारा सामान निकाल लिया। इसके लिए मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी और इस काम से मैं बहुत थक गया। इसके बाद तो मैं रोज ही बोर्ड पर जाने लगा और वहां से जितना हो सकता, सामान लाता रहता।

इस तरह किनारे पर मैंने तेरह दिन बिता दिए। इस दौरान मैं ग्यारह बार बोर्ड पर गया था, जहां से मैं अपनी जरूरत की तमाम चीजों को ले आया था। मुझे विश्वास था कि यदि इसी तरह से मौसम अच्छा रहा तो

मैं पूरा जहाज खाली कर दूंगा और उसमें रखा हुआ सारा सामान सुरक्षित निकाल लूंगा। लेकिन बारहवीं बार जब मैं उस बोर्ड पर गया तो हवा चलनी शुरू हो गई। हालांकि पानी का बहाव धीमा था और मैं बोर्ड तक पहुंचने में सफल रहा। फिर मैंने सोचा कि केबिन में सभी चीजों की बारीकी से खोजबीन कर लेनी चाहिए, ताकि कुछ भी वहां रह न जाए। इस प्रकार खोजते हुए मुझे एक लॉकर दिखाई दिया, जिसमें तीन रेजर, एक बड़ी कैंची, दर्जनभर चाकू और इसके अलावा कुछ बहुमूल्य चीजें मिलीं, जिनकी कीमत तकरीबन 36 पाउंड थीं–इनमें कुछ यूरोपीय सिक्के, कुछ ब्राजीलियन सिक्के, कुछ स्वर्ण और कुछ चांदी के सिक्के भी थे।

इस अपार धन को देखकर भीतर ही भीतर मैं बहुत खुश था, "अरे! इतना सारा धन।" मैं चिल्लाया, 'इतने सामान का तुम क्या करोगे? मेरे लिए इन सबका कोई मतलब नहीं, न ही छोड़ देने का कोई मतलब है। इनमें से एक चाकू ही सबसे जरूरत की चीज है। मुझे इनके इस्तेमाल के बारे में भी पता नहीं है, जहां तक मैं जानता हूं ये जानवरों को मारने के ही काम आते होंगे।' हालांकि बाद में इन सबकी जरूरतों को देखते हुए मैंने सारा सामान पैक किया और राफ्ट पर लेकर आ गया। इतने में ही मैंने देखा कि आसमान में बादल छाने लगे हैं और हवा भी तेज चलने लगी है। कुछ ही देर में बारिश शुरू होने का आभास मुझे हो रहा था। मुझे तत्काल ही सारा सामान लेकर वहां से निकलना था। ज्वार के उठने से पहले मुझे निकल जाना था, अन्यथा किनारे तक पहुंचना मेरे लिए मुश्किल हो जाता। अपनी योजना के अनुसार मैं जहाज और बालू के बीच चैनल को तैरकर पार कर गया। मैं वहां से अपनी पीठ पर कुछ सामान लेकर भी निकला था, जिससे मुझे परेशानी हुई, लेकिन मैं उनसे उभरते हुए समुद्र में लहरों और तूफान के उठने से पहले ही अपने लक्ष्य तक पहुंच चुका था।

मैं किनारे पर बनाए हुए अपने घरनुमा उस टेंट में सारा सामान लेकर दाखिल हुआ, जहां मुझे हासिल हुई बहुमूल्य चीजों को सुरक्षित रखना

था। रातभर तेज हवाएं चलती रहीं और सुबह जब मैं सोकर उठा तो मैंने पाया कि वह जहाज कहीं दिखाई नहीं दे रहा है! मैं थोड़ा आश्चर्यचकित हुआ, लेकिन मुझे इस बात का संतोष था कि मैंने उस जहाज में कुछ खोया नहीं। सभी जरूरत की चीजों को मैंने उसमें से निकाल लिया था। हां, यदि मेरे पास थोड़ा और समय होता तो मैं और भी कुछ चीजों को उसमें से निकाल पाता।

अब मेरा अगला कदम था। यहां इस द्वीप पर संभावित जंगली जानवरों या क्रूर आदमियों से बचाव के लिए सुरक्षा के तमाम उपाय करना। इस बारे में मैंने काफी सोच-विचार किया कि इस काम को किस प्रकार से अंजाम दिया जा सकता है। मेरे दिमाग में अनेक विचार आए कि मुझे अपने लिए एक गुफा बनानी चाहिए या धरती पर टेंट तैयार करना चाहिए। मैंने दोनों ही तरीकों को अपनाते हुए, बिना समय गंवाए, जैसे-तैसे काम शुरू कर दिया।

मैं शीघ्र ही एक जगह की तलाश करते हुए वहां अपना ठिकाना बनाने की दिशा में काम शुरू करना चाहता था। इसके लिए मुझे ऐसी जगह की जरूरत थी, जो समुद्र के पास भी हो और ताजे पानी के स्रोत से दूर भी नहीं हो। इसलिए मैंने इन दोनों के मध्य में रहने के लिए जगह का चयन करना शुरू कर दिया।

इस मकसद के लिए एक समुचित जगह की तलाश करते हुए मैंने एक मैदान के किनारे पर छोटी-सी उठी हुई पहाड़ी के बीच अपनी रिहाइश बनाने के लिए जगह को चुना। उसका आगे का हिस्सा मैदान की ओर खुलता था और पीछे उठी हुई पहाड़ी से कुछ हद तक सुरक्षा भी मिल जाती थी, ताकि मेरे निकट ऊपर से भी कोई कुछ फेंक न पाए। चट्टान की इस दिशा की ओर कुछ खोखली जगह थी, जो देखने में किसी गुफा के प्रवेश द्वार की तरह लग रही थी, लेकिन असल में ऐसा कुछ नहीं था। यह जगह मेरे मनमाफिक लग रही थी।

इस समतल हरी-भरी जगह पर, जो खोखली-सी जगह के पास ही थी, मैंने अपना टेंट लगाने का फैसला लिया। यह समतल जमीन

तकरीबन सौ गज चौड़ी और इससे दोगुना लंबी थी। मेरे दरवाजे के सामने काफी हरियाली थी और वहां से समुद्र की ओर जाना अनियमित रूप से छिछला था। मैं इस पहाड़ी के उत्तर-पश्चिम दिशा में था, इसलिए मुझे रोजाना के सूरज की गरमी से भी कुछ हद तक बचने की वहां गुंजाइश लगी, क्योंकि इस देश में सूरज दक्षिणायन था।

अपना टेंट खड़ा करने से पहले मैं उस खोखले स्थान पर आधे घेरे की लकीर खींचना चाह रहा था। उसका अर्धव्यास चट्टान से तकरीबन दस गज था और शुरू से लेकर अंत तक का व्यास बीस गज था।

इस अर्धव्यास को मैं इस तरह से घेर देना चाहता था, ताकि कोई भी इसके भीतर न आ सके। इसके लिए मैंने साढ़े पांच फीट की ऊंची मजबूत लकड़ियों के खूंटे को जमीन के अंदर गाड़ते हुए उसके ऊपरी हिस्से को नुकीला बना दिया, ताकि कोई ऊपर से कूद कर न आ सके। दोनों ही खूंटों के बीच छह इंच की दूरी रखी और उनकी दो कतार का सुरक्षित घेरा बना डाला।

उसके बाद लकड़ियों के खूंटों को केबल के टुकड़ों से कसकर बांध दिया और पूरे वृत्त में एक सुरक्षित घेरा बना दिया। खूंटे की इन दोनों ही कतारों को केबल से बांध दिया और अब ये इतनी मजबूत हो चुकी थीं कि कोई भी जंगली जीव या आदमी इसे आसानी से पार नहीं कर सकता था। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी थी। खासकर लकड़ियों को काटकर उनका खूंटा तैयार करने में और उसे ढोकर उसकी जगह तक लाने और फिर उसे जमीन में गाड़ने में तो मेरी जान ही निकल गई थी—इस तरह मैं अब बुरी तरह से थक चुका था।

इस सुरक्षित रिहाइश के प्रवेश का स्थान भी मैंने नहीं छोड़ा और आने-जाने के लिए मैंने एक सीढ़ी का इस्तेमाल शुरू किया। जब मैं अंदर आ जाता था तो मैं सीढ़ी को अंदर की ओर खींच लेता था। इस प्रकार मैंने सुरक्षा घेरा तैयार कर लिया। अब मैं यह सोच रहा था कि पूरी दुनिया में शायद ऐसी सुरक्षित जगह कम ही होगी। मैं यहां रात को आराम से निश्चिंत होकर सो सकूंगा। यहां मुझे अब किसी भी तरह की
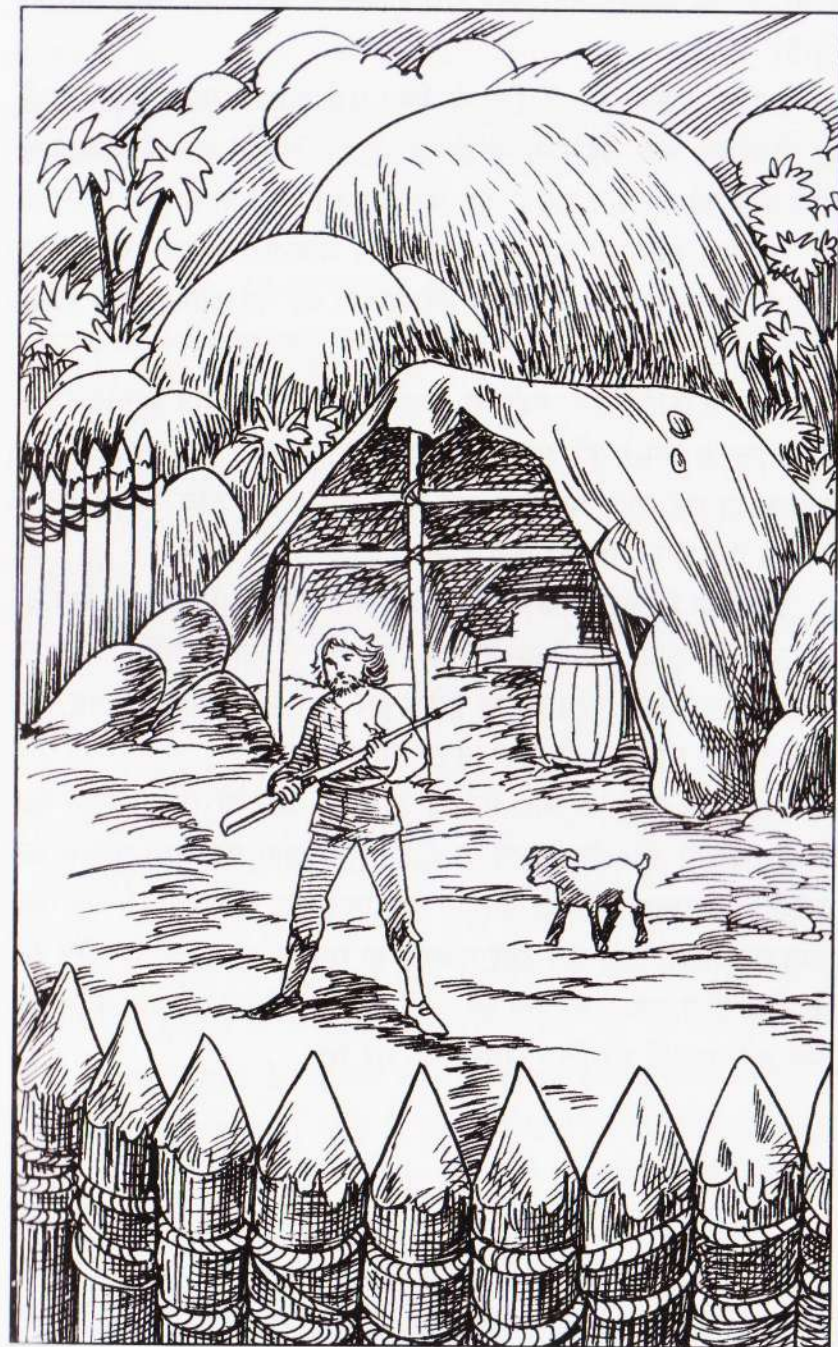
मैं यह सोच रहा था कि पूरी दुनिया में ऐसी सुरक्षित जगह कम ही होगी।

सावधानी की जरूरत नहीं और अब दुश्मनों से खतरे की आशंका नहीं रहेगी।

इस किले रूपी घेरे में, जिसके लिए मुझे काफी मेहनत करनी पड़ी थी, मैं अपनी सभी बहुमूल्य चीजों को अंदर ले आया। सभी हथियार एवं सामग्रियों को सुरक्षित रख दिया। मैंने अपने लिए एक बड़ा टेंट बनाया था, जो मुझे वहां की भयानक बारिश से बचाता। जहाज पर से लाए तिरपाल से पहले एक बड़ा-सा टेंट बनाया था मैंने और उसके भीतर एक छोटा-सा टेंट भी।

मेरे पास कोई बिस्तर नहीं था, जिसे मैं उस टेंट में लगा पाता। लेकिन मैं जहाज के कमरे की झूलन खटिया निकाल लाया था, जिस पर उस जहाज का मेट सोता था। और यह बहुत ही आरामदायक थी, इसलिए उसे ही मैंने अपना बिस्तर बना डाला।

अब तक जितनी चीजें बची हुई थीं और भविष्य में काम आ सकती थीं, उन सब चीजों को मैं इस टेंट के पास तक ले आया। चूंकि मैंने अंदर जाने के लिए कोई दरवाजा या प्रवेश द्वार नहीं छोड़ा था, इसलिए मुझे सारा सामान सीढ़ी से ही अंदर लेकर जाना पड़ा।

पूरा काम होने के बाद मैंने चट्टान की ओर से रास्ता बनाने का विचार बनाया और टेंट लगाने के दौरान वहां खोदे गए सभी पत्थरों को हटाया। इन सबको घेरे के किनारे तकरीबन डेढ़ फीट की ऊंचाई तक जमा कर दिया। अब घेरा और मजबूत हो गया और उसके बाद मैंने टेंट के ठीक पीछे एक गुफा बना ली, जो किसी घर में बने तहखाने की भांति अब पूरी तरह से मेरे लिए सुरक्षित हो गई थी।

□□

अध्याय-6

जानवरों का शिकार

उस दौरान मैं अपने लिए योग्य काम की तलाश में था—ताकि मैं इस समय का सदुपयोग कर सकूं और अपनी मेहनत से आगे की मंजिल तलाश सकूं। मैंने अपने लिए एक टोकरी बनाने का बहुत प्रयास किया, लेकिन वहां टहनियां इतनी कमजोर थीं कि वे मेरे लिए बेकार सिद्ध हो रही थीं।

अगले दिन मैं अपनी रिहाइश से बाहर निकला। कुछ छोटी टहनियों को काटकर मैं अपनी जरूरत के अनुसार चीजों को बनाना चाह रहा था, परंतु कामयाबी नहीं मिली। अगली बार मैंने जहाज पर से लाए तमाम बोर्ड को काटते हुए उनसे काफी सामग्रियों का निर्माण किया। अपनी रिहाइश को और सुरक्षित और सूखा बनाने के लिए उन सबको सही जगह पर लगा दिया। साथ ही जमीन से अपनी गुफा तक सामान ले जाने के लिए मैंने टोकरी बनाने का काम शुरू किया तथा इसमें मुझे कामयाबी मिल गई। अब तक जो काम मुझे असंभव-सा प्रतीत हो रहा था वह बड़ी ही आसानी से हो गया तथा सभी चीजों को मैंने अपनी जरूरत के मुताबिक काम के लायक बना दिया—इन सबके बिना मैं खुद को सुरक्षित नहीं रख पाता। चूंकि मैं सुरक्षा में कोई भी कोताही नहीं बरतना चाह रहा था, इसलिए मैंने खासतौर पर गहरी टोकरियां बनाईं। फिर उनमें काफी तादाद में खाद्य सामग्रियों को भरकर सुरक्षित रख दिया।

जैसा कि मैं पहले भी कई बार चर्चा कर चुका हूं कि मेरे दिमाग में इस द्वीप समूह को देखने और यहां घूमने की इच्छा प्रबल हो रही थी। मैं मनोरंजन के लिए इसकी यात्रा पर निकलना चाह रहा था। चूंकि मैं

अपनी रिहाइश में एक भीतरी कक्ष का निर्माण कर चुका था, इसलिए अब मैं समुद्र के दूसरे किनारे और इस द्वीप समूह के दूसरे छोर को देखना चाहता था। मैं अब इस देश में समुद्र के किनारे चलते हुए काफी दूर तक जाना चाह रहा था। इसलिए मैंने अपनी बंदूक, कुछ बोर्ड का सामान, ज्यादा तादाद में बारूद पाउडर, कुछ बिस्कुट के पैकेट, अपने स्टोर में रखे कुछ किशमिश के पाउच लिए और अपने कुत्ते को साथ लेकर घूमने के मकसद से निकल पड़ा। जब मैं अपनी रिहाइश वाली घाटी को पार कर गया तो मैं पश्चिम की ओर के समुद्र को साफ-साफ देख पा रहा था। उस दिन बड़ा ही सुहावना मौसम था और वहां की धरती बड़ी मनोहारी दिखाई दे रही थी। मैं यह नहीं जान पा रहा था कि वह एक द्वीपसमूह है या कोई महाद्वीप। लेकिन वह बहुत ऊंचाई पर स्थित था। पश्चिम की ओर उसकी चौड़ाई ज्यादा दिख रही थी, जहां से दक्षिण-पश्चिम की दूरी बहुत ज्यादा लग रही थी। मेरे अंदाजे के अनुसार यह दूरी पचास-साठ मील से कम नहीं थी।

मुझे कोई यह नहीं बता सकता था कि यह दुनिया का कौन-सा हिस्सा होगा। जहां तक मुझे लग रह था कि वह अमेरिका का हिस्सा होगा। मैं अपने अनुभव से इस निष्कर्ष पर पहुंच पाया था कि वह स्पेनिश साम्राज्य का हिस्सा हो सकता है। शायद यहां जंगली मानव रहते हों, जिस द्वीप समूह में मैंने कदम रखा है। मैं अभी जहां हूं वह शायद पहले वाले से अच्छी होगी। यह सब सोचते हुए मैं आराम से आगे बढ़ रहा था। मैं देख रहा था कि द्वीप समूह का यह हिस्सा उस ओर से ज्यादा ही सुहावना और आनंददाई था। यहां खुले सवाना घास के मैदान, मीठे फलों और फूलों से लदे जंगल और काफी अच्छी लकड़ियां थीं। यहां बड़ी तादाद में तोते थे। यह सब देखकर मैं खुशी से झूम उठा। यहां से मैं एक तोता पकड़कर अपने साथ ले जाना चाहता था, ताकि मैं उसे अपनी भाषा सिखा सकूं और वो मेरे साथ बात कर सके। मैंने छड़ी के सहारे से एक तोते को पकड़ लिया और उसे अपने साथ घर ले आया। कई सालों तक मैं उसे बोलना सिखाता रहा। हालांकि अंततः मैंने उसे अपना नाम

काफी अच्छी तरह से रटा दिया और वह उसमें माहिर हो गया। लेकिन उस बियाबान जगह पर उसका कोई महत्त्व नहीं था।

मैं उस यात्रा से पूरी तरह से मोहित हो चुका था। वहां मुझे छोटे खरगोश और लोमड़ियां दिखाई दीं, जिन्हें मैं अपने साथ ले जाना चाहता था। वे कुछ अलग ही तरह के लग रहे थे—इसलिए मैं खुद को संतुष्ट नहीं कर पा रहा था कि क्या ये खाने लायक हो भी सकते हैं। मैंने उनमें से कुछ को मारना चाहा, लेकिन उस समय मेरे पास खाने की कमी नहीं थी, इसलिए ऐसा करने की मुझे कोई जरूरत नहीं महसूस हुई। वहां खासकर तीन चीजें बड़ी सुंदर दिख रही थीं—बकरियां, कबूतर और कछुए।

जैसे ही मैं समुद्र तट की ओर पहुंचा, मेरी आंखें यह देखकर फटी रह गईं कि मैं जिस ओर ठहरा था, वह द्वीप की सबसे बेकार जगह है। इस ओर किनारे पर अनगिनत कछुए थे, जबकि उस ओर पिछले डेढ़ साल में केवल तीन ही दिखाई दिए थे। यहां कई प्रकार के अनगिनत पक्षी भी थे, जिनमें से कुछ मैंने पहले भी देखे थे। इनमें से कुछ का मांस तो बहुत ही लाजवाब होता है, लेकिन मुझे उनके नाम नहीं मालूम हैं—केवल एक पेंगुइन को छोड़कर।

मैं अपने मनोरंजन के लिए कुछ का शिकार करना चाह रहा था, लेकिन इससे मेरे हथियार की गोली कम होने की आशंका थी, इसलिए मैंने अपनी जरूरत के लिए एक बकरी को मारने का विचार किया, जिसका भोजन बेहतर हो सकता था। हालांकि उस ओर काफी तादाद में बकरियां थीं, परंतु उनके पास तक पहुंचना इतना आसान नहीं था। यह देश सपाट दिखाई दे रहा था। यहां तक कि जब मैं पहाड़ी पर होता था तो चीजें बहुत नजदीक दिखाई देती थीं।

मैं पूरी तरह समझ चुका था कि इस देश का यह हिस्सा मेरे वाले भाग से ज्यादा मनोहारी है। लेकिन अब मैं इधर आकर रहने के बारे में सोच नहीं सकता था, क्योंकि प्राकृतिक रूप से मेरा वहां पर रहना ही ठीक था। मैंने अपने इरादे को और मजबूत बनाया। हालांकि इन सबको

समझने के बावजूद मैंने पूरब की ओर यात्रा जारी रखी। तकरीबन बारह मील तक चलने के बाद एक स्थान को देखते हुए वहां समुद्र किनारे निशान के तौर पर मैंने एक खंभा गाड़ दिया, ताकि अगली यात्रा की शुरुआत वहां से हो सके। मैं अब इस द्वीप के पूरब की ओर जाने के इरादे से यहां तक की यात्रा को खत्म मान चुका था।

अब मैं दूसरी दिशा की ओर गया, जिधर मैं यह सोच रहा था कि इस द्वीप का आसानी से निरीक्षण कर पाऊंगा। इस तरह मुझे लग रहा था कि मैं अपनी यात्रा को पूरा करने और इस द्वीप को जानने में सफल हो सकता हूं। लेकिन फिर कुछ ही समय बाद मैंने खुद को गलत पाया। तकरीबन दो या तीन मील चलने के बाद ही मुझे लगा कि मैं एक बड़ी घाटी में उतरता जा रहा था। वह घाटी पहाड़ी से घिरी हुई थी और वहां इतने पेड़ थे कि मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि किस दिशा में जा रहा हूं। परंतु जब मुझे सूरज दिखाई दिया, तब मुझे वहां से दिशा की स्थिति का आभास हुआ। ऐसा हुआ कि उसके बाद तीन या चार दिनों तक मौसम खराब रहा और उस दौरान मैं घाटी में ही ठहरा रहा। वहां मुझे सूरज दिखाई नहीं दे रहा था इसलिए मैं वहां भटक गया। अंततः किसी तरह से मुझे समुद्र का किनारा नजर आया और मैंने अतीत के कुछ निशानों को देखते हुए अपने रिहाइश वाले इलाके की ओर जाने वाला रास्ता पकड़ा। इस यात्रा के बाद मैं घर की ओर मुड़ चुका था, मौसम बहुत गर्म हो चुका था। अब मेरे शरीर पर हथियार समेत लदा हुआ सामान मुझे बहुत भारी लग रहा था।

इस यात्रा में, मेरे कुत्ते ने एक बिल्ली को देखा और उस पर जोर से झपट्टा मारते हुए उसके पीछे भागा। मैं उसके पीछे भागा और उस बिल्ली को बचाते हुए कुत्ते की पहुंच से मुक्त कर दिया। मेरे दिमाग में एकबारगी यह विचार भी आया कि उसे लेकर घर जाऊं। फिर यह सोचकर ठहर गया कि एक तो मेरे पास है ही तो क्या दूसरे को ले जाना उचित रहेगा। मैं कुछ बकरियों की किस्म को पालतू बनाना चाह रहा था, ताकि जब मेरे पास पाउडर और गोली खत्म हो जाए तो वे काम आ
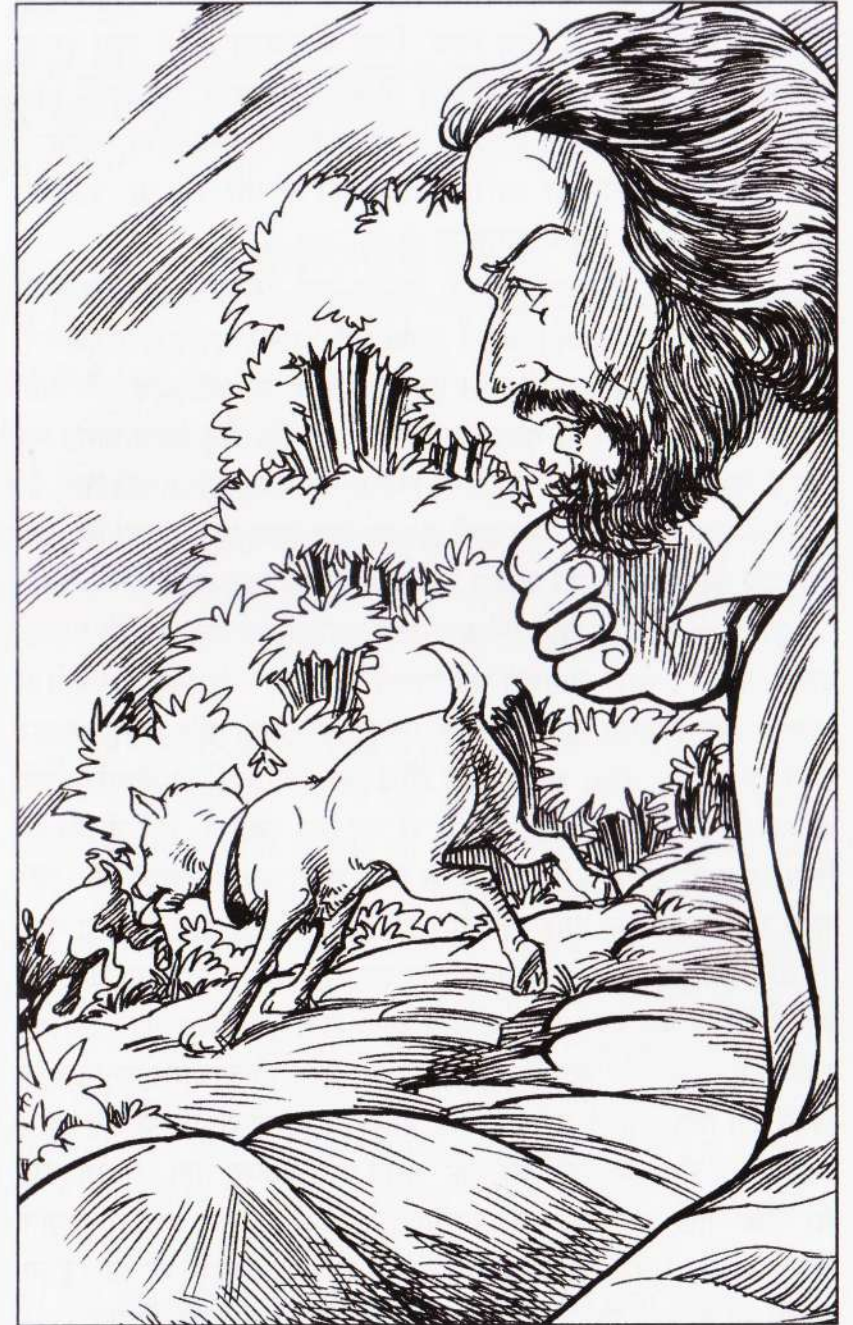
मेरे कुत्ते ने बिल्ली को देखा और उस पर झपट्टा मारते हुए उसके पीछे भागा।

सकेंगे। मैंने उस छोटे से जानवर के लिए एक बांधने वाला पट्टा बनाया और उसे एक रस्सी से बांध दिया, जिसे मैं हमेशा अपने पास रखता था। मुझे उसे लेकर आने में दिक्कत भी हुई, लेकिन मैं उसे अपने साथ लताकुंज तक सुरक्षित ले आया। वहां लाकर उसे बांध दिया, चूंकि मैं अपने रहने के ठिकाने पर तकरीबन एक माह से नहीं गया था—इसलिए वहां जाने के लिए अब मैं व्याकुल हो रहा था।

यह सोचकर मैं संतुष्ट हो रहा था कि मुझे अपने ठिकाने के पुराने से तहखाने में जाकर और उसमें बनाए हुए बिस्तर पर सोने में कितनी संतुष्टि मिलेगी। बिना कहीं ठहरे हुए इस छोटी-सी भटकाव भरी यात्रा के दौरान यह जानने से थोड़ा नाखुश भी था कि मैंने जिस जगह पर अपनी रिहाइश बनाई है, वह अन्य स्थानों के मुकाबले अच्छी नहीं है। हालांकि यहां मैंने अपने लिए इतने इंतजाम कर लिए थे कि अब मेरे लिए इस द्वीप पर कहीं अन्यत्र जाकर रहना बहुत मुश्किल था।

इस लंबी यात्रा के बाद मैंने तकरीबन एक सप्ताह तक आराम किया। इस दौरान मैंने कुछ जानवरों को पालने के लिए एक पिंजरा बनाने में ज्यादा समय बिताया, ताकि मैं उन्हें पालतू बना सकूं और आगे चलकर वे मेरे काम आ सकें। अब मैं यह सोच रहा था कि जिस बेचारे बकरी के बच्चे को मैंने इस छोटे से घेरे में बंद कर रखा है, वह तो उसके लिए सजा ही होगी। उसे मैं खाने के लिए मुक्त करना चाहता था—फिर कुछ खाना उसे देना चाह रहा था। इस तरह मैं उसे वहां ले गया जहां ले जाना चाहिए था। वह भाग नहीं पा रहा था, क्योंकि वह काफी भूखा था। मैंने उसे पेड़ के कुछ पत्ते और कुछ लताएं तोड़कर खाने को दीं। उसका पेट भरने के बाद मैं उसे पहले की तरह ही बांधकर अपने साथ लेकर आ गया। शायद उसे अब तक समझ आ गया था कि मैं उसे खाना खिलाने ले गया था, इसलिए मुझे बांधने की जरूरत नहीं थी और वह मेरे पीछे-पीछे आने लगा। समय बीतता गया। मैं उसे इस तरह रोज खाना खिलाता। वह मुझसे काफी घुलमिल गया और विनम्र होने के साथ इतना पालतू भी हो गया कि जैसे अब वह कभी मुझसे जुदा नहीं होगा।

❑❑

अध्याय-7

नई कुशलताएं हासिल कीं

बारिश का मौसम शुरू होने वाला था—जब दिन-रात बराबर हो जाते हैं। मुझे 30 सितंबर का वह दिन याद आ रहा था, जब मैंने इस द्वीप पर पहला कदम रखा था। अब मुझे दो वर्ष पूरे होने वाले थे। पहले दिन से लेकर आज तक मेरे लिए यहां कोई खास उद्देश्य नहीं था। दिनभर मैं बिना मतलब भटकते हुए समय बिताता था और प्रकृति का आभार जताया करता था क्योंकि उसने अपनी गोद में मुझे सुरक्षित रखा था। बिना किसी आकांक्षा के निरपेक्ष भाव से वहां बड़ी ही निश्चिंतता में मैं जी रहा था।

पूरे धैर्य और परिश्रम के साथ मैं बहुत सी चीजों के पास गया। उन परिस्थितियों के मुताबिक, जो भी मुझे जरूरी लगीं, मैंने सबको पाने का प्रयास किया। नवंबर और दिसंबर का महीना आने वाला था। मैं उम्मीद कर रहा था कि मेरी जौ और चावल की फसल पककर तैयार होगी। मैंने थोड़ी-सी जमीन खोदकर इनको उगाया था। मेरे पास रखे ज्यादातर बीज खराब हो गए थे, लेकिन जितने बचे थे उतने ही मैंने बो दिए थे। इधर मेरी फसल ठीकठाक बढ़ रही थी। एकाएक मैंने देखा कि उसके कुछ दुश्मन पैदा हो गए हैं, जो शायद बकरियां या जंगली जानवर थे। इनसे इनका बचाव कर पाना मुमकिन नहीं लग पा रहा था, क्योंकि उन्हें इसकी बालियों के मीठेपन का एहसास हो गया था और वे कभी भी इसे खाने को उतावले थे तथा मौका मिलते ही चट कर जाना चाहते थे। मुझे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था, जिससे मैं अपनी फसल को बचा सकता। मैंने एक झाड़ीदार बाड़ बनाने की तैयारी की, लेकिन यहां बहुत बड़ा बाड़ा

बनाना था, इसलिए यह काम मुझे तेजी से निबटाना था। हालांकि मेरे द्वारा जोती गई जमीन बहुत छोटी थी–इसके बावजूद झाड़ीदार बाड़ को तैयार करने में करीब तीन सप्ताह का समय तो लग गया। मैंने दिन-रात एक करते हुए उसे तैयार किया। इस दौरान फसल को बचाने के लिए कई जानवरों को मारा भी। दिन के समय मैं खुद उसकी रखवाली करता और रात को मेरा कुत्ता पूरी तल्लीनता से देखभाल करता, वह पूरी रात जागकर भौंकता रहता था। मजबूरन कुछ समय के लिए दुश्मनों ने उस जगह को छोड़ दिया और फसल बढ़कर तैयार होने लगी। अब उसके पकने का समय नजदीक आ गया था।

लेकिन जिस तरह पहले जानवरों का खतरा था, उसी तरह अब पक्षियों का खतरा मंडराने लगा था। अब अनाज की बालियां पकने लगी थीं और उन पर बहुत सारे पक्षियों की नजरें गड़ी हुई थीं। एक दिन मैंने देखा कि वहां अनेक किस्म की ढेर सारी मुर्गियों ने डेरा डाल दिया है और वे फसल को रौंद रही हैं। मैं उन्हें वहां से भगाने के लिए उस ओर तेजी से दौड़ा। चूंकि मैं अपनी गन हमेशा साथ में रखता था, इसलिए उस समय भी वह मेरे पास ही थी। जैसे ही मैंने एक गोली दागी तो मुर्गियों के बीच भगदड़ मच गई और सबकी सब वहां से भाग गईं।

मैं यह देखकर दुखी हो गया कि मेरी सभी उम्मीदों पर तुषारपात हो गया था। मेरी फसल चौपट हो चुकी थी। मेरे लिए अनाज पैदा कर पाना अब संभव नहीं था। यह सोचकर मैं परेशान था कि अब मुझे भूखा ही रहना पड़ेगा। लेकिन इसके सिवाय अब मैं कर क्या सकता था। हालांकि थोड़ी देर संभलने के बाद जब मैं नजदीक गया तो मुझे लगा कि फसल कुचली तो गई है, लेकिन वह अभी जिंदा और हरी-भरी है। यदि उसकी पूरी सुरक्षा की जाए तो बहुत कुछ बचाया जा सकता है। अभी सबकुछ बर्बाद नहीं हुआ था। इस प्रकार इसे यदि बचा लिया जाए तो अनाज की अच्छी पैदावार हो सकती है।

मैं अपनी गन को लोड करके वहां बैठ गया और पेड़ पर बैठे सभी चोरों से फसल की निगरानी करने लगा। मानो वे भी मेरे वहां

से जाने का इंतजार कर रहे हों। थोड़ी ही देर बाद यह साबित भी हो गया–जैसे ही मैं वहां से जाने लगा कि थोड़ी ही देर बाद एक-एक करके वे नीचे उतरने लगे और फसल के नजदीक जाने लगे। इस बार मैं इतना उत्तेजित हो गया कि मैंने अपना धैर्य खो दिया क्योंकि मुझे एहसास था कि यह फसल मेरे लिए बहुत मूल्यवान है। इसके नुकसान होने का मतलब था, इसका दोबारा हासिल नहीं हो पाना। मैं तेजी से अपने बाड़े में गया, गोली दागते हुए उनमें से तीन को मैंने मार गिराया। इनके साथ मैं अब अलग तरीके का बर्ताव करना चाह रहा था–जैसा कि इंगलैंड में कुख्यात चोरों को फांसी देकर उन्हें चेन में लटका दिया जाता है, ताकि दूसरे लोगों में उसका आतंक कायम हो। ठीक उसी प्रकार मैंने उन तीनों को वहीं बांधकर लटका दिया। उसके बाद तो ऐसा हुआ, जिसके बारे में मैंने सोचा भी नहीं था। ऐसा लगा जैसे सभी मुर्गियों ने उस जगह को त्याग ही दिया। जब तक बिजूकों के रूप में मैंने उन तीनों को लटकाए रखा, तब तक द्वीप के उस हिस्से में दूर-दूर तक कोई पक्षी मुझे दिखाई नहीं दिया।

दिसंबर का महीना आने वाला था और मैं फसलों को पकता हुआ देखकर बहुत ही खुश था। फसल को काटने के लिए मुझे हंसिए की जरूरत थी, जो मेरे पास नहीं था। मैंने जहाज से सामान लाते वक्त कई चीजें इकट्ठा की थीं। उनमें इस तरह की काटने वाली कई चीजें थीं, जो इस वक्त काम आ सकती थीं। हालांकि यह मेरी पहली फसल थी, चूंकि वह बहुत ही कम तादाद में थी, इसलिए मुझे उन्हें काटने में कोई दिक्कत नहीं हुई। वैसे इस बार की फसल मैंने इसका बीज जमा करने के मकसद से बोई थी–ताकि अब मैं इनसे ज्यादा अनाज हासिल कर सकूं और इन्हें सुरक्षित रख पाऊं। उस समय मेरे पास अनाज तौलने वाला तराजू नहीं था। लेकिन जहां तक मैंने अंदाजा लगाया, अंत में तकरीबन दो बशेल चावल और ढाई बशेल जौ की पैदावार हुई थी।

मेरी जरूरतों के लिए ये कम नहीं थे और मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने मेरा खयाल रखा। इसके बावजूद मेरी परेशानी का पूरा

हल नहीं हुआ था। मुझे पता नहीं था कि इनको कैसे कूटा जाए, कैसे पीसा जाए। फिर किस तरह से इनको पकाया जाए और कैसे इन सबकी छंटाई या सफाई की जाए। इन सब चीजों ने मेरी इच्छा को बढ़ा दिया। अब मैं इसे भरपूर तादाद में पैदा करना चाह रहा था, जिसके लिए इन्हें सुरक्षित तौर पर संग्रह करके रखने की जरूरत थी। मैं इन्हें खाना नहीं चाहता था, बल्कि अगले सीजन में बीज के रूप में इस्तेमाल करने के लिए संरक्षित रखना चाहता था। इस दौरान मुझे अपने खाने की जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत ही मेहनत करने की जरूरत थी।

सबसे पहले तो मेरे पास जमीन को जोतने का कोई इंतजाम नहीं था, खोदने के लिए न कोई कुदाल थी और न ही कोई खुरपी। मैंने कुछ जुगत भिड़ाई और लकड़ी की एक कुदाल तैयार की। इससे मेरा काम तो होने लगा, लेकिन इसमें समय बहुत लग रहा था। तब मुझे महसूस हुआ कि यदि थोड़ा-सा भी लोहा इस काम के लिए इस्तेमाल में लाया जाए तो परिस्थिति में सुधार हो सकता है। हालांकि मैं बहुत धीरज से गड्ढे खोदता रहा और अपने कार्य के तरीके में सुधार लाता रहा। जब बीजों की बुआई का समय आया तो मेरे पास जुताई के लिए हल नहीं था, लेकिन मैं इस ओर इतना आशावान था कि मैंने एक पेड़ की मोटी डाली को काटकर एक हल तैयार किया–उसी से जमीन को खुरचकर बुआई की।

फसल जब बढ़ने लगी तो मैं लगातार उसकी निगरानी करने लगा और साथ ही कई सारी चीजें मेरी समझ में आती गईं–जैसे उसमें बाड़ लगाना, उसकी सुरक्षा करना, उसे काटना, सुरक्षित घर तक लेकर जाना, झाड़कर अनाज अलग निकालना, बेकार हिस्सों को अलग करना आदि। अब मुझे एक ऐसे मशीन की जरूरत थी, जो उसे कूट-पीस सके, उसमें नमक और यीस्ट मिलाकर ब्रेड तैयार कर सके और ओवन में पका सके। बिना कहीं इन चीजों को देखे हुए मैं अपनी समझ के आधार पर पूरी तल्लीनता और आराम से सब काम करता गया और इससे मुझे इन चीजों की जानकारी होती रही।

खैर, यह सारा काम अकेले ही निबटाना अपने आप में बहुत ही थकाऊ और उबाऊ था। लेकिन मेरे पास कोई और दूसरा उपाय भी तो नहीं था। न ही वहां मेरी कोई मदद करने वाला था। इसलिए मैं रोजाना ही यह काम पूरी तन्मयता से करता रहा। मैंने अपनी एक दिनचर्या बना ली थी, जिसमें एक हिस्सा इस काम के लिए भी रखा था, ताकि मुझे किसी तरह की बोरियत न हो। इस बार इतनी तादाद में अनाज की पैदावार हुई थी कि मैं यदि कहीं नहीं जाता और खाने का कोई दूसरा बंदोबस्त नहीं भी करता तो भी लगातार छह महीने तक मेरे भोजन का पर्याप्त कोटा एकत्र हो गया था।

लेकिन मैं अनाज की पैदावार के लिए कुछ और जमीन तैयार कर लेना चाहता था, क्योंकि इस बार एक एकड़ जमीन में अनाज की बुआई करना चाहता था। इस काम के लिए पहले मुझे एक सप्ताह कुदाल तैयार करने में लगा। जब वह बनकर तैयार हुआ तो वह इतना भारी था कि उससे काम करने में दोगुना श्रम लगाना पड़ा। मैं उसे लेकर काम करने गया। मैंने अपने घर के नजदीक जितनी जमीन थी उसमें, जहां तक मैं उन बीजों को बोने में सक्षम हो सकता था, मैंने बीज की बुआई की। इसके बाद मैंने फसल के बढ़ने से पहले ही झाड़ीदार बाड़ों से उस पूरी जमीन की घेराबंदी की ताकि कोई नुकसान न हो। इस प्रकार, पिछले एक साल के दौरान मैंने बहुत सारा काम सीख लिया। बाड़ा तैयार करने का काम इतना आसान भी नहीं था। इस काम में मुझे पूरे तीन महीने का समय लगा था, क्योंकि उस पूरे बारिश के मौसम के दौरान मैं कहीं भी बाहर नहीं जा सकता था।

बारिश के दौरान जब मैं घर में होता तो मैं खाली ही रहता। मेरे पास करने को वैसे भी कुछ नहीं था। इस समय को मैंने तोते को अपनी तरह से बोलने के लिए सिखाने में बिताया और उसे बोलने की शिक्षा दी। देखते-ही-देखते मैंने उसे उसका नाम बोलना सिखा दिया और अंततः वह अपना नाम बोलना सीख गया। जोर से वह बोलता–'पॉल', जो उस द्वीप पर ऐसा पहला शब्द था, जो मैंने अपने अलावा और किसी के मुंह

से आवाज के तौर पर सुना था। वैसे देखा जाए तो यह मेरे काम का कोई हिस्सा नहीं था, लेकिन मेरे काम में सहायक जरूर था। जैसा कि मैंने कहा था, मुझे कोई रोजगार भी तो चाहिए था। इसलिए मुझे लगा कि मैं इसे ही कुछ क्यों न सिखा दूं। अब मुझे अनाज को सुरक्षित रखने के लिए कुछ पॉट बनाने थे, लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि यह कैसे होगा। मैंने सोचा कि मौसम अभी इतना गर्म है कि कीचड़ वाली मिट्टी से यदि कुछ घड़े आदि बनाए जाएं तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वे धूप में आसानी से सूख जाएंगे, जिनका बाद में अच्छा-खासा इस्तेमाल किया जा सकता है। इस मौसम में धूप इतनी तेज थी कि दूसरा कोई जुगाड़ करने की जरूरत ही नहीं थी। वे सूखकर सख्त हो जाएंगे और मैं उनमें अनाज समेत अन्य जरूरी चीजों को सुरक्षित रख सकूंगा। इस तरह से जितने बड़े आकार का हो सका, उतना बड़ा जार मैंने बनाकर खड़ा कर दिया।

यह बताने में मुझे बहुत हंसी आ रही है कि किस तरह मैंने तरकीब से यह घड़ा बनाया और उसे आपस में जोड़ा। वो देखने में बहुत बेकार और भद्दा लग रहा था। सूर्य की प्रचंड गर्मी और धूप से वह कई जगह से चटक भी गया था। इस सब काम में बहुत ही श्रम करना पड़ा था। यदि शब्दों में कहा जाए तो इसके लिए पंकीली मिट्टी खोजना, उसे खोदकर निकालना, इकट्ठा करना, उसे घर तक ढोकर लाना और उस पर काम करना, फिर भी दो महीने की मेहनत के बाद उसे जार का नाम देना सही नहीं कहा जाएगा।

सूरज की गर्मी से वे दोनों अच्छी तरह सूख कर सख्त हो गए थे। मैं उन्हें वहां से उठाकर आराम से ले आया और खपच्ची से बनी दो बड़ी टोकरियों में उसे सुरक्षित रख दिया। इन्हें मैंने उसी मकसद से तैयार किया था, ताकि वे टूटें नहीं। उस बड़े पॉट और टोकरी के बीच में कुछ जगह बच गई थी। उसमें मैंने धान और जौ की भूसी को दबाकर भर दिया। ये दोनों ही पॉट अब इसी अवस्था में खड़े रहेंगे और जब अनाज पैदा होगा तो मैं इसमें उसे सुखाने के बाद रख पाऊंगा।

यद्यपि पहली बार मैंने बिना किसी डिजाइन के ही पॉट तैयार किए

थे, लेकिन अब मैंने पूरी तैयारी के साथ, जिस तरह से मेरा हाथ काम कर रहा था, मैंने कई प्रकार के छोटे और गोल-गोल पॉट, सपाट प्याले, मटके और छोटे पात्र तैयार किए। वे धूप में सूखकर सख्त बनते गए। लेकिन मेरे सवालों का अंत यहीं नहीं हुआ, इन पात्रों में सब कुछ रखना तो बड़ा मुश्किल काम था। अनाज तो रखा जाएगा पर द्रव पदार्थ कहां रखे जाएंगे और आग को कैसे सुरक्षित रखा जाएगा, यह कहना बड़ा मुश्किल था। मैं जहाज पर से आग जलाने के भी कुछ साधन लेकर आया था, जो खाना पकाने के लिए काम में आ सकते थे। परंतु वे सीमित मात्रा में थे और किसी भी तरह की लापरवाही होने पर वे सबकुछ बर्बाद कर सकते थे–इसलिए उन्हें सुरक्षित रखना भी मेरे लिए एक बड़ी सिरदर्दी थी।

अब मुझे इस बारे में विचार करना था कि इन मिट्टी के घड़ों को आग में पकाकर मजबूत कैसे बनाया जा सकता है। न तो मुझे इस बारे में कोई जानकारी थी और न ही मैं ऐसा करने में कुशल था, फिर भी मैंने अपना प्रयास जारी रखा। तीनों मिट्टी के घड़ों को एक जगह रखा और उसके चारों ओर जलाई जाने वाली लकड़ियों का ढेर लगा दिया। घड़े के नीचे जलते अंगारे रख दिए और सबकुछ धू-धूकर जलने लगा। थोड़ी ही देर के बाद इस आग ने उग्र रूप धारण कर लिया और मिट्टी के घड़े अंगारों की तरह लाल हो उठे। मैं डर रहा था कि इनमें से कोई या सभी चटक न जाएं, किंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ और तकरीबन पांच या छह घंटे के बाद जब आग खत्म हुई तो ये सही-सलामत थे। इनको तैयार करने के दौरान मैंने बालू के मिश्रण का भी सही तरह से इस्तेमाल किया था और अब ये इतने मजबूत हो गए थे कि किसी भी मौसम में इनके टूटने या चटकने की गुंजाइश बहुत ही कम थी। ये तीनों पके हुए घड़े देखने में कुछ खास सुंदर तो नहीं लग रहे थे, लेकिन इतना तय था कि इन्हें बालू वाली जमीन पर सरकाते हुए कहीं भी ले जाया जा सकता था।

इसमें खुश होने वाली ऐसी कोई खास बात तो मुझे नहीं दिखी, क्योंकि प्रकृति में यह कला पहले से ही मौजूद थी। मैं बड़ी बेसब्री से

उसके ठंडा होने का इंतजार कर रहा था ताकि उसे यहां से ले जा सकूं। मेरे लिए अब कुछ चीजें आसान हो गई थीं। इनमें से एक घड़े में मैं आग को सुरक्षित रख सकता था और एक में पानी गर्म करके उसमें मांस पका सकता था। इतना ही नहीं, इच्छानुसार कुछ अन्य चीजों को भी पका सकता था।

अब मेरा अगला काम एक चक्की तैयार करना था ताकि उसमें अनाज को पीसा जा सके। इस बारे में भी मुझे कुछ नहीं पता था कि उसका डिजाइन कैसे तैयार होगा। इसको कैसे बनाया जाता है, यह भी मुझे नहीं मालूम था। पत्थर को काटने के मामले में मैं बिलकुल ही अनभिज्ञ था, क्योंकि मेरे पास इसे काटने वाला कोई औजार भी तो नहीं था। कई दिनों तक मैं एक बड़े पत्थर की खोज में भटकता रहा, ताकि उसे काटकर, खोखला करके उसी से चक्की बनाई जाए। लेकिन मुझे पत्थर नहीं मिला–हालांकि एक ठोस चट्टान मिली, जो कुछ काम के लायक लग रही थी और मैंने उसे काट-काट कर कुछ काम लायक बनाया। इस द्वीप पर ज्यादातर पत्थर बालू के मिश्रण वाले थे, इसलिए सख्त पत्थर को खोजने में बहुत दिक्कत हुई। साथ ही चक्की पर अनाज को कूटने-पीसने के लिए एक भारी मूसल की भी जरूरत थी, जिसका पत्थर का होना अनिवार्य था, नहीं तो अनाज में बालू मिलने की आशंका थी। इस प्रकार इन पत्थरों को खोजने और इन्हें जरूरत के मुताबिक काट कर तैयार करने में मेरा बहुत समय बर्बाद हुआ। फिर भी मैंने इसका पुख्ता इंतजाम कर ही लिया। अब मैं एक ऐसी जगह की तलाश में था, जहां मैं जलावन के तौर पर कठोर लकड़ियों का भंडार बना सकूं। इसके लिए मैंने चट्टान की एक कोटर वाली जगह को चुना और वहां अथक परिश्रम करते हुए खोखला स्थान बना ही लिया, जैसे ब्राजील के लोग लंबी संकरी नाव या डोंगी बनाते हैं। उस जगह पर काफी जलावन रखने का इंतजाम हो गया। इसके बाद मैंने लकड़ी का एक बड़ा-सा भारी मूसल तैयार किया, जो लोहे से कम सख्त नहीं था। इस तरह मैंने आगामी फसल को पकने से पहले उसे सुरक्षित रखने और उसे पकाकर

खाने की तमाम व्यवस्थाएं कर लीं। साथ ही अपना खाना तैयार करने की प्रक्रिया भी सीख ली।

अब मेरी अगली मुसीबत थी एक चलनी तैयार करना, ताकि अनाज से बेकार पदार्थों को छांटकर अलग किया जा सके। बिना ऐसा किए हुए किसी भी अनाज से कुछ भी भोजन तैयार करना संभव नहीं था। यह सबसे मुश्किल काम था, एकाएक मेरे दिमाग में आया कि जहाज से लाए गए कैनवास का इस काम के लिए उपयोग किया जा सकता है। लेकिन अब तक कई महीने बीत चुके थे, तो क्या वे अब तक सुरक्षित होंगे। जो कुछ भी वहां था वह काम लायक नहीं बचा था। मेरे पास बकरियों के बाल थे, लेकिन मुझे उनकी बुनाई नहीं आती थी, जिससे चलनी तैयार हो सकती। अंतिम उपाय के तौर पर मुझे यही लगा कि जहाज से जो मैं कुछ सफेद कपड़े और मलमल साथ लाया था, उनसे ही कुछ काम निकाला जा सकता है। वैसे भी उसके कुछ टुकड़े पड़े हुए थे, जो उस काम के लिए पर्याप्त थे। इस प्रकार मैं कुछ सालों में बहुत कुछ जान गया। मैंने यह सब कैसे किया, इसे मैं उस जगह पर अभी भी दिखा सकता हूं।

अब मेरा अगला कदम भोजन को अंतिम रूप से तैयार करना अर्थात् खाना पकाने के तौर पर ब्रेड बनाने से था कि मैं किस प्रकार इस काम को अंजाम दे पाऊंगा। सबसे पहले तो मेरे पास खमीर नहीं था। वहां मेरी चाहत के अनुरूप कुछ भी नहीं था। मैंने उन सब चीजों के बारे में नहीं सोचा, लेकिन इसके लिए एक ओवन या कम-से-कम एक पैन की जरूरत तो थी ही। मैंने इस मकसद से प्रयोग के तौर पर कुछ चौड़े और उथले पीपे तैयार किए जो करीब दो फीट व्यास के थे और करीब नौ इंच गहरे थे। इन सबको मैंने आग पर चढ़ा दिया और एक के बाद एक मैं इन्हें चढ़ाता और उतारता रहा। इन्हें बेक करने के लिए मैं उन्हें एक आयताकार आग की भट्ठी में झोंकता रहा, वैसे उसे आयताकार नहीं कहा जाना चाहिए।

जब सारी लकड़ियां जलते हुए अंगारों या कोयलों में तब्दील हो

गई तो मैंने उन्हें पकाने के लिए कई बेहतर युक्तियां लगाते हुए मजबूत बनाया। यह काम तब तक जारी रहा, जब तक मैं उसकी गर्मी को बर्दाश्त कर सका। इस तरह से मैंने जमीन पर ब्रेड पकाने वाले एक अच्छे पॉट का ईजाद कर लिया, जो मेरी समझ में दुनिया का एक अनूठे किस्म का ओवन कहा जा सकता था। मैं उस बर्तन में न केवल जौ, बल्कि चावल समेत अन्य अनाज को भी पका सकता था। वैसे उस समय मेरे पास पकाने के लिए ज्यादा कुछ नहीं था। फिर भी मैं उसमें मुर्गियों एवं बकरियों का मांस तो पका ही सकता था।

मुझे इन चीजों के लिए अब ज्यादा भटकने की भी जरूरत नहीं थी, क्योंकि यहां मुझे इन सब काम को निबटाते हुए ही तीन साल बीत चुके थे। इन कामों के बीच फुर्सत के समय में मैं इस बात को समझ पाया था कि यहां मैं बहुत-सी फसलों और पशुपालन का प्रबंध कर सकता हूं। अब मक्के की फसल को तैयार होने का सीजन नजदीक आ रहा था और मैं अपनी क्षमता के अनुरूप उन्हें घर ले जाना चाहता था। अपने बड़े टोकरों को अनाज की बालियों से मैं भर देना चाहता था, क्योंकि उस समय अनाज को पीटकर उससे दाना निकालने या आटा बनाने के लिए मेरे पास कोई साधन या समय नहीं था।

अब चूंकि मेरे पास मक्के का भंडार बढ़ गया था, इसलिए मुझे बड़ा खलिहान बनाने की जरूरत थी। इसके लिए मैं किसी उपयुक्त जगह की तलाश में था, जहां पूरी फसल को इकट्ठा किया जा सके। अब मक्के की पैदावार तो बढ़ी ही थी, साथ ही तकरीबन बीस बुशेल जौ की पैदावार हुई थी। जहां तक चावल का सवाल है तो उसकी उपज भी पर्याप्त मात्रा में हुई थी। इस बार इतनी पैदावार हुई थी कि मैं भरपूर मात्रा में उससे ब्रेड समेत अन्य खाद्य पदार्थों का निर्माण करने में सक्षम था। इतना ही नहीं, अनाज की पैदावार इतनी ज्यादा हुई थी कि अब मुझे साल में केवल एक ही बार इसकी बुआई करने की जरूरत थी।

कुल मिलाकर मेरे पास चालीस बुशेल के करीब जौ और चावल का भंडार हो गया था, जो मेरे सालभर की खपत से कुछ ज्यादा ही था।

अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुंच गया था कि अब हर साल मुझे इसी तादाद में फसल को बोना चाहिए, जो मेरे सालभर की खपत के लिए समुचित होगी।

इन सब चीजों को निबटाने के दौरान, मेरे दिमाग में हमेशा यह बात घूमती रहती थी कि अब यहां से बाहर निकले हुए ज्यादा समय हो गया है। इसलिए इस द्वीप के दूसरी ओर भी जाना चाहिए क्योंकि बिना उधर गए वहां के रहस्य भी नहीं जाने जा सकते। मैं देखना चाहता था कि यहां की मुख्यभूमि किस प्रकार की है? क्या यहां मानव भी निवास करते हैं या बिलकुल ही निर्जन द्वीप है यह? अंत में यह लालसा भी थी कि यहां से अपने बचाव का भी कोई तरीका ढूंढ़ा जा सकता है या नहीं?

लेकिन इन सबमें बहुत से खतरे भी मौजूद थे, जो मुझे इस हालात में आगे बढ़ने से रोक भी रहे थे। मुझे डर था कि कहीं मैं क्रूर जंगली जानवरों के हत्थे न चढ़ जाऊं। अफ्रीका के बाघों या शेरों का ग्रास बनने जैसे बुरे हालात में भी मैं खुद को नहीं धकेलना चाहता था। मुझे इन सबकी ताकत का भलीभांति अंदाजा था कि ये कितने भयावह और घातक होते हैं, जो एकसाथ कई से निबट सकते हैं, उन्हें अपना ग्रास बना सकते हैं। मैंने यह भी सुना था कि कैरिबियाई तटों के पास रहने वाले दैत्य मानवभक्षी होते हैं, और जहां तक मेरा भौगोलिक अंदाजा था, वह जगह इस किनारे से कोई बहुत ज्यादा दूर भी नहीं थी।

तब मैंने इस ओर ध्यान देने की बजाय अपनी नौका की ओर देखा, जिसे मैं उस भटके हुए जहाज से निकालकर लाया था। जैसा कि मैं पहले ही बता चुका हूं, वह नौका तूफान में भटकते हुए इस किनारे तक आई थी, जिस किनारे पर मुझे लाकर पटक दिया गया था। वह बिलकुल उसी तरह से वहां पड़ी हुई थी, जैसी वह पहले थी। लहरों के आवेग तथा हवा के तेज बहाव से वह बालू में उलटकर धंस गई थी, लेकिन पहले की तरह उसमें कहीं भी पानी नहीं था।

उस पलटी हुई नाव की यदि मैं मरम्मत करके उसे फिर से पानी में डालने में सक्षम हो सकता तो उससे मैं आसानी से ब्राजील के लिए

रवाना हो सकता था। इस प्रकार मुझे इस द्वीप से निकलने का साधन मिल सकता था। लेकिन उसकी मरम्मत करना इतना आसान काम नहीं था। चूंकि नाव पूरी तरह से पलटी हुई थी, वह इतनी ज्यादा क्षतिग्रस्त हो गई थी कि बिना किसी की मदद के उसे उठाकर ठीक तरह से सीधा करना तो मुश्किल ही था। अकेले उसकी मरम्मत कर पाना भी मेरे बस में नहीं था। हालांकि मैं जंगल की ओर गया और वहां नाव की मरम्मत के मुताबिक जितनी लकड़ियां जुटा सकता था, उतनी जुटाई भी। यदि मैं उसे उठाकर सीधा कर पाता तो उसकी मरम्मत करने की बात सोच सकता था, क्योंकि वह अभी भी एक अच्छी नौका थी। उसके द्वारा मैं आसानी से समुद्र को पार कर सकता था।

बिना किसी विशेष तकलीफ के मैंने इस काम को तन्मयता से शुरू कर दिया और सोचा कि तीन या चार सप्ताह में इस काम को अंजाम दिया जा सकेगा। लेकिन सीमित शक्तियों को देखते हुए मुझे यह काम असंभव-सा प्रतीत हो रहा था, परंतु मैंने अपनी ओर से प्रयास नहीं छोड़ा। उसे सीधा करने के लिए मैं उसके नीचे की बालू को खोदकर हटाने लगा, उसके नीचे लकड़ी के गट्ठर का टेक लगाने लगा ताकि वह उलटी तरफ न गिर जाए।

लेकिन जब मैंने यह काम पूरा कर लिया तो अपनी सीमित ताकत को देखते हुए उसे ठीक तरह से खड़ा नहीं कर पाया ताकि उसे पानी तक खींच कर ले जा सकूं। इसलिए मैंने स्वयं को अकेले इस काम को कर पाने में असमर्थ पाने पर इस नौका को अपनी जरूरत के काम लायक बनाने के इरादे को त्याग दिया।

अब मैं यह सोचने को मजबूर हो गया कि क्या मेरे लिए एक छोटी नौका या डोंगी को तैयार कर पाना संभव है, जिसे इन हालात में तैयार किया जा सके—यहां तक कि मेरे पास इसके लिए कोई साधन भी नहीं था। मैंने सोचा कि किसी बड़े पेड़ के मोटे से तने को काटकर इसे बनाया जा सकता है।

और मैं एक बेवकूफ आदमी की तरह इस काम में जुट गया। मैं

मैंने सोचा कि किसी बड़े पेड़ के मोटे से तने को काटकर नाव को बनाया जा सकता है और मैं इस काम में जुट गया।

समझता भी था कि कोई भी समझदार आदमी ऐसा नहीं करता। मैं मन-ही-मन उसका डिजाइन बनाते हुए खुश हो रहा था, जबकि मैंने अब तक यह भी निर्धारित नहीं किया था कि आखिरकार यह मुश्किल काम कैसे होगा। मैं अपने इस कठिन काम में भिड़ने के लिए तैयार था। मन में उठ रहे तमाम सवालों को विराम देते हुए केवल एक ही बेवकूफी भरा जवाब निकाला, 'जो भी हो, जैसे भी हो, मुझे यह काम शुरू करना है और मैं किसी-न-किसी तरह इसे अंतिम रूप दूंगा।'

मैंने एक देवदार के वृक्ष को काटकर गिराया—मैंने सोचा कि 'सोलोमन ने कैसे इसे काटकर येरूशलम में मंदिर का निर्माण किया होगा!' निचले हिस्से में इस तने का व्यास पांच फीट दस इंच था, जबकि ऊपरी हिस्से का व्यास चार फीट ग्यारह इंच और इसकी लंबाई बाईस फीट थी, जिसके बाद यह दो शाखाओं में बंटा हुआ था। यदि मैं कड़ा परिश्रम नहीं करता तो कतई इस पेड़ को नहीं काट पाता। इसे जड़ से काटने में मुझे बीस दिन का समय लगा था। इसे कुल्हाड़ी से पूरी तरह से साफ करने और उसकी डालियों, झाड़ियों और पत्तों को साफ करने में मुझे चौदह दिनों तक कठोर परिश्रम करना पड़ा था। इसके बाद उसे नाव का आकार देने और उसके मुताबिक डिजाइन तैयार करने में एक माह का समय लगा। उस दौरान मैंने उसे न केवल पूरा आकार दिया बल्कि समानुपातिक ढंग से उसका निर्माण किया ताकि एक सटीक नाव को तैयार किया जा सके। इस पूरे काम में मैंने लकड़ी के हथौड़े समेत तमाम जरूरी चीजों के वैकल्पिक साधनों का सहारा लिया था, जिसके कारण मुझे अथक परिश्रम करना पड़ा था।

इस काम के लिए इस्तेमाल में आने वाला सभी सामान पानी में डूब चुका था इसलिए मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी थी। यह बन तो गया, लेकिन यहां से पानी तकरीबन सौ गज की दूरी पर था और सबसे ज्यादा कष्टकारी बात यह थी कि उधर की ओर जाने वाला दर्रा यहां से अपेक्षाकृत ऊंचाई पर स्थित था, इसलिए उसे यहां से घसीटकर ले जाना मुमकिन नहीं था, इस वजह से मैंने वहां से जमीन की खुदाई कर उसे

नीचे की ओर धकेलते हुए ले जाने की योजना बनाई, ताकि ढाल की ओर उसे आसानी से धकेला जा सके। मैंने इस काम की शुरुआत तो कर दी लेकिन यह बहुत ही कष्टदायी कार्य था। लेकिन मैं इस दर्द को किसके साथ बांट सकता था, और कौन था जो मेरे काम में हाथ बंटा सकता था। लेकिन जब काम होने लगा और मैंने कठिनाइयों पर काबू पा लिया तो मैं खुद पर इतरा रहा था कि चलो कम-से-कम यदि मैं इस डोंगी को यहां तक ला सका तो अब दूसरी नाव भी तैयार कर पाऊंगा।

तब मैंने वहां जमीन को नापा और खोदी गई उस नहर को चीरते हुए डोंगी तक पानी लाने की जुगत में जुट गया। मैंने अंदाजा लगाया कि इसके लिए कितनी गहराई तक कितना चौड़ा इसे खोदना होगा, इसके साथ ही, इस काम में सहायक तमाम चीजों का भी मैंने आकलन किया। मुझे लगा कि इसका किनारा तकरीबन बीस फीट ऊंचा है, इसलिए मुझे कम से कम इतनी गहराई तक तो खोदना ही होगा। इस प्रकार सभी चीजों का आकलन करने के बाद मैं फिर से अपने इस कार्य में पूरे जी-जान से जुट गया।

इस काम ने मेरे हृदय को पूरी तरह से व्यथित कर दिया कि आखिर मैं किस तरह की मूर्खतापूर्ण चीजों को निबटाने में लगा हूं। इसमें कितनी मेहनत करनी होगी, इस बात को समझे बिना मैं इस काम में जुटा हुआ था। मुझे नहीं पता कि इसका नतीजा क्या निकलने वाला था, लेकिन मैं अपनी पूरी ताकत के साथ इस काम में जुटा हुआ था।

इस काम को करते हुए मुझे आभास हुआ कि यहां पर मेरा यह चौथा साल गुजर रहा है। मैं पूरी निष्ठा के साथ अपने काम में जुटा रहा। मैं ईश्वर का ध्यान करते हुए और उसकी कृपा और सहयोग से दिल की गहराई से अपने इस कार्य में जुटा रहा। इस तरह पूरी मेहनत का यह नतीजा रहा कि मैं इस तरह के सभी काम करना जान गया और इन कार्यों में मैंने महारत हासिल कर ली। अब मैं इस तरह के असंभव से लगने वाले कामों को करने में पूरी तरह से कुशल हो गया था।

□□

अध्याय-8

वस्तुओं का अभाव

मुझे इस समुद्र के किनारे पर रहते हुए इतना लंबा समय बीत गया था कि मेरे पास जितनी भी चीजें थीं सब धीरे-धीरे बर्बाद हो रही थीं या जिनको मैं उपयोग में ला रहा था वे खत्म होती जा रही थीं।

जहां तक मैं देख रहा था, मेरी स्याही भी खत्म होने के कगार पर थी। अभी तक तो मैं उसमें पानी मिलाकर काम चला रहा था, लेकिन अब ज्यादा पानी मिलाना भी ठीक नहीं था क्योंकि तब उससे लिखे जाने वाले अक्षर कागज पर पढ़े नहीं जा सकते थे। मैं इस प्रयास में था कि जब तक संभव हो, तब तक मैं दिनों की गणना करता रहूं और अपने साथ होने वाली तमाम उल्लेखनीय चीजों का रिकॉर्ड रखूं। मुझे याद है कि कई बार मेरे साथ विचित्र तरह की घटनाएं भी हुईं। मैं कुछ मामलों में बहुत अंधविश्वासी भी था और उनका मतलब खोजता था कि यह घटना क्या मेरे लिए मंगलकारी हो सकती है या घातक। मैं बड़ी ही उत्सुकता से उन चीजों के कारणों को समझना चाहता था।

जहां तक मैंने आकलन किया कि मैं अपने पिता और दोस्तों से बिछड़ते हुए काफी दूर चला आ गया था। कहा जाए तो मैं ह्यूल से समुद्र को देखने के लिए भागा था, उसके बाद सेल्ले पहुंचा और वहां से एक दास को अपने साथ लिया।

यारमाउथ रोड में उस साल, जब जहाज दुर्घटनाग्रस्त हुआ था, जिसमें मैं किसी तरह से बच गया था, उस दिन के बाद से मैं सेल्ले से छुटकारा पाने के लिए नाव में सवार हुआ था।

साल के उसी दिन को मेरा जन्म हुआ था—30 सितंबर को। छब्बीस

सालों के बाद बड़े ही चमत्कारिक रूप से नियति ने मुझे इस द्वीप पर धकेल दिया था और इस प्रकार यहां पर मेरे एकांतवास एवं बुरे दिनों की शुरुआत हुई थी।

अगली वस्तु जो खत्म होने की कगार पर थी, वह उस जहाज पर से लाए गए बिस्कुट थे। इन्हें मैंने आपातकालीन स्थितियों में इस्तेमाल के लिए आखिरी समय तक बचाकर रखा था, लेकिन जब मैंने खुद ब्रेड बनाना और उसे बेक करने का साधन जुटा लिया और उसे सीख लिया तो उसे बचाए रखने का कोई कारण नहीं था, इसलिए मैं उन्हें खाने लगा। मैं ईश्वर का आभारी हूं कि उसने मुझे इतनी चीजें मुहैया कराई थीं और इन सब चीजों को हासिल करना भी अपने आप में किसी चमत्कार से कम नहीं था।

मेरे तमाम कपड़े भी चीथड़े होने लगे थे और गलने लगे थे। लिनेन के कपड़े तो बिलकुल ही गल चुके थे, वैसे मेरे पास कुछ चेकर्ड कमीजें भी थीं, जिन्हें मैं नाविकों के संदूकों में से लाया था और जिन्हें मैंने बड़े ही करीने से संजोकर रखा था, क्योंकि मैं ज्यादातर समय केवल एक कमीज के अलावा और कुछ नहीं पहनता था और इस तरह से उस जहाज के तमाम आदमियों के कपड़ों ने मेरी बहुत सहायता की, कुल मिलाकर वो तीन दर्जन कमीजें तो रही ही होंगी। नाविकों के पास कुछ मोटे कोट भी थे, जिन्हें मैं लेकर आया था, लेकिन यहां इतनी गर्मी थी कि उनकी कोई जरूरत नहीं महसूस हुई। फिर भी मैं यहां कभी नंगा तो नहीं ही रहा था।

मैं यहां कभी नंगा नहीं रहा था, इसकी एक बड़ी वजह यह भी थी कि यहां सूरज की गरमी को झेलना मेरे लिए बहुत मुश्किल था और जब मेरे पास इतने कपड़े मौजूद थे तो फिर ऐसा करने का कोई मतलब भी नहीं था। मैं हमेशा ही हवादार कमीज को पहनता था, ताकि गर्म हवाओं से शरीर की रक्षा की जा सके। कई बार तो मैं इसे दो बार मोड़ करके भी पहनता था, ताकि मेरे शरीर की ठंडक बरकरार रहे। इतना ही नहीं, बिना टोपी या हैट के मैं कभी भी धूप में बाहर नहीं निकलता था,

क्योंकि यहां सूरज की बहुत तेज धूप थी। इस जगह की भौगोलिक दशा भी ऐसी थी कि सूरज सीधे सिर के ऊपर ही होता था और इससे सिर में दर्द होने की आशंका रहती थी। इसलिए बिना टोपी के बाहर निकलना बहुत ही मुश्किल था।

उपरोक्त चीजों पर विचार करने के बाद मैंने अपने पास बचे हुए कुछ चिथड़ों को, जिन्हें मैं कपड़े कहता था, व्यवस्थित करते हुए पहनने का प्रयास किया। मैंने सभी पुरानी कुर्तियों को भी निकाला, जो मेरे काम की नहीं थीं और अब मैं इस तरह के सभी जैकेट और सामानों को निकाल लेना चाहता था, जो मैं उस जहाज पर से निकाल कर लाया था। उन सभी की सिलाई और मरम्मत करने की भी जरूरत थी और यह काम बहुत ही उबाऊ था। हालांकि मैंने दो या तीन कुर्तियों की सलीके से सिलाई का काम किया, जिससे मुझे यह उम्मीद बंधी थी कि इनका बहुत समय तक उपयोग कर पाऊंगा। जहां तक मुझसे बन पड़ा मैंने इनका जांघिया और पायजामा बनाया ताकि किसी न किसी रूप में इनका इस्तेमाल करता रहूं।

मैंने जिन जानवरों को मारा था उनकी खाल को बचाकर रखा था, अर्थात् चार फीट की एक खाल तैयार थी, जिसे मैंने लकड़ी पर टांग रखा था, सूरज की गर्मी से सूखकर वह कड़ी भी हो चुकी थी। उनमें से कुछ छोटी आकार की तो इतनी सख्त हो गई थीं कि मेरे लिए बहुत उपयोगी हो सकती थीं। उन चीजों से सबसे पहले मैंने अपने लिए एक टोपी बनाई, ताकि बारिश में भीगने से बचाव हो सके और मैंने उसकी उपयोगिता के मुताबिक कुछ खाल को शरीर पर कपड़े की तरह पहनने के लायक भी बनाया–जिसे देखकर यह कहा जा सकता है कि वह घुटने तक का पायजामा और कुर्ती है और ये दोनों ही इतने ढीले थे कि गर्मियों में मेरे शरीर को ठंडा रखने में मददगार साबित होते। मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि वे खुरदरे थे, चूंकि मैं उसे बनाने वाला अच्छा जानकार नहीं था, और न ही मैं एक अच्छा दर्जी था, अन्यथा उन चीजों से बहुत अच्छी पहनने लायक पोशाकें बनाई जा सकती थीं। जब

मैं बाहर जाता था, तो बारिश होने पर, मेरी कुर्ती के रोएं और टोपी भीग जाती थी, जिसे सूखा रखना होता था।

इन सबके बाद मुझे अपने लिए एक छाता बनाना था। इसे बनाने में बहुत समय लगा और तकलीफ भी हुई। असल में मुझे उनमें से एक की जरूरत थी और मेरे दिमाग में उसे बनाने का बड़ा आइडिया भी था। मैंने ब्राजील में उसे बनाते हुए देखा था, जहां भयंकर गर्मियों में वे बेहद उपयोगी साबित होते थे। विषुवत रेखा से नजदीक होने के कारण यहां उससे भी ज्यादा गर्मी पड़ती थी। वैसे भी यहां बारिश और गर्मी, ये दो मौसम ही ज्यादा दिन रहते थे, ऐसे में यहां पर ये बेहद उपयोगी थे। मैंने अब तक जितना दर्द झेला था, उसे देखते हुए मेरे भीतर कष्टसाध्य कार्यों को निबटाने और दर्द को सहने की आदत-सी पड़ गई थी, इसीलिए मैं किसी तरह से उसे भी तैयार करना चाहता था। हालांकि इसकी तैयारी के दौरान कुछ हद तक ये बर्बाद भी हुए, लेकिन अंततः मुझे कामयाबी हासिल हुई और जैसा कि मैंने पहले भी बताया था, मुझे मेरे कई सवालों का जवाब मिल गया था।

मैं यह नहीं कह सकता कि इसके बाद, पिछले पांच सालों के दौरान, किसी तरह की कोई असाधारण घटना हुई, किंतु मैं उसी स्थान पर, उसी दशा में अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। इस दौरान मैं अपनी दिनचर्या के मुताबिक सालों से जौ और चावल की खेती और अपने किशमिश के जमा हो चुके भंडार की देखरेख करने के अलावा एक और खास काम जो मैं कर रहा था, वह था अपने लिए एक डोंगी का निर्माण। मैं रोजाना अपनी बंदूक को साथ में रखते हुए अथक परिश्रम से डोंगी के निर्माण में जुटा था, जिसे अंततः मैंने पूरा करके ही दम लिया और उसे दर्रे में प्रवेश कराने के लिए तकरीबन एक मील की दूरी तक छह फीट चौड़ी और चार फीट गहरी नहर की खुदाई कर डाली।

इधर, मेरी छोटी से डोंगी तैयार हो चुकी थी, हालांकि इसका आकार कोई ज्यादा बड़ा नहीं था, लेकिन उसका डिजाइन पूरी तरह से व्यवस्थित था। पहली बार जब मैंने उसे बनाना शुरू किया था तो मैं इस बात को

लेकर कतई आश्वस्त नहीं था कि यह इतनी अच्छी बन पाएगी। अब मेरा अगला कदम इस छोटी-सी नौका पर बैठकर इस द्वीप का दौरा करना था और इसके दूसरे भाग को देखना था, लेकिन वह इतनी छोटी थी कि उस पर ज्यादा सामान रख पाना मुमकिन नहीं था। जैसा कि मैं पहले ही बता चुका हूं कि मैंने एक छोटी-सी यात्रा के दौरान उस ओर के मनोहारी दृश्यों को देखा है, जिन्हें अच्छी तरह से देखने और समझने की लालसा अब भी मेरे मन में हिलोरें मार रही थी। परंतु नाव से द्वीप के उस भाग पर जाने से पहले मैं यहां सारे इंतजाम पूरे कर लेना चाहता था और पूरी तैयारी के साथ ही वहां जाना चाहता था।

इस मकसद से मैंने इसके तमाम पहलुओं पर विचार किया और अंत में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि अपनी इस छोटी-सी नौका पर सभी जरूरी चीजों को रखकर इस दौरे पर निकला जा सकता है। नौका में हथियार को बारिश से बचाने के उपाय के तौर पर किसी चीज से उसे ढंकना भी बहुत जरूरी था, इसलिए नौका में ही एक जगह को खोखला करके उस लायक स्थान बनाया, जहां मेरे हथियार गीले होने से बचाए जा सकते थे।

गर्मी और बारिश से बचाव के लिए मैंने अपने लिए एक छाता भी बनाया था, जिसे मैं अपने सिर पर रखकर खड़ा हो गया। और इस प्रकार से एक छोटे से दर्रे में डोंगी को पानी में प्रवाहित करने के साथ मेरी यह एक अलग तरह की समुद्री यात्रा की शुरुआत हो चुकी थी। लेकिन मेरा मकसद एक तय सीमा के भीतर ही रहना था, जो मेरे छोटे से साम्राज्य के दायरे में आता हो।

मैंने अपनी इस समुद्री यात्रा की तैयारी करते समय अपने साथ कई चीजें रखी थीं, जिनमें प्रमुख रूप से जौ के आटे से बने दो दर्जन केक, एक पक्के घड़े में पूरा भरा हुआ भूना चावल था, जो मेरे खाने के लिए पर्याप्त था। एक बोतल रम, थोड़ा बकरी का मांस, पाउडर, किसी को मारने के लिए गोली तथा दो बड़ी कुर्तियां थीं, जिनका मैं पहले भी उल्लेख कर चुका हूं, जिन्हें मैंने नाविकों के संदूकों से निकाला था,

मैंने अपने लिए एक छाता भी बनाया था, जिसे मैं अपने सिर पर रखकर खड़ा हो गया।

संभाल कर रख लिया था–इनमें एक दिन में पहनने के लिए और एक रात में पहनने के लिए थी।

इस अजनबी धरती पर मेरे पदार्पण के छह साल बाद छह नवंबर को मैंने इस समुद्री यात्रा की शुरुआत की थी। जितना कि मैं उम्मीद कर रहा था, यह उससे कहीं ज्यादा लंबी थी। मैं समझता था कि यह द्वीप कोई ज्यादा बड़ा नहीं होगा, क्योंकि जहां मैं ठहरा था वह एक पहाड़ का उभरा हुआ हिस्सा था। समुद्र से कुछ ऊपर और कुछ उसमें तकरीबन छह मील की दूरी तक था। उसके आगे छिछली बालू थी, जो करीब डेढ़ मील तक बिखरी हुई थी। इस प्रकार मुझे समुद्र तक पहुंचने के लिए ज्यादा दूरी तय करनी पड़ी थी।

पहली बार जब मैं इस स्थान पर पहुंचा था तो मैं बड़े ही साहस से अपने हितों की पूर्ति के लिए जुटा हुआ था। उस समय मुझे इसकी दूरी का कोई खयाल नहीं आ रहा था और मुझे कभी भी यह आशंका नहीं हुई कि मैं यहां तक कैसे वापस आऊंगा। नाव को अपने नियंत्रण में रखने के लिए मैंने उस जहाज से लाई गई टूटी हुई सामग्रियों का इस्तेमाल करते हुए एक लंगर भी बनाया।

अपनी नाव को पूरी तरह से सुरक्षित करते हुए, मैंने अपनी गन पकड़ी और किनारे की ओर निकल पड़ा। इस प्रकार मैं वहां पूरी दृढ़ता तथा साहस के साथ पर पहाड़ पर चढ़ने लगा।

पहाड़ की ऊंचाई पर खड़े होकर मैंने जब नीचे समुद्र की ओर झांका तो एक मजबूत, और सच कहा जाए तो, बहुत ही भयानक तरंग दिखाई दी, जो पूरब दिशा से दौड़ती हुई उसी ओर आ रही थी। जहां तक मैं इस घटना को समझ पाया था, मैं आसन्न खतरे को भांप गया था। मैं समुद्र की शक्ति को जानता था। मुझे लगा कि मैं शायद यहां से वापस नहीं लौट पाऊंगा। सच में, यदि मैं पहले इस ओर आया होता तो मुझे विश्वास होता कि यह वाकई इतना बड़ा होगा। वहां भी धारा द्वीप के दूसरे किनारे की तरह ही थी, केवल वहां दूरी ज्यादा थी। अब जहां तक मैंने देखा, वहां किनारे पर एक मजबूत भंवर भी बना हुआ था। लिहाजा सबसे

पहले मुझे वहां से किसी भी तरह से खुद को सुरक्षित निकाल लेना था, वरना मैं उस समय उस भंवर में फंसा होता।

मैंने वहां दो दिन गुजारे, क्योंकि वहां दक्षिण–पूरब की ओर से ताजी हवा बह रही थी। यह समुद्र की धारा के ठीक उलटी थी, जिसने समुद्र में उस बिंदु से एक उथल–पुथल पैदा होने का एहसास कराया था। इसलिए उस समय मेरा किनारे पर जाना उचित नहीं था, क्योंकि उथल–पुथल भरी वह धारा किनारे से कोई ज्यादा दूरी पर नहीं थी।

तीसरे दिन, पूरी रात हवा के चलने के बाद सुबह समुद्र बिलकुल शांत नजर आ रहा था और मैं साहस से आगे बढ़ता रहा। कुछ ही दूर चलकर मुझे दोबारा से एक चेतावनी मिली, लेकिन एक अनुभवहीन पायलट के तौर पर मैं बिना देरी किए किनारे की ओर तेजी से पहुंचना चाहता था। परिणामस्वरूप मैंने खुद को गहरे पानी में पाया। वहां पानी की धारा इतनी तेज थी कि जहां से निकल पाना मुश्किल लग रहा था। मैं उसकी धारा के साथ बहा जा रहा था। वह इतनी प्रचंड थी कि मैं चाहकर भी किनारे की ओर नाव का रुख मोड़ने में नाकाम हो रहा था। मैं खुद को उस भंवर से काफी दूर ही रखना चाहता था, जो कि मेरे बाईं ओर था। उस समय हवा भी नहीं चल रही थी, ताकि उसकी मदद ली जाती। अब मैं अपनी डोंगी के सहारे कुछ भी कर पाने में असमर्थ साबित हो रहा था। अब मेरा नियंत्रण खोने लगा था, मुझे मालूम हो गया था कि द्वीप के दोनों ओर धारा का प्रवाह तेज था। मैं अब भी कुछ मील की दूरी पर था, मेरा अनुमान था कि आपस में जरूर ये कहीं मिलती हैं। इन हालातों को काबू कर पाना अब मेरे बस में नहीं रहा था, इसलिए अब मेरी नियति मुझे मौत की ओर ले जा रही थी। इसमें समुद्र का योगदान कम था, क्योंकि वह बिलकुल शांत था। वहां मैंने किनारे पर एक कछुआ देखा, जो इतना भारी था कि उसे उठाकर लाना मुश्किल था। मैं अपने साथ खाने–पीने की जितनी सामग्री लाया था, वे सभी खत्म हो चुके थे और यदि विपरीत दिशा की ओर मैं नाव लेकर बढ़ता तो तय मानिए कि उधर दूर–दूर तक केवल समुद्र था। कोई किनारा होने की

गुंजाइश नहीं थी और हजारों मील तक न ही किसी द्वीप, न ही किसी मुख्यभूमि के होने की संभावना मुझे नजर आ रही थी!

यहां मुझे अनुभव हुआ कि कैसे ईश्वर अपनी कृपा से मानवजाति की इच्छित मांग को पूरी करते हैं और वह भी इन खराब परिस्थितियों में। अब मैं अपने द्वीप के उस हिस्से में सही-सलामत पहुंचने की ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था, जो इस दुनिया से अलग-थलग था, जहां पर मैंने अपने लिए एक सुरक्षित और आनंददायक घर बना रखा था।

जैसे ही मैं नाव को पानी में लेकर आगे की ओर बढ़ा और नाव पानी पर तैरना शुरू हुई, इतने में ही मैंने उस साफ पानी में स्पष्ट तौर पर बढ़ती आ रही धारा को देखा। जहां यह धारा बहुत आक्रामक थी, वहां पर पानी तेजी से नीचे की ओर गिर रहा था, लेकिन वह पानी साफ दिखाई दे रहा था। इससे मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि इससे नुकसान नहीं होगा और फिलहाल मैं समुद्र में चट्टानों की दरार से आधा मील दूर पूरब दिशा की ओर बढ़ रहा हूं। जहां तक मैं समझ पाया, ये चट्टान ही इस धारा को दो भागों में बांटती थी और इसका जोर दक्षिण की ओर ज्यादा था। पूर्वोत्तर की चट्टानों को छोड़कर वहां की भौगोलिक स्थिति इस तरह से थी। उसी वजह से वहां एक बड़ा भंवर पैदा हो गया था, जो एक तीव्र धारा के साथ उत्तर-पश्चिम की ओर दोबारा मुड़ रहा था।

यह भंवर मुझे अपने रास्ते से विपरीत दिशा की ओर तकरीबन तीन मील पीछे धकेलता हुआ ले गया। लगभग छह मील की दूरी तक मैं उत्तर की ओर धारा के साथ बहता रहा। इस तरह मैंने खुद को उस द्वीप पर उत्तर की ओर जाते हुए पाया। अब मैं उस द्वीप पर अपनी रिहाइश की बिलकुल विपरीत दिशा की ओर पहुंच गया था।

इस धारा या भंवर की सहायता से जब मैं तीन मील से ज्यादा दूर भटक गया तो मुझे लगा कि मेरे लिए यह बहुत महंगा पड़ने वाला है। हालांकि मैंने इन दोनों ही बड़ी धाराओं के मध्य, जिनमें एक तो दक्षिण की ओर थी तथा एक उत्तर की ओर, खुद को दूसरी ओर तीन मील भटका हुआ पाया। इसके दोनों ही ओर द्वीप का विस्तार था और मैंने वहां

कुछ हद तक पानी देखा। वहां की हवा इतनी ताजा और मंद थी कि मैं उसी ओर मुड़ गया, सीधे नाव खेते हुए, तथा द्वीप के उस किनारे की तरफ बढ़ता रहा।

शाम को तकरीबन चार बजे उस द्वीप में करीब तीन मील भीतर जाने के बाद मैंने उन चट्टानों के केंद्र बिंदु को देखा, जो वाकई उस आपदा के लिए जिम्मेदार था, जिसका वर्णन मैं पहले ही कर चुका हूं। इन्हीं चट्टानों के लहरों के टकराने से समुद्र में भंवर पैदा हो रहा था। वही यहां की धारा को दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर मोड़कर खतरनाक बना रहा था। वैसे मुझे उस ओर जाने की जरूरत नहीं थी, लेकिन मैं अपने अभियान के तहत खोज को जारी रखना चाहता था। खैर, हवा का एक झोंका आया और मैं उस भंवर को पार करते हुए पश्चिम-उत्तर की ओर मुड़ गया। तकरीबन एक घंटे के भीतर मैं किनारे से एक मील की दूरी तक पहुंच गया था, जहां बिलकुल शांत जल प्रवाहित हो रहा था। मैं शीघ्र ही जमीन की ओर पहुंचने वाला था। जब मैं किनारे पर पहुंचा तो मैंने अपने घुटनों के बल बैठते हुए ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने मुझे आज एक बड़ी विपत्ति से बाहर निकाल दिया। मैं अपनी नौका को किनारे पर एक छोटे से छायादार दर्रे की ओर ले आया ताकि वहां वृक्षों की छांव में आराम कर सकूं। अत्यधिक श्रम और थकान होने के कारण मैं वहां सो गया।

अब मैं जिस राह पर निकल पड़ा था, वह मेरे लिए बहुत ही नुकसानदेह साबित हो रही थी। मैंने अब तक इतनी दूरी तय कर ली थी कि मुझे रास्ते का अनुमान नहीं हो रहा था। अब यहां से किसी भी तरफ बढ़ने का साहस मुझमें नहीं रहा था। मैं नहीं जानता था कि इस द्वीप को पैदल पार करते हुए मैं अपनी रिहाइश की ओर किधर जा सकता हूं, इसलिए मैंने ज्यादा साहस दिखाना उचित नहीं समझा। वैसे वहां आसपास कोई खाड़ी भी नहीं थी, जहां मैं अपनी नौका को सुरक्षित रूप से टिका पाता। इसलिए मेरे पास फिलहाल वहां ठहरने के अलावा और कोई चारा नहीं था। समुद्र के किनारे से तकरीबन तीन मील अंदर

आने पर मैं वहां पहले की बजाय अच्छे स्थान पर आ गया था। यहां कई चीजें मेरे अनुकूल नजर आ रही थीं। सबसे अच्छी बात यह थी कि यहां पर मेरी नाव के लिए एक अनुकूल हार्बर मुझे दिखाई दिया। यहां उसे एक छोटे से डॉक पर खड़े करने की जगह का चयन भी मैंने कर लिया। इस तरह से अपनी नौका को यहां सुरक्षित टिकाकर मैं किनारे की ओर यह पता करने के लिए चल दिया कि आखिरकार मैं कहां पहुंच गया हूं और आगे मुझे क्या करना है।

मैंने शीघ्र ही इस बात का अंदाजा लगा लिया कि मैं अभी ठीक उस स्थान के निकट हूं, जहां सालों पहले मैं पैदल ही किनारे-किनारे घूमने के मकसद से द्वीप का मुआयना करने निकला था। वहां इतनी ज्यादा गर्मी थी कि उससे बचने के लिए मैं नाव में से छतरी तथा अपनी गन निकालकर पैदल आगे की ओर बढ़ा। थोड़ी दूर चलने पर मुझे पक्का यकीन हो गया कि मैं सही दिशा की ओर बढ़ रहा हूं। इस तरह चलते-चलते मैं वापस अपने घर के पास पहुंच गया, जहां मैंने अपनी रोजमर्रा की तमाम चीजें जुटा रखी थीं। सचमुच में उस दौरान वह मेरा अपना देश, अपना घर ही तो था।

अपने घर के पास पहुंचते ही मैंने घेरे को फांदा और घर के आगे बने अहाते में कूद गया। अब तक मैं काफी ज्यादा थक चुका था, इसलिए मैं गहरी नींद में सो गया। यदि आपने मेरी कहानी पढ़ी हो तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सोते हुए मैंने अपने कानों में किसी को मेरा नाम पुकारे जाने की आवाज सुनी, "रॉबिन, रॉबिन, रॉबिन क्रूसो! अरे रॉबिन क्रूसो!! तुम कहां हो, रॉबिन क्रूसो? तुम कहां हो? तुम कहां चले गए थे?"

❑❑

अध्याय-9

मनुष्य के नंगे पैरों के निशान

यात्रा की थकान से मैं गहरी नींद में सो गया था। इस तरह किसी के बुलाने की आवाज पर पहले तो मेरा ध्यान नहीं गया। लेकिन गौर से सुनने पर लगा कि वाकई कोई मुझे पुकार रहा है। उस समय मैं अर्ध-जाग्रत अवस्था में था। मुझे स्वप्न का भी आभास हो रहा था कि फिर दोबारा से वही आवाज आई, "रॉबिन क्रूसो! रॉबिन, रॉबिन क्रूसो!" अब मैं भयभीत होने के साथ पूरी तरह से सचेत हो गया और सतर्कता बरतने के उपाय सोचने लगा। जैसे ही मैंने अपनी आंखें खोलीं तो देखा कि मेरा पॉल बाड़ के ऊपर बैठा हुआ है। मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि वही इसी विलापी भाषा में मुझे पुकार रहा है—जैसा कि मैंने उसे बोलना सिखाया था। अब वह उसमें पूरी तरह से दक्ष हो गया था; वह मेरे हाथ की उंगलियों पर आकर बैठ गया और मेरे चेहरे के पास आकर जोर से बोलने लगा, "रॉबिन क्रूसो, रॉबिन, रॉबिन क्रूसो," इस तरह मेरे द्वारा सिखाई गई सभी बातों को वह दोहराने लगा।

फिर भी, मैं यह जानकर भी समझ नहीं पा रहा था कि आखिरकार तोता कैसे इस तरह से बोल सकता है। वैसे मेरे लिए यह बहुत अच्छा था। मैं यह देखकर अचंभित था कि वह तोता मेरी अनुपस्थिति में भी कहीं नहीं गया था। उसने वह जगह नहीं छोड़ी थी, जहां मैं उसे रखकर गया था। वह वहीं पर था। खैर, यह समझ कर मेरी जान में जान आई कि चलो यह और कोई नहीं, बल्कि मेरा पॉल था। वह अभी भी मेरे हाथ पर बैठा था और एक सामाजिक प्राणी की तरह मेरे अंगूठे पर बैठकर मुझसे लगातार बातें करने में मशगूल था, "रॉबिन क्रूसो, रॉबिन, रॉबिन क्रूसो!"

इस तरह वह मुझे देखकर और मैं उससे बातें करके दोनों ही बहुत खुश थे, इसलिए मैं उसे अपने साथ घर के अंदर लेकर चला गया।

अगले कुछ दिनों तक मैं समुद्र की तरफ नहीं गया। मैं कुछ आसन्न खतरों को भांपकर आशंकित रहने लगा तथा मेरे भीतर डर समा गया था। मैं यहां अपने एकांतवास के दौरान एक निहायत गंभीर एवं शांत जीवन जीने लगा था। उस अवकाश प्राप्त व्यक्ति की तरह, जो अपनी सुविधा की सारी चीजें जुटा लेने के बाद और कुछ नहीं करना चाहता—उन्हीं का उपयोग करते हुए एक स्थिर जिंदगी गुजारने लगता है। वैसे मैं इस जिंदगी से खुश तो वाकई में था, किंतु समाज से दूर होना मुझे अखरता भी था।

इस दौरान मैंने कई मैकेनिकल कामकाज सीख लिए थे, जो मेरी जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक थे। समय ने मुझे कई चीजों के अलावा एक अच्छा बढ़ई भी बना दिया था। इसके अलावा, मैं उन सब चीजों को बनाने में पूर्णतया दक्ष हो गया था, जो मेरे बैठने, सोने और रोजमर्रा के कामों के लिए जरूरी थे। मैं चीजों को पहले से ज्यादा, आसानी से और बेहतर बनाना सीख गया था, क्योंकि मैं उन्हें गोल और चौकोर आकार देने में माहिर हो गया था, जो अब देखने में सचमुच ही बहुत सुडौल लगते थे। इतना सबकुछ आने के बावजूद मैं अपने प्रदर्शन से पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हो पाया था, क्योंकि मुझे अभी तक तंबाकू-पाइप बनाने की कला नहीं आई थी। पहले मैं कई बार उसे बना चुका हूं, लेकिन वह इतना बेडौल एवं भद्दा बनता है कि मुझे उसमें तंबाकू पीने में मजा नहीं आता। मुझे उस क्षतिग्रस्त जहाज में रखे पाइप में ही तंबाकू पीना अच्छा लगता था। उस समय मैंने एक भूल की थी कि चीजों को जहाज पर से समेटते समय मैं उस पाइप को अपने साथ नहीं ला पाया था। मुझे यह अंदाजा नहीं था कि द्वीप पर तंबाकू मिलेगा भी या नहीं। और दोबारा वो मुझे जहाज पर मिला भी नहीं।

मैंने खुद वहां कई अन्वेषण भी किए। अपनी जरूरतों के मुताबिक खपच्चियों को इस्तेमाल करते हुए कई प्रकार की अनेक टोकरियों का डिजाइन तैयार किया तथा उसमें सुधार करता रहा। वैसे देखने में वह

बहुत सुंदर नहीं थीं, लेकिन मेरे इस्तेमाल के लिए पर्याप्त थीं। जैसे, यदि मैं किसी बकरी को मारता था तो सबसे पहले पेड़ पर लटका देता था। फिर उसमें से जरूरत के मुताबिक मांस निकालकर शेष भाग को काटकर टोकरी में भरकर घर में ले आता था और उसको धीरे-धीरे इस्तेमाल में लाता था। इस तरह के मैंने कई गहरे टोकरे भी बनाए थे, जिनमें मैं अनाज रखा करता था। ये बड़े टोकरे मैंने इस तरह से बनाए थे कि वे हमेशा सूखे रहते थे और उनमें रखा हुआ अनाज पूरी तरह से सुरक्षित रहता था।

मेरे पास रखे हुए पाउडर का भंडार भी अब खत्म होने लगा था। यहां उसे बनाना मेरे लिए बिलकुल ही असंभव प्रतीत हो रहा था। मैंने इस बारे में सोचना शुरू कर दिया था कि अब मुझे क्या करना होगा। मैं अब बकरी को मारने की सोच रहा था। अपने तीसरे साल के वहां निवास के दौरान मैंने बकरी के एक बच्चे को पाला था। मेरे दिल में उसने जगह बना ली थी, तभी तो अब मैं उसे कतई मारना नहीं चाहता था, भले ही वह अपनी स्वाभाविक उम्र के साथ खत्म हो जाए।

इस तरह से ग्यारह साल बीत गए। अब मेरे हथियारों का जखीरा कम होने लगा था। इसलिए मैंने उस समय बकरियों को चारा डालकर फंसाने की कला सीख ली थी। अब मैं उन्हें जिंदा पकड़ लेता था। इस मकसद में तो मैं कामयाब हो गया था। मुझे विश्वास था कि वे मेरी पकड़ में आ जाएंगी और ऐसा हुआ भी, लेकिन उन्हें बांधकर रखने का मेरे पास कोई उपाय दिख नहीं रहा था। अगर मैं उनको पालता, तो फिर खाना कैसे खिलाता।

कुछ दूरी पर मुझे एक गड्ढा दिखाई दिया और मैंने वहीं एक मांद बनाई। जमीन में कई मांद बनाकर रखने से उन्हें खाना खिलाने की समस्या सुलझ गई। इस प्रकार मैंने बिना किसी खास मेहनत के बकरियों को चारा डालकर फंसाने और उन्हें पालने का तरीका भी इजाद कर ही लिया। बकरियों को मैं वहीं पर अनाज खिलाता। पहली रात मैंने तीन बकरियों को फंसाया, चारा खिलाया तथा उन्हें वहीं रखा। अगली सुबह

जब मैं वहां गया तो वे बकरियां वहां से नदारद थीं, जिससे मैं हतोत्साहित हुआ। फिर भी मैंने चारा डालकर उन्हें फंसाने का प्रयास जारी रखा। अगले ही दिन उसमें एक बड़ा बकरा और तीन छोटी बकरियां उसे खाने के लिए आए थे।

पुरानी घटना से सबक लेते हुए मैं खुद मांद तक नहीं गया। उन्हें अपनी जरूरतों के लिए मैं जिंदा रखना चाहता था, इसलिए उन्हें मार भी नहीं सकता था। मैं उन्हें मार तो सकता था, लेकिन मुझे उनसे दूसरा काम भी लेना था। मैं जैसे ही उनके पास जाता तो वे डर से वहां से भाग जाते थे। मेरी यह समझ में नहीं आ पा रहा था कि मुझे इस हालात में क्या करना चाहिए। तब मैंने यह सीखा कि इन्हें भूखा रखकर पालतू बनाया जा सकता है। यदि मैं इन्हें तीन-चार दिनों तक भूखा रखूं और इसके बाद इनके पास कुछ अनाज-पानी लेकर इन्हें खाने-पीने के लिए दूं, तो सचमुच ही ये मेरे पालतू बन जाएंगे। ये इतने उपयोगी जीव हैं कि बाद में मेरे काम आ सकते हैं।

हालांकि उस समय मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या यह सही होगा, लेकिन समय के मुताबिक मुझे वही बेहतर लगा। तब मैं उन तीनों बकरियों को रस्सी में बांधकर अपने साथ घर ले आया। मेरा यह प्रयोग सफल रहा। जैसे ही मैंने उन्हें मीठे अनाज खाने को दिए तो वह खुश हो गईं।

अब मैं उन्हें पालतू बना चुका था। इस तरह मुझे लगा कि बकरी के मांस के साथ मेरे पाउडर की जरूरत की पूर्ति भी हो जाएगी। मैं इन्हें ज्यादा तादाद में पाल सकता हूं। शायद तब मेरे पास बकरियों का झुंड हो जाएगा तथा इन्हें रखने के लिए मुझे एक बाड़ा भी बनाना पड़ेगा।

फिलहाल एक समस्या यह भी थी कि बड़े होने पर ये पालतू जानवर कहीं फिर से जंगली न हो जाएं। अब इससे बचने का केवल एक ही तरीका था कि उस स्थान को बाड़े या खूंटों से घेर दिया जाए, ताकि वे भाग न सकें।

इतना काम कर पाना मेरे अकेले के बस का नहीं था। फिर भी, बिना

यह सब किए काम भी चलने वाला नहीं था। इसके लिए मेरा पहला काम एक समुचित जगह को तलाशना था, जहां पशुओं के चरने लायक घास, पीने का पानी और सूर्य की गरमी से बचने का इंतजाम किया जा सके।

उन्हें घेरने का बंदोबस्त करने के लिए मैं कुछ चीजों की जुगाड़ में लग गया, ताकि सारा काम समुचित ढंग से हो सके। इसके लिए वहां पानी का भी भरपूर इंतजाम करना था। इसके लिए जो जगह मुझे उपयुक्त दिखाई दी, वह मेरी रिहाइश से कम से कम दो मील दूर थी। कुल मिलाकर वह जगह इतनी अच्छी थी कि यदि मेरी रिहाइश से दस मील दूर भी होती तो मैं उसे वहीं बनाता। तब मुझे यह नहीं पता था कि इस समूचे द्वीप पर जंगली बकरियां एक जगह नहीं मिलेंगी, उन्हें पकड़ने के लिए मुझे भटकना पड़ेगा।

मैंने बाड़ा बनाने का काम शुरू कर दिया। पहले मैंने इसे पचास गज की चौड़ाई में बनाने का विचार बनाया। वैसे वर्तमान में तो छोटे बाड़े से ही काम चल जाता। बकरियों के झुंड बढ़ने पर बड़े स्थान की जरूरत को महसूस करते हुए मैंने डेढ़ सौ गज लंबे और सौ गज चौड़े बाड़े का निर्माण शुरू किया, ताकि उतनी जगह में सभी को बांधकर रखा जा सके। एक दूरदर्शी के तौर पर मैंने पूरे साहस से इस काम की शुरुआत की।

उस स्थान पर बाड़ा बनाने के लिए मैं तीन महीने तक जमीन को घेरने के लिए लकड़ियों को गाड़ता रहा। पूरा बनाने के बाद वहां उन तीनों बकरी के बच्चों को उसके सबसे अच्छे भाग में मैंने रख दिया। उन्हें अपने प्रति विश्वास कायम करने तथा पालतू बनाने के लिए खाना खिलाने से लेकर पानी पिलाने, दाना व चारा खिलाने जैसा सभी काम अपने ही हाथों से करने लगा। इस प्रकार जब मैंने पूरी तरह से घेराबंदी का काम कर लिया तो उन्हें उसमें खुला छोड़ दिया ताकि वे मेरे हाथ से अनाज खाने के लिए मेरे पीछे-पीछे आएं।

इस तरह, तकरीबन डेढ़ साल के बाद मेरे पास चालीस से ज्यादा

बकरियों के झुंड हो गए, जबकि मैंने खाने के लिए कुछ को मारा भी था। उसके बाद मैंने पांच अन्य मैदान में जमीन की घेराबंदी की ताकि उन्हें आसानी से खाना खिलाया जा सके। हालांकि इन सबमें मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी थी, लेकिन ऐसा करना भी जरूरी लगा था।

इतनी मेहनत का नतीजा अच्छा निकला। अब मेरे पास न केवल बकरियों का मांस उपलब्ध था, बल्कि मैं उनका दूध भी निकालने लगा था। वैसे शुरू में तो दूध निकालने में दिक्कत हुई, लेकिन बाद में तो वाकई खुद मैं भी आश्चर्यचकित हो गया, जब रोजाना मेरे पास दो गैलन तक दूध जमा होने लगा। प्राकृतिक रूप से इतने सारे दूध का इस्तेमाल कर पाना मेरे लिए संभव नहीं था। मैंने बकरी तो क्या पहले कभी गाय भी नहीं दुही थी और न ही दूध से पनीर या खोया बनाते हुए देखा था। मैंने कई लेख और कहानियां पढ़ी थीं, जिनके आधार पर अंततः मैं खोया और पनीर बनाने में भी कामयाब हो ही गया।

आपको यह बता दूं कि इस दौरान मैंने यहां आसपास द्वीप पर दो पौधशालाएं देखीं, जिनमें से एक तो मेरी रिहाइश के पास ही थी। वह काफी बड़ी और सूखी थी, इसलिए उसमें पानी से सिंचाई की दरकार थी। वहां मेहनत के बलबूते पर मैंने काफी अनाज पैदा किया। खासकर मक्का की फसल इतनी तादाद में हुई थी कि उसे काटते-काटते मेरे हाथों में दर्द होने लगा था।

मेरे निवास से कुछ ही दूर सटी हुई एक छोटी-सी नीची भूमि को मैंने जोतकर उसमें मक्के के बीज बोए थे। वहां इतनी तादाद में फसल पैदा हुई थी कि उसकी उर्वरता को देखते हुए, मैंने पास में ही कुछ और जमीन की भी जुताई की।

मैंने देखा कि मेरी रिहाइश के आसपास के पेड़-पौधे काफी बड़े हो गए हैं। यहां की लताएं फैल चुकी हैं, जिन्हें अब कांट-छांट करने की जरूरत है, ताकि मेरा बाड़ा सुरक्षित रहे। लताओं की ऊंचाई बढ़ गई थी, जिसे मैंने ठीक किया, ताकि सीढ़ी से अंदर से बाहर की ओर कूदने में सहायता मिले। मैं हमेशा पेड़ों की छंटाई करता था, जिससे उसकी

जब मैंने पूरी तरह से घेराबंदी का काम कर लिया तो बकरियों को उसमें खुला छोड़ दिया।

शाखाएं मुझे छाया प्रदान कर सकें। इन सबके बीच में ही मेरा टेंट था, इसलिए मुझे इन सबका जुगाड़ करना पड़ता था। मैं अपने टेंट में सोने के बिस्तरे के तौर पर कुछ जानवरों को मारकर उनकी नरम खाल को इस्तेमाल में लाता था।

अपनी रिहाइश के पास ही मैंने कुछ भेड़ों को पालने का इंतजाम किया था। इस काम के लिए घेराबंदी करने और मैदान में इन सबको बांधने में काफी मेहनत करनी पड़ी थी। हालांकि मैंने मेहनत से कभी मुंह नहीं मोड़ा था। बाड़े में तमाम इंतजाम कर रखे थे, ताकि बारिश के मौसम में भी कोई दिक्कत न हो।

इस स्थान पर मैंने कुछ अंगूर भी उगाए थे। ठंड के मौसम में मैं मुख्य तौर पर उन्हीं पर निर्भर था। मैं उन्हें सहेज कर रखना कभी नहीं भूला। चूंकि वहां पर मेरी शारीरिक शक्ति बरकरार रखने के लिए किशमिश का सेवन जरूरी था, इसलिए उन्हें उगाने और उनके भंडारण के प्रति मैंने कभी लापरवाही नहीं बरती।

अकसर मैं अपने दूसरे ठिकाने पर भी जाया करता था। साथ ही जहां मैंने अपनी नौका खड़ी कर रखी थी, उस जगह भी घूमने और मन बहलाने के लिए जाता था। कभी-कभी मेरे दिमाग में एक बार फिर से समुद्री यात्रा पर निकलने का विचार आता, लेकिन फिर पुरानी यादें ताजा हो जातीं, तब मैं सहम जाता। यहां मेरी जिंदगी ठीक-ठाक कट रही थी और सारी चीजें व्यवस्थित-सी हो गई थीं। मैं किसी धारा, भंवर या घटना का शिकार होना नहीं चाहता था। लेकिन अब मेरे साथ कुछ अलग तरह की घटना होने वाली थी।

एक दिन दोपहर को मैं अपनी नाव के पास जा रहा था। मैं यह देखकर हैरान रह गया कि वहां समुद्र किनारे कुछ आदमियों के नंगे पैरों के निशान दिख रहे थे, जो वहां बालू होने से स्पष्ट तौर पर उभरे हुए थे। एकाएक मुझे झटका लगा कि शायद ये भूत-पिशाच हो सकते हैं। वहां आसपास मुझे न तो कुछ दिखाई दिया—न ही कुछ सुनाई दिया। मैं वहां एक ऊंचे स्थान पर गया, ताकि किनारे की ओर दूर तक कुछ दिखाई

समुद्र किनारे कुछ आदमियों के नंगे पैरों के निशान देख कर मुझे हैरानी हुई।

दे सके, परंतु मुझे दूर-दूर तक कुछ नहीं दिखा। मैंने एक बार फिर से मुआयना किया, लेकिन कोई और सुराग हाथ नहीं लगा। समझ में नहीं आ रहा था कि वे नंगे पैरों के निशान किसके हैं। मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था कि आखिर यह क्या माजरा हो सकता है। इस बारे में सोचकर मैं काफी हैरान-परेशान था। डर के मारे मेरे कदम भारी हो गए। किसी तरह से मैं खुद को घसीटते हुए अपनी रिहाइश तक पहुंचा। अब तो मुझे झाड़ियों और पेड़ों की हर आहट से डर लगने लगा था। मुझे एकदम से झुरझुरी-सी आती और मैं भीतर तक दहल जाता।

डरते हुए मैं किसी तरह से अपने तथाकथित किले के भीतर पहुंचा और खुद को सुरक्षित रखने की उधेड़बुन में जुट गया। सीढ़ी से अंदर पहुंचते हुए मैं चट्टान के अंदर अपने तहखाने में घुस गया। भयभीत होने की वजह से उस समय मेरी याददाश्त भी प्रभावित हो गई थी। जहां तक मुझे याद आ रहा है—अगली सुबह तक मैं उसी में दुबका रहा। मैं बताना चाहूंगा कि पहली बार वहां मुझे इतना डर लगा था। वाकई में मेरे भीतर उस समय आतंक-सा छा गया था।

❑❑

अध्याय-10

जंगली आदमियों से सामना

यहां प्रवास के तेईसवें साल में दिसंबर महीने की एक सुबह टहलते समय समुद्र किनारे उठते धुएं को देखकर मैं हैरान हो गया। अब उजाला हो गया था, इसलिए द्वीप के आखिरी छोर पर तकरीबन दो मील की दूरी से मुझे धुआं उठता दिखा, जहां पहले भी मैंने जंगलियों के आने को महसूस किया था और यह द्वीप का उसी तरफ का हिस्सा था।

आने वाले किसी खतरे को भांपते हुए मैं तेजी से रक्षात्मक मुद्रा में आ गया। मैंने अपनी पिस्तौल तथा फौजी बंदूकों में गोलियां भर लीं। उसके बाद अंतिम सांस चलने तक अपनी रक्षा के लिए पूरी तैयारी करने लगा। दो घंटे तक बड़ी ही होशियारी से पूरी तैयारी को अंजाम देकर मैं धैर्यपूर्वक बैठ गया।

अंदर बैठे-बैठे मैं गुनगुना रहा था। जब भीतर से कुछ डर निकला, तो मैं सीढ़ी पर चढ़ते हुए पहाड़ी वाले हिस्से पर पहुंच गया। उस तरफ आगे समतल जमीन थी। मैंने पहले मुआयना किया और फिर सीढ़ी को ऊपर खींच लिया। पहाड़ी पर ऊपर की ओर चढ़कर मैंने अपनी दूरबीन निकाली, उसे मैं इसी मकसद से अपने साथ लेकर आया था। मैदान की उस समतल जमीन की ओर मैं उस खास स्थान को खोज रहा था।

मैंने देखा कि वहां बीच में आग जल रही है और उसके किनारे गोलाकार होकर तकरीबन कुछ जंगली मानव बैठे हुए हैं।

उनके पास दो छोटी नौकाएं भी थीं, जिन्हें किनारे पर खड़ा करके रखा गया था। शायद ज्वार थमने पर वे वहां पहुंचे थे और वापस जाने के लिए फिर ज्वार आने का इंतजार कर रहे थे। मैं यह नहीं समझ पा रहा था

कि वे वहां किस मकसद से आए थे तथा वहां क्या कर रहे थे, खासकर द्वीप के उस इलाके में जो कि मेरी रिहाइश के निकट ही था। जब मैंने उनके वहां आने के संदर्भों पर गौर किया तो मुझे लगा कि निश्चित ही वे ज्वार के सहारे यहां तक पहुंचे होंगे। यह विचार आते ही मैं इस मामले पर विचार करने लगा कि अपनी सुरक्षा के लिए मुझे यह स्थान जल्द ही छोड़ देना चाहिए।

जैसी कि मुझे उम्मीद थी, ठीक वैसा ही हुआ। जैसे ही समुद्र में ज्वार आया वे पश्चिम की ओर निकल गए। मैंने उन्हें नाव से जाते हुए देखा। तकरीबन घंटे भर मैंने उनका मुआयना किया, जिस दौरान वे नाचते हुए दिखे थे। मैंने अपनी दूरबीन से उन्हें स्पष्ट तौर से ऐसा करते देखा था। जहां तक मैं उन्हें देख और समझ पा रहा था, उन्होंने शरीर पर कुछ भी नहीं पहन रखा था।

जैसे ही मैंने उन्हें वहां से नाव ले जाते हुए देखा तो मैं अपने कंधों पर दोनों बंदूकें लादकर, पिस्तौल, तलवार आदि से लैस होकर–पूरी तैयारी के साथ तेजी से उस ओर दौड़ा तथा पहाड़ी के उस ओर पहुंचा जहां पहली बार उनके यहां आने को मैंने महसूस किया था। उनके चले जाने के बाद तकरीबन दो घंटे के अंदर ही मैं उस स्थान पर गया, जहां वे आग जलाकर बैठे थे। वहां मुझे प्रतीत हुआ कि वे तीन नावों पर समुद्र की ओर से ही आए थे और फिर उधर को ही वापस चले गए।

यह सब घटना मेरे लिए भयानक थी, खासकर उसके बाद से जबसे मैंने पैरों के आतंकी निशान को देखा था। वहां जब मैंने मुआयना किया तो वहां काफी सारा खून फैला हुआ था और हड्डियां भी बिखरी थीं। आदमी के शरीर के कटे हिस्से इधर-उधर पड़े थे, और मांस के टुकड़े फैले हुए थे, जिनके साथ शायद जंगली मानव खेल रहे थे।

उस दिन मैं दिनभर उलझन में रहा और पूरी तरह से दुखी भी। मेरे दिमाग में यह डर समा गया था कि एक-न-एक दिन मैं भी उनके हत्थे चढ़ जाऊंगा और वे मेरा कत्ल कर देंगे। तब यह किला मेरे काम नहीं आएगा। एकबारगी मेरे दिमाग में यह भी आया कि अगली बार

जलती हुई आग के किनारे गोलाकार होकर कुछ जंगली मानव बैठे हुए थे।

जब वे यहां आएंगे तो उन्हें बंदूक के बल पर यहां से खदेड़ दूंगा और चेतावनी भी दूंगा, ताकि अगली बार वे यहां नहीं आएं। लेकिन यह सोचकर डर भी रहा था कि शायद उन जंगली मानवों के पास दो-तीन सौ नौकाएं होंगी और कहीं उनका पूरा जत्था यहां मुझे खत्म न कर दे। हालांकि उसके बाद अगले एक साल तक वहां मुझे फिर कोई जंगली मनुष्य दिखाई नहीं दिया। जब मैंने मुआयना किया तो लगा कि वे हाल फिलहाल फिर से आए थे। यह बिलकुल सही है कि वे एक या दो बार वहां जरूर आए होंगे। क्योंकि वे वहां ठहरे नहीं होंगे, इसलिए मैं उन्हें देख नहीं पाया था।

जहां तक मेरा आकलन था, मेरे प्रवास के चौबीसवें साल मई महीने में एकबारगी मैं फिर एक घटना से दंग रह गया। यहां आसपास मैंने एक बंदूक चलने की आवाज सुनी, ऐसा आभास हुआ जैसे समुद्र किनारे पर कोई गोली चली हो।

बिलकुल जैसा मुझे आभास हुआ था, सचमुच में वैसा ही हुआ था और अब मैं हैरान था। मैं एक अलग ही कल्पना की दुनिया में खो गया था। फिर तीसरी बार मैं सीढ़ी पर चढ़कर पहाड़ी पर जाकर बैठ गया। वहां से मैं समुद्र के किनारे का नजारा देखना चाहता था। इतने में मुझे उस ओर से बंदूक चलने की आवाज सुनाई दी, जहां पर समुद्र के किनारे मैं अपनी नाव को ले जाता था।

मैं जल्द ही यह समझ गया कि निश्चित रूप से कोई जहाज संकट में फंस गया है। शायद उनके साथ कोई दूसरा जहाज भी है, जिससे सहायता मांगने के लिए वे सिगनल के तौर पर गन चला रहे होंगे। उसी समय मेरे दिमाग में एक बात आई कि यदि मैं उनकी सहायता नहीं भी करूंगा तो वे मेरी सहायता तो जरूर कर सकते हैं। इसलिए ऐसा सोचते हुए मैंने काफी सूखी लकड़ियां इकट्ठी करते हुए उनमें आग लगा दी। अब मैं आग के पास ही बैठ गया। लकड़ियां इतनी सूखी हुई थी कि वे धू-धूकर जलने लगी। धीमी हवा ने उन्हें और प्रज्वलित कर दिया तथा वह अब दूर से दिखाई दे सकती थी। मैं इस बात को लेकर आश्वस्त था

कि यदि जहाज जैसी कोई चीज होगी तो जरूर उसके लोगों की नजर इधर पड़ेगी। निस्संदेह उनकी नजरें इस ओर पड़ी होंगी तथा इसके बाद कुछ नियमित अंतराल पर कई और बंदूकें चलने की आवाजें आईं। पूरी रात उसी तरह से आग जलती रही और अगले दिन उजाला होने पर जब हवा साफ हो गई, तब मैंने देखा कि द्वीप की पूरब दिशा में बहुत दूर समुद्र में शायद कुछ तैर रहा था या ठहरा हुआ था, जिसे मैं ज्यादा दूरी होने तथा वायुमंडल में कुछ धुंधलापन होने की वजह से स्पष्ट तौर पर समझ नहीं पा रहा था।

दिनभर मैं उस ओर निहारता रहा। फिर जल्द ही मुझे इस बात का पक्का यकीन हो गया कि वहां कोई जहाज फंसा हुआ है। अब मैं हाथ में अपनी गन लिए हुए द्वीप के दक्षिणी हिस्से की ओर बढ़ चला।

मुझे नहीं मालूम कि उस द्वीप के पास हुई जहाज दुर्घटना में कोई बच पाया था या नहीं। कुछ दिन के बाद मैंने समुद्र किनारे एक लड़के का डूबा हुआ मृत शरीर देखा, जो द्वीप के उसी छोर पर था, जिधर जहाज क्षतिग्रस्त हुआ था। उसका पहनावा नाविकों की भांति ही था, जिसे समझने में मुझे देरी नहीं हुई, लेकिन इस बात का अंदाजा नहीं लग पाया कि वह किस देश का नागरिक था। उसकी जेब में से कुछ गिन्नियां और एक तंबाकू का पाइप निकला। दूसरी वस्तु मेरे लिए बहुत ही मूल्यवान थी, जबकि पहली चीज का वहां पर मेरे लिए कोई मोल नहीं था।

वहां समुद्र बिलकुल शांत था इसलिए मैं पूरे साहस के साथ नाव लेकर उस क्षतिग्रस्त जहाज की ओर बढ़ चला, इस उम्मीद से कि शायद वहां कोई जीवित बचा हो या फिर मेरे उपयोग के लायक कुछ सामान मिल जाए। यदि कोई जीवित होगा तो उसे सुरक्षित रूप से निकालने का मैं भरसक प्रयास करूंगा। ऐसा करके मैं न केवल उसकी जान बचा सकता था, बल्कि ऐसा होने से मुझे भी एक साथी मिल जाता। इसलिए मुझे निश्चित ही अपनी नाव लेकर उस जहाज के पास जाना चाहिए, मैंने यह निश्चय कर लिया था।

इस तरह मैं पूरी ताकत के साथ वहां तक समुद्र में जाने की तैयारी

करने लगा। मैंने अपने साथ काफी सारा ब्रेड, ताजा पानी, कंपास, एक बोतल रम, जो मेरे पास काफी तादाद में थी–एक टोकरी भरकर किशमिश आदि रखे। इस तरह सभी जरूरी चीजों को लेकर पानी की धारा में अपनी नाव खेते हुए मैं आगे बढ़ गया।

अगली सुबह पहली ज्वार के साथ ही मैं समुद्र में आगे की ओर बढ़ा। समुद्र की अनुकूलित धारा के हिसाब से मैं उत्तर दिशा की ओर चल दिया, फिर पूरब की ओर मुड़ा। तकरीबन दो घंटे की समुद्री यात्रा के पश्चात आखिरकार मैं उस क्षतिग्रस्त जहाज के पास पहुंचने में कामयाब हो गया।

मैं अब जहाज को निकट से देख रहा था। यह जहाज स्पेन में बना हुआ लग रहा था, जो दो चट्टानों के बीच में फंसने की वजह से दो भाग में टूटकर बिखर गया था। उसका ऊपरी हिस्सा नीचे की ओर झुक गया था। उसकी हालत देखकर ही उस घटना या हादसे की भयानकता स्पष्ट दिख रही थी। जब मैं उसके पास पहुंचा तो मुझे जहाज पर एक कुत्ता दिखाई दिया, जो मेरे नजदीक आने और मुझसे सहायता पाने को व्याकुल था। जैसे ही मैंने उसे अपनी ओर बुलाया, उसने नीचे की ओर छलांग लगाई और कूदकर मेरी नौका में आ गया। वह भूख से बिलबिला रहा था। मैंने उसे खाने के लिए कुछ ब्रेड दिए तो उसने ऐसे खाया जैसे सप्ताह भर बर्फ के भीतर रहने वाला कोई जीव खाने पर टूट पड़ा हो। मैंने उस बेचारे जीव को ताजा पानी पिलाया, जो मैं अपने साथ वहां लेकर आया था।

उसके बाद मैं बोर्ड पर गया, जहां मुझे पहली नजर में जहाज के एक केबिन में दो लोग आपस में लिपटे हुए तथा दो अन्य लोगों के डूबे हुए शव दिखाई दिए।

मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि जब जहाज तूफान में यहां पर चट्टान से टकराया होगा तो निश्चित ही इसका मस्तूल गिरने से ये लोग मरे होंगे। उस कुत्ते को छोड़कर समूचे जहाज पर मुझे कुछ भी ऐसा नहीं मिला, जिसकी मदद की जा सके। वहां सारा सामान भी बर्बाद हो चुका था।

मैंने कई सारे संदूकों को भी देखा, जो शायद नाविकों के रहे होंगे। उनमें से मैं दो संदूक अपने साथ उठा लाया। हालांकि मैंने उन्हें खोलकर देखा नहीं था कि उनमें क्या रखा था।

उस जहाज पर काफी तादाद में धन-दौलत लदा हुआ था। मुझे इस बात का अंदाजा नहीं लग पाया कि वह किधर जा रहा था। ब्यूनसआयर्स या रियो डी ला प्लाटा, ब्राजील से आगे अमेरिका के दक्षिणी हिस्से में या मैक्सिको की खाड़ी की ओर या फिर शायद स्पेन की ओर। इसमें कोई संदेह नहीं कि उस पर काफी दौलत थी। वहां पर उस समय उसकी कोई कीमत नहीं थी लेकिन वहां मुझे एक भी जिंदा आदमी नहीं मिला।

इन संदूकों के अलावा, शराब से भरे तकरीबन बीस पीपे मुझे मिले, जिन्हें मैंने बड़ी ही मुश्किल से अपनी नौका पर लादा। केबिन में कुछ फौजी बंदूकें और गोला-बारूद रखा था। हालांकि फौजी बंदूकों की मुझे जरूरत नहीं थी, इसलिए उन्हें मैंने वहीं छोड़ दिया, लेकिन गोला-बारूद अपने पास रख लिया। आग को सुरक्षित रखने वाले साधन भी मैंने साथ में रख लिए, जिनकी मुझे नितांत आवश्यकता थी। इन सभी सामानों और कुत्ते को साथ लेकर ज्वार के सहारे वापस मैं द्वीप की ओर चल दिया। उसी शाम को रात होने से तकरीबन घंटा भर पहले मैं उस द्वीप पर पहुंच गया। इस समय तक मैं काफी थक चुका था।

रात को मैं उसी नाव पर ही रहा और सुबह मुझे यह देखना था कि मैं अपने साथ इन सामान में से क्या-क्या ले जा सकता हूं। तरोताजा होने के बाद मैंने किनारे पर सभी सामान को रखा और उसका निरीक्षण किया। एक पीपे में बहुत सारी शराब भरी थी, जिसे मैंने संभालकर रखा। फिर संदूक को खोला और उसमें से सभी जरूरी चीजों को निकाला–जैसे, एक अच्छी बोतल, दो बोतल मीठी चटनी और उसके अलावा तमाम ऐसी चीजें जो पानी में बर्बाद होने से बच गई थीं। मैंने कुछ कमीजें भी निकालीं, जिनमें से कुछ तो मुझे फिट बैठीं। कुछ अच्छी कमीजों के अलावा लिनेन के आधा दर्जन रूमाल और रंगीन गलाबंद मिले। रूमाल मेरे लिए उपयोगी साबित हुआ। उस संदूक में धन-दौलत भी भरा हुआ

था। एक पेपर में लिपटी हुई कई सोने की छड़ें थीं, जो एक पाऊंड वजन के करीब रही होंगी।

सभी सामान को किनारे पर रखते हुए मैं अपनी नाव को उसके रखे जाने के स्थान पर हार्बर के निकट ले गया, जहां से मेरी रिहाइश पास में थी। यहां से मैं अपना सारा सामान ढोकर वहां तक ले गया। मैंने तमाम हथियारों को संभालकर रख लिया था। इसके अलावा कुछ हथियार मैं द्वीप के पूर्वी हिस्सों में भी एक स्थान पर सुरक्षित रखकर आ गया, ताकि उधर जाने पर वह काम में आ सकें।

इस तरह से दो साल वहां और गुजर गए। इन दो सालों में अब पहले की भांति मैं थोड़ा कमजोर हो गया था। इसलिए उस द्वीप से निकलने की योजना बनाने लगा कि आखिर किस तरह यहां से निकला जाए। कई बार दिमाग में फिर से एक समुद्री यात्रा पर निकल जाने का विचार आया, लेकिन किसी अनहोनी के डर से मैंने खुद को रोक लिया। समुद्री यात्राओं का मुझे अनुभव था। पूरा इंतजाम न होने तथा उपयुक्त नाव न होने के चलते मैं खुद को इसके लिए तैयार नहीं कर पाया।

तकरीबन डेढ़ साल तक मैं इसी उधेड़बुन में लगा रहा। एक दिन सुबह-सुबह समुद्र किनारे उस द्वीप के मेरे वाले हिस्से की तरफ ही मैंने पांच छोटी नौकाओं को आते हुए देखा। उनमें से सभी लोग उतरकर मेरे निवास की दिशा की ओर ही बढ़ रहे थे। मैं सभी को ठीक से नहीं देख पा रहा था, इसलिए उनकी सही संख्या का अंदाजा नहीं लग रहा था। मुझे लगा कि वे बीस से तीस की संख्या में होंगे और वे मेरी तरफ ही बढ़ते आ रहे थे। मैं अपने महल में चिंतित था कि आखिर वे किस मकसद से इधर आ रहे हैं। हालांकि मैंने अपनी ओर से आक्रमण की पूरी तैयारी कर ली थी, लेकिन उनकी ओर से किसी हरकत का इंतजार कर रहा था। मैंने वहां काफी देर तक उनका इंतजार किया कि नजदीक आने पर उनकी आवाज तो मुझे सुनाई पड़ ही जाएगी। मैं बंदूक लेकर सीढ़ी के सहारे पहाड़ी पर चढ़ गया और वहां से उनकी गतिविधियों का मुआयना करने लगा। पहाड़ी पर मैंने खुद को छिपा रखा था ताकि

वे किसी भी प्रकार मुझे देख न पाएं। यहां से मैं अपनी दूरबीन से उनकी गतिविधियां देख रहा था। मैंने देखा कि वे एक स्थान पर आग जलाने का इंतजाम कर रहे हैं और उसके इर्द-गिर्द नाचने का बंदोबस्त कर रहे हैं।

उनकी गतिविधियों को देखकर मैं समझने की कोशिश कर रहा था। इतने में मैंने देखा कि दो दासों को नाव से खींचकर नीचे उतारा गया, जिन्हें शायद यहां वध करने के लिए लाया गया था। मैंने देखा कि उनमें से एक का तो नीचे उतारने के थोड़ी ही देर बाद उन्होंने लकड़ी की तलवार से वध कर दिया।

इसके कुछ ही क्षणों के बाद, बेचारा दूसरा दास, जिसने अपनी आंखों से दूसरे का वध होते हुए देखा था, थोड़ी-सी आजादी मिलते ही जिंदगी की कुछ आस लेकर वहां से तेजी से भागा। उसने काफी तेजी से दौड़ना शुरू किया। वह समुद्र के किनारे फैले हुए बालू पर ठीक उसी ओर दौड़ता हुआ आ रहा था, जिस तरफ मेरा निवास था।

❑❑

अध्याय-11

फ्राइडे के रूप में एक नया साथी मिला

जब मैंने उन लोगों को अपनी तरफ आते हुए देखा तो मैं बुरी तरह से भयभीत हो गया था। खासकर तब, जब मैंने देखा कि शायद उन्होंने मुझे देख लिया तो फिर छोड़ेंगे नहीं। हालांकि मैं अपने किले में ही सुरक्षित रूप से था। अब मैंने देखा कि केवल तीन आदमी ही उसका पीछा कर रहे हैं तो कुछ हद तक मेरा साहस वापस आया। मैं देख रहा था कि काफी देर तक वे लोग उसका पीछा कर रहे थे। मेरे नजदीक तक पहुंचने में उन्हें कम-से-कम आधा घंटा तो जरूर ही लगता।

उनके और मेरे बीच में एक दर्रा था। उसे निश्चित रूप से उन्हें तैर कर पार करना था या फिर बेचारा दुखियारा आदमी वहीं पकड़ा जाता। जब वह आदमी वहां पहुंचा तो उसे कुछ नहीं करना पड़ा, क्योंकि तभी संयोग से एक लहर उठी। वह उसी के सहारे पानी में तैरते हुए मेरी तरफ बहते हुए आ गया और फिर पूरी ताकत लगाकर वहां से भागा। उसका पीछा करने वाले तीनों लोग जब दर्रे के पास पहुंचे तो जहां तक मुझे दिखाई दिया, दो लोग तैरते हुए आगे की ओर बढ़े, लेकिन तीसरा शायद तैरना नहीं जानता था, इसलिए वह वहीं से धीरे-धीरे लौट गया।

मैं देख रहा था कि जो दोनों तैर रहे थे, वे उनके चंगुल से भागते हुए आदमी को पकड़ने के लिए, उसका पीछा करते हुए दर्रा तैरकर पार कर रहे थे। सारी चीजों पर नजर रखते हुए मैं इस बारे में तेजी से सोचने लगा कि किस प्रकार इस आदमी को अपने साथ मिलाया जा सकता है। फिर उसे अपना नौकर या सहयोगी बनाया जा सकता है। मैं बड़ी ही होशियारी से उस बेचारे आदमी के प्राण बचाना चाह रहा था। सीढ़ी के सहारे मैं

तेजी से नीचे उतरा और सीढ़ी के पास रखी दोनों बंदूकों को उठाते हुए वहां से बढ़ चला। मैं अपने स्थान से बिलकुल ही छोटे वाले रास्ते से उसके नजदीक तक पहुंचा। उसके बाद इशारे से मैंने उस आदमी को अपने पास बुलाया। पहले तो वह मुझसे डरा, लेकिन जब मैंने उसे इशारे से समझाया तो सहमते हुए वह मेरे नजदीक आया।

उन दोनों जंगली आदमियों को अपनी ओर आते देखकर मैंने बंदूक से गोली दागी। उन लोगों ने न तो उसकी आवाज सुनी होगी और न ही उन्हें बंदूक के बारे में शायद कोई जानकारी रही होगी। चूंकि वे लोग उससे निकले धुएं को भी देख नहीं पाए होंगे, इसलिए हो सकता है कि उन्हें इसका कोई डर न लगा हो। इधर गोली लगने से पीछा करने वाला एक आदमी घायल हो गया। उसने दुखियारे आदमी को खदेड़ना छोड़कर मुझे निशाना बनाना चाहा। उसके हाथ में तीर-धनुष था, जिसे उसने मेरी तरफ तान दिया। यह देखते ही मैं खुद पहले उसे बंदूक से खत्म कर देना चाहता था। मैंने ऐसा ही किया और बंदूक दागते हुए ढेर कर दिया। बेचारा आदमी अपने दोनों दुश्मनों को घायल और मरा समझकर वहीं रुक गया। शायद वह मेरी बंदूक की आवाज और उसकी आग से डर गया था। वह वहीं स्तब्ध होकर खड़ा हो गया। न तो वह आगे ही बढ़ रहा था–और न ही पीछे की ओर मुड़ रहा था।

मैंने दोबारा उसे अपनी तरफ आने के लिए पुकारा। उस समय उसे प्रोत्साहित करने के जितने तरीके मेरे दिमाग में आए, उन सबका मैंने प्रयोग किया, और वह धीरे-धीरे मेरी तरफ आने लगा। प्रत्येक दस-बारह कदम पर वह घुटनों के बल बैठ जाता और अपनी प्राण रक्षा की गुहार लगाता। मेरे बिलकुल नजदीक आते ही वह जमीन पर लेटकर धरती को चूमने लगा। उसने मेरे कदमों में आकर बिलकुल दंडवत की मुद्रा में मेरे पैर पकड़ लिए। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह मेरी दासता स्वीकार करने की शपथ ले रहा हो।

मैंने उसे नीचे से उठाया और जितना बन पड़ा, उसे प्रोत्साहित किया। लेकिन अभी बहुत काम बाकी था। मैंने इतने में देखा कि जिस जंगली

आदमी को मैंने गोली दागी थी, वह अभी पूरी तरह से मरा नहीं था। वह एकाएक खड़ा हुआ और मेरी ओर फिर से आगे बढ़ा। अतः मैंने उस आदमी को उस ओर इशारा करते हुए बताया कि वह अभी मरा नहीं है। उस आदमी ने मुझसे कुछ कहा, परंतु मैं उसके शब्दों का अर्थ नहीं समझ पाया। फिर भी मुझे वे शब्द सुनने में बड़े ही आनंददायक महसूस हुए, क्योंकि तकरीबन पच्चीस सालों के बाद मैंने किसी दूसरे आदमी की आवाज सुनी थी।

इस वक्त इस विषय पर सोच-विचार करने का बिलकुल भी समय नहीं था क्योंकि उधर जिस जंगली आदमी को मैंने गोली दागी थी, वह भी फिर से उठकर पूरी ताकत के साथ खड़ा हुआ और मेरी तरफ बढ़ा। यह देखते हुए मेरे पास खड़ा वह आदमी एक बार फिर भयभीत हो गया, लेकिन मैंने उसे मारने के लिए दोबारा से गोली दागी। साथ ही उसे पूरी तरह से खत्म करने के इरादे से मैंने हमेशा अपने पास रहने वाली नंगी तलवार दुखियारे आदमी को थमाते हुए-उस जंगली आदमी को मारकर आने का इशारा किया। बिना किसी देरी के वह मेरे इशारे को समझ गया और अपने शत्रु की ओर तेजी से दौड़ा। उसके पास पहुंचते ही बड़ी होशियारी से उसने शत्रु का सिर धड़ से अलग कर दिया। शायद जर्मनी के जल्लाद भी इतनी तेजी और बेहतर तरीके से यह काम नहीं कर पाते होंगे। मुझे विश्वास है कि उसने पहले कभी धातु की तलवार देखी भी नहीं होगी, क्योंकि वे लोग लकड़ी की तलवार को इस्तेमाल करते थे।

वैसे तब तक मैं इस बात को जान चुका था कि उनकी लकड़ी की तलवार इतनी पैनी और भारी होती थी कि उससे एक ही झटके में किसी का सिर कलम किया जा सकता था। दुखियारा आदमी अपने मकसद में कामयाब होने के बाद विजयी मुद्रा में मेरी तरफ आ गया। उसने मुझे इशारे से बताया कि किस प्रकार उसने जंगली मानव को मौत के घाट उतार दिया है। फिर उसने मुझे मेरी तलवार वापस कर दी।

वह दुखियारा जानना चाहता था कि दूसरा जंगली आदमी पूरी तरह से मरा है या नहीं। इसलिए हम लोग इस बात की तसल्ली करने के लिए

उसके नजदीक गए। वहां जाकर देखा, उसकी छाती में गोली लगने से काफी खून बह चुका था तथा उसकी मौत हो चुकी थी। मैंने दुखियारे को इशारे से ही बताया कि यह आदमी मर चुका है। उसने उसके पास से तीर-धनुष उठाकर अपने कब्जे में ले लिया, ताकि बाद में वह काम आ सके। अब मैं वहां से वापस मुड़ गया। उसे भी अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया और समझाया कि हो सकता है वे लोग ज्यादा तादाद में इधर की ओर आएं। मेरी बात समझकर उसने मुझे इशारे से बताया कि हमें इसे यहां दफना देना चाहिए, ताकि इसके साथियों को इनकी कोई जानकारी नहीं मिल सके। मेरा इशारा पाते हुए उसने उन दोनों को वहीं पर बालू में दफना दिया। इसके बाद मैं उसे अपने साथ लेकर अपनी रिहाइश की ओर न जाते हुए, द्वीप के दूसरी ओर की गुफा की तरफ ले गया। यहां मैंने उसे खाने के लिए कुछ ब्रेड, ढेर सारी किशमिश और पीने के लिए ताजा पानी दिया। जब उसने सारा खाना खा लिया तो मैंने उसे इशारे से आराम करने के लिए कहा। मैंने उसे वह जगह दिखाई, जहां पुआल से बना हुआ बिस्तर और कंबल रखा हुआ था। वहां पर मैं कई बार सो भी चुका था। चूंकि वह बहुत थका हुआ था, इसलिए उसको लेटते ही नींद आ गई।

मुझे लगा कि वह एक अच्छा इंसान हो सकता है और उसकी उम्र छब्बीस साल के करीब रही होगी। जब वह मुस्कुराता था तो मैं खुश होता था कि चलो एक साथी तो मुझे मिला। उसकी मुस्कान इतनी मीठी थी कि वह मुझे कोई यूरोपियन मालूम होता था। उसकी मासूमियत को देखकर वह एक भला इनसान लगता था। उसके बाल बहुत ही काले, घने और लंबे थे। ललाट काफी ऊंचा और बड़ा था। उसकी आंखें बहुत तेज थी। उसका रंग जरूर थोड़ा काला था, परंतु देखने में वह सुंदर था। उसका चेहरा गोल और नाक छोटी थी, लेकिन नीग्रो की तरह सपाट नहीं थी। उसके होंठ पतले थे तथा दांत भी काफी सुंदर थे-अर्थात् कुल मिलाकर देखने में वह सुंदर था।

तकरीबन आधा घंटा आराम करने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और

गुफा से बाहर टहलते हुए मेरे पास आ गया। मैं उस समय बकरियों का दूध निकाल रहा था, जिन्हें मैंने अपने बाड़े में बांध रखा था। कुछ देर बाद मैंने उसके साथ बातचीत शुरू की और उसे बात करना सिखाया। सबसे पहले मैंने उसका नामकरण किया। चूंकि उससे मेरी पहली मुलाकात शुक्रवार को हुई थी, इसलिए मैंने उसका नाम फ्राइडे रख दिया। इसी तरह मैंने उसे खुद को मास्टर कहना सिखाया और उसे बताया कि तुम मुझे इसी नाम से बुलाओगे। आसान संवाद कायम करने के लिए मैंने उसे 'हां' और 'ना' कहना सिखाया। मैंने उसे एक बर्तन में थोड़ा दूध पीने को दिया और खुद भी पीते हुए उसे बताया कि उसे कैसे पिया जाता है। फिर उसे ब्रेड के कुछ पीस दिए और खाने का तरीका भी बताया। वह तेजी से सारा खाना खा गया। खुश होकर उसने इशारे से मुझे बताया कि वह बहुत प्रसन्न है।

रातभर मैंने उसे वहीं ठहराया। जैसे ही दिन का उजाला हुआ तो मैंने उसे इशारे से अपने पास बुलाया और कुछ कपड़े देने के लिए अपने साथ आने को कहा। चूंकि वह पूर्णतया नग्न था, इसलिए कपड़े देखकर वह बहुत खुश हो गया।

उसके बाद मैं उसे लेकर पहाड़ी पर चढ़ते हुए यह देखने लगा कि उसके शत्रु वापस गए या नहीं। फिर मैंने अपनी दूरबीन निकालकर देखा कि वहां दूर-दूर तक कोई आदमी या फिर कोई नौका दिखाई नहीं दे रही है। इसका स्पष्ट मतलब था कि वे लोग अपने दोनों साथियों की खोज किए बिना ही वहां से निकल भागे थे।

इस खोज ने मेरे भीतर एक नए उत्साह का संचार किया। अब मेरी उत्सुकता और बढ़ गई। मैंने फ्राइडे को कंधे पर तीर-धनुष टांगकर रखने के अलावा एक तलवार और अपनी दो बंदूकों में से एक बंदूक भी रखने को दी, जिसे मैं हमेशा ही अपने साथ रखता था। सारे हथियार संभालकर हम लोग उस ओर बढ़े, जिधर जंगली मानव समुद्र किनारे आए हुए थे। जब हम वहां पर पहुंचे तो वहां का भयानक दृश्य देखकर मेरी नसों का खून मानो जम गया। ऐसा लगा कि मेरे हृदय की धड़कन कम होती जा

रही है। सचमुच में वहां का दृश्य कम-से-कम मेरे लिए तो बहुत ही भयानक था। वैसे फ्राइडे पर शायद उसका उतना असर नहीं हुआ था, वहां आदमियों के शरीर की हड्डियां बिखरी थीं। पूरी जमीन रक्त से भीगी हुई थी। यहां-वहां ढेर सारा मांस बिखरा पड़ा था-आधा खाया हुआ और आधा बिखेरा हुआ। ऐसा लग रहा था कि शत्रु पर विजय पाने के बाद उन लोगों ने वहां पर उसका जश्न मनाया होगा।

मैंने फ्राइडे को इशारा किया कि सभी चीजों को वहां इकट्ठा करते हुए ढेर लगाकर उसमें आग लगा दे। उसने तमाम हड्डियों, खोपड़ियों और मांस के बिखरे टुकड़ों का ढेर लगाया और उसमें आग जलाकर सबको राख में तब्दील कर दिया।

यहां काम पूरा करने के बाद हम दोनों वापस अपने तथाकथित महल में आ गए। वहां मैं अपने सहयोगी फ्राइडे की सुविधा से जुड़े तमाम कार्यों में जुट गया। सबसे पहले मैंने उसे लिनेन के कुछ कपड़े पहनने को दिए, जिन्हें मैंने उस क्षतिग्रस्त जहाज से निकाला था। वे कपड़े पूरी तरह से उसके नाप के तो नहीं थे, फिर भी कुछ हद तक ठीक-ठाक लग रहे थे। बकरी के खाल से मैंने उसके लिए एक जरकिन बनाई, जिसकी कला मैं अब तक सीख चुका था। खरगोश की खाल से बनी एक टोपी भी उसे दी। खुद को अपने मास्टर की ही तरह पोशाक में देखकर फ्राइडे बहुत खुश हो गया था।

अगले दिन जब मैं उसे अपनी रिहाइश पर लेकर आया, तो मैं यह नहीं सोच पा रहा था कि उसके रहने का इंतजाम वहीं पर किया जाए या किसी दूसरी जगह पर। चूंकि मैं उसके रहने का अच्छा बंदोबस्त करना चाह रहा था, इसलिए उसके लिए मैंने एक टेंट बनाया। उस टेंट में एक दरवाजा भी लगा दिया, जो मेरी गुफा की तरफ ही खुलता था। रात को अपनी सुरक्षा के लिए मैं सीढ़ी को अंदर की ओर ही खींच लेता था, ताकि फ्राइडे किसी भी तरह से मेरे नजदीक तक नहीं आ सके। यदि वह मेरे पास आना भी चाहे तो बिना मुझे आवाज लगाए हुए मुझ तक न पहुंच पाए। हालांकि अब तक मुझे फ्राइडे पर विश्वास हो गया था।

फिर भी मैं अपनी आदत के अनुसार प्रत्येक रात अपने हथियार पास में रखकर ही सोता था। मैंने अपनी सुरक्षा का चाक-चौबंद इंतजाम कर रखा था, ताकि बिना मेरी अनुमति के कोई भी मेरे पास न फटक पाए।

लेकिन अब मुझे सही में इस तरह के सुरक्षात्मक उपायों की जरूरत नहीं थी। मेरा सहयोगी फ्राइडे बहुत ही विश्वसनीय और जागरूक नौकर था। वह पूरी तरह से मेरी बात को समझने लगा था। उसके इन्हीं गुणों ने मुझे उससे बांध दिया था—जैसे एक पिता अपने बच्चे से बंध जाता है। वह इतना हिम्मती था कि मेरी प्राण रक्षा के लिए अपनी जान न्योछावर कर सकता था। वह कई बार इसका प्रमाण भी दे चुका था, इसलिए मुझे अब उस पर कोई संदेह नहीं रहा था। मैंने उसके प्रति आश्वस्त होते हुए सुरक्षा के सभी उपायों को छोड़ दिया।

फ्राइडे को मैंने धीरे-धीरे सारा काम करना सिखाया। बकरियों को मारकर उसका मांस बनाने, उसे पकाने, काटने समेत उनकी खाल का किस तरह से उपयोग किया जाएगा, यह सारा काम मैंने उसे सिखाया। अभी तक उससे मेरी बातचीत इशारे की भाषा में ही होती थी। साफ पानी से मुंह धोना भी उसे मैंने ही सिखाया था।

इन सबके अलावा उसे मांस को उबालना और पकाना सिखाया। अगले दिन मैंने उसे मांस के एक टुकड़े को रोस्ट करके खाने की विधि बताई। मैंने इंगलैंड में देखा था कि कई लोग एक खंभे में मांस का टुकड़ा बांधकर उसके इर्द-गिर्द बैठकर उसे आग से सेकते थे और उस रोस्टेड मांस का लुत्फ उठाते थे।

अगले दिन मैंने उसे मक्के की बाली का दाना छुड़ाने के काम में लगाया। मैं चाहता था कि वह सारा काम सीख जाए। वह बारीकी से काम करते हुए मेरा मुआयना करता और फिर उसे आसानी से खुद भी दोहराता। वह तेजी से सारा काम समझ रहा था। खासकर वह सभी चीजों के अर्थ को भी समझता रहा और इस तरह वह ब्रेड बनाना भी सीख गया। मैं अपने लिए जितना काम करना सीख चुका था, कमोबेश फ्राइडे ने भी अपने लिए वह सारा काम सीख लिया था।

अब मैं यह सोच रहा था कि चूंकि खाने वाले अब हम लोग दो आदमी हो गए हैं, इसलिए अब ज्यादा अनाज पैदा करना होगा और इसके लिए ज्यादा जमीन पर खेती करनी होगी। इसलिए मैंने जमीन के एक बहुत बड़े इलाके को चुनते हुए फ्राइडे के साथ मिलकर पूरी तरह से घेराबंदी करके उसे खेती के लायक बनाया। इस कार्य में हमें अथक परिश्रम करना पड़ा, लेकिन फ्राइडे ने बड़े ही मजेदार तरीके से सारे काम को अंजाम दिया। मैंने उसे सारी बातें बताईं। अब हमें ज्यादा अनाज की जरूरत होगी, इसीलिए ज्यादा जमीन पर खेती करने के लिए ऐसा करना जरूरी है। अपनी ओर से वह बहुत ही सजग था। मैं उसे जो भी काम कहता, उसे वह पूरी तत्परता से पूरा करता था। उसे यह महसूस होता था कि वह मुझसे कम काम कर पाता है, इसलिए वह ज्यादा परिश्रम करना चाहता था।

इस स्थान पर रहते हुए मेरे लिए यह साल सबसे ज्यादा आनंददायी था। फ्राइडे अब मुझसे बातें करने लगा था और वह रोजमर्रा की तमाम चीजों के नाम को समझने लगा था। मैं उसे जो भी सामान लाने के लिए भेजता, वह उसे ले आता। बहुत दिनों से विश्राम की अवस्था में रहने के बाद मेरी जीभ को भी अब काम मिल गया था—अर्थात् अब वह बोलने लगी थी। फ्राइडे से बातचीत करके मुझे एक अलग प्रकार के सुख की अनुभूति होने लगी थी और मैं उससे बात करके बहुत संतुष्ट हो रहा था। मैं उससे बहुत प्यार करने लगा था। संभवतः उससे ज्यादा प्यार मैंने किसी से नहीं किया था।

फ्राइडे और मैं आपस में अच्छी तरह बातचीत करने लगे। मैंने उसे अंग्रेजी में सभी चीजों को समझाना शुरू किया। मैंने उसे अपनी पूरी कहानी सुनाई। इस स्थान तक पहुंचने से जुड़े पूरे घटनाक्रम को उसे विस्तार से बताया। यह भी बताया कि मैं यहां कितने वर्षों से रह रहा था। यहां पर कितनी चीजें क्षतिग्रस्त जहाज से निकालकर लाया और उनका किस तरह से इस्तेमाल किया। मैंने सभी हथियारों के बारे में भी उसे बताया। मैंने उसे नाव के क्षतिग्रस्त टुकड़ों को दिखाया, जिससे मैं बचकर

निकल पाया था। टूटे हुए भाग को देखकर फ्राइडे कुछ बुदबुदाया। फिर उसने मुझे बताया कि इस तरह की नौका अपने देश में भी उसने देखी थी।

मैंने उससे पूछा कि क्या उस पर श्वेत आदमी सवार थे। उसने बताया, "हां, बिलकुल, उस पर श्वेत आदमी सवार थे।"

फिर मैंने उससे उनकी संख्या के बारे में पूछा तो उसने हाथ की अंगुलियों पर जोड़कर बताया कि सत्रह लोग थे।

कुछ दिनों के बाद एक दिन बड़ा सुहावना मौसम था। मैं द्वीप के पूर्वी किनारे की ओर मुख्य भूमि की खोज में निकला था। फ्राइडे बड़ी ही उम्मीद भरी नजरों से मुख्य भूमि की तरफ देख रहा था। कुछ ही देर के बाद वह खुशी से झूमता-नाचता हुआ मेरे पास आया। आते ही उसने मुझे पुकारा। मैंने उसकी खुशी का राज जानना चाहा तो वह बोला, "मैं आज बहुत खुश हूं। मुझे आज अपना वतन, अपना देश दिखाई दिया है। उसी दिन टहलते हुए मैं खुद भी उस पहाड़ी पर गया, लेकिन मौसम में धुंधलापन छाने की वजह से मैं महाद्वीप को पूरी तरह से देख नहीं पा रहा था।"

मैंने उससे पूछा, "फ्राइडे क्या तुम यहां से अपने देश को देख पा रहे हो? क्या तुम अपने देश जाना चाहोगे?"

"हां," उसने जवाब दिया, "मैं अपने देश में वापस जाने पर खुश होऊंगा।"

मैंने उसे आश्वासन दिया, "मैं तुम्हारे लिए एक नौका बना दूंगा।" लेकिन उसने कहा कि वह तभी जाएगा यदि मैं भी उसके साथ चलूंगा। मैंने मना करते हुए कहा, "नहीं, वहां तो लोग मुझे मारकर खा जाएंगे।"

"नहीं-नहीं," उसने मुझे आश्वस्त किया, "मैं उन्हें सारी बात बताऊंगा कि आप मुझसे कितना प्यार करते हैं।" उसने मुझे समझाने की चेष्टा की–चूंकि मैंने उसके दुश्मनों को मारकर उसकी जान बचाई है, इसलिए वे लोग भी मुझसे प्यार करेंगे। साथ ही उसने मुझे यह भी बताया

कि जहाज दुर्घटना में विपत्ति से घिरे सत्रह अंग्रेजों की किस प्रकार उसके देशवासियों ने जान बचाई थी और उन्हें वहां पर संरक्षण दिया था।

उसकी बातों से मुझे भरोसा जगा और सोचा कि शायद उन लोगों के साथ मिलकर इस अनजान स्थान से निकलने का कोई-न-कोई तरीका जरूर निकाला जा सकता है। मैंने सोचा कि महाद्वीप से तकरीबन चालीस मील की दूरी पर मुझे इस निर्जन द्वीप में अब अकेले नहीं रहना चाहिए। वह भी तब जब मुझे वहां और भी साथी मिल सकते हैं। फिर फ्राइडे के साथ मिलकर मैंने दोबारा से एक नौका बनाने की तैयारी शुरू कर दी।

चूंकि फ्राइडे को लकड़ियों के बारे में मुझसे बेहतर जानकारी थी, इसलिए उसी के अनुसार पेड़ की लकड़ी को काटकर नौका बनाने की तैयारी में हम लोग जुट गए। तकरीबन एक महीने के कठिन परिश्रम के बाद नौका पूरी तरह से बनकर तैयार हो गई। उसके बाद मैंने उसे पानी में धकेलकर एक-एक इंच जगह को ठीक किया, ताकि वह पूरी तरह से सुरक्षित हो जाए और उसमें कहीं से भी पानी आने की गुंजाइश न रहे। इस काम में तकरीबन मुझे अतिरिक्त पंद्रह दिनों का समय लगा।

नाव का आकार इतना बड़ा था कि मैं इस बात को लेकर आशंकित था कि फ्राइडे अकेले उसे नियंत्रित कर पाएगा या नहीं। मैंने सभी चीजों को बारीकी से समझाते हुए अपने मन की आशंका जाहिर की तो उसने मुझे भरोसा दिलाया कि वह सबकुछ संभाल लेगा। फ्राइडे ने जवाब दिया, "आपने इस नाव को इतनी अच्छी तरह से तैयार किया है कि तूफान आने पर भी मैं इसे संभाल सकता हूं।"

मैंने उस नाव को लंगर एवं केबल से भी सुसज्जित कर दिया था तथा उसे उनके इस्तेमाल किए जाने का तरीका भी बता दिया था, ताकि विपरीत परिस्थितियों का वह डटकर मुकाबला करने में सक्षम हो सके।

❑❑

अध्याय-12

मेरी महान सेना

फसल पकने का समय नजदीक आ गया था। इस बार द्वीप पर फसल की उपज में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी हुई थी। तकरीबन बाईस बुशेल जौ और दो सौ बीस बुशेल से भी ज्यादा तादाद में चावल का उत्पादन हुआ था, जो हमारी जरूरतों के लिए अगली फसल होने तक पर्याप्त था। इतना ही नहीं, यदि हम उन सोलह स्पेन के नागरिकों के साथ समुद्री यात्रा पर निकलते तो उस हालत में भी जहाज पर हमारी खाद्य आपूर्ति की जरूरतों के लिए यह अनाज काफी था।

हमने सारा अनाज जमा कर लिया और फिर उसे बड़े टोकरों में सुरक्षित रखने की तैयारी में जुट गए। अब मुझे वहां से आने वाले स्पेनिश मेहमानों के लिए भी खाने का पूरा इंतजाम करना था। उन्हें यह दिखाना भी था कि अकेले दम पर मैंने यहां पर कितना कुछ हासिल किया है। इसलिए इन सभी चीजों को भी यहां से ले जाना जरूरी था। इस काम में द्वीप पर आए एक अजनबी ने मेरी काफी मदद की।

सभी काम होने के बाद फ्राइडे के पिता और स्पेनिश, दोनों ही नाव पर चले गए। जाते समय मैंने उनको एक फौजी बंदूक और कुछ बारूद दिया ताकि संकट में वे काम आ सकें। हालांकि उन्हें इसका इस्तेमाल करना नहीं आता था, फिर भी उन्होंने किसी विपत्ति से बचाव के लिए उसे रख लिया था। उन लोगों के दोबारा आने का हम इंतजार कर ही रहे थे कि आठ दिन के बाद एक विचित्र घटना हमारे साथ घटी। सुबह मैं जब अपने तहखाने में नींद की आगोश में था तो फ्राइडे दौड़ा हुआ आया और जोर से पुकारने लगा, "मास्टर, मास्टर, वे आ रहे हैं!"

मैं तुरंत जागा और बाहर निकला। बाहर निकलते वक्त मैं अपने साथ हथियार नहीं लाया, जबकि मैं ऐसा कभी नहीं करता था। जब मैंने समुद्र की ओर देखा तो मेरी आंखें आश्चर्य से फटी रह गईं! मैंने देखा कि समुद्री किनारे से तकरीबन चार मील की दूरी पर एक नाव किनारे की ओर आने के लिए खड़ी है और हवा के सहारे धीमे-धीमे तैर रही है। किसी अनजाने खतरे को भांपते हुए मैंने फ्राइडे को बताया कि ये वे लोग नहीं हैं, जिनकी हम प्रतीक्षा कर रहे थे। फिर यह भी मालूम नहीं हो पा रहा है कि वे हमारे दोस्त हैं या कि दुश्मन।

पहाड़ी पर चढ़कर जब दूरबीन से मैंने समुद्र का नजारा देखा तो मुझे महसूस हुआ! कि वह दक्षिण पूर्वी सागर तट से करीब चार मील दूर समुद्र में एक अंग्रेजी जहाज है, जो कहीं लंगर डालने की तलाश में है।

मैं वहां ज्यादा देर तक उस मुद्रा में नहीं ठहर पाया। मैंने देखा कि वह जहाज समुद्र तट की ओर आ रहा है तथा उसे ठहरने के लिए किसी दर्रे की तलाश है। हालांकि वे अभी काफी दूर थे, इसलिए वे उस दर्रे को देख नहीं पाए थे, जो मेरी रिहाइश से एक मील की दूरी पर था।

जब वे तट के करीब आ गए तो मैं पूर्णतया संतुष्ट हो गया कि वे अंग्रेज ही थे। वे कम-से-कम ग्यारह आदमी थे, जिनमें से तीन निहत्थे थे। मैंने देखा कि पहले पांचों आदमी तट पर कूदे और उन्होंने बाकी तीन को कैदियों की तरह से नाव से खींचकर बाहर निकाला।

मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि आखिरकार क्या मामला हो सकता है। मैं समझ गया कि इन तीनों कैदियों को यहां मारने के लिए लाया गया होगा।

मैंने देखा कि वे अक्खड़ नाविक उन तीनों के साथ बड़ी अभद्रता के साथ पेश आ रहे थे। उसके बाद वे लोग उन्हें छोड़कर घूमने के मकसद से इधर-उधर भटकने लगे। मैंने देखा कि उन तीनों लोगों को भी घूमने की आजादी मिल गई थी। लेकिन बावजूद इसके कि वे इससे राहत महसूस करते, वे बड़े ही निराश होकर वहीं जमीन पर बैठ गए थे।

परिस्थिति को भांपते हुए मैं उनकी मदद के लिए वहां जाना चाहता

था। उनके पास पहुंचकर मैंने छिपते हुए स्पेनिश भाषा में उनसे पूछा, "तुम लोग कौन हो?"

उधर से कुछ आवाज तो आई पर मैं कुछ समझ नहीं सका। तब मैंने उनके पास जाते हुए अंग्रेजी में पूछा, "जेंटलमैन, आप लोग कौन हैं?"

वे लोग मुझे वहां देखकर स्तब्ध रह गए, तो मैंने कहा, "आश्चर्य मत करो और मुझे अपना दोस्त समझो तथा बताओ कि मामला क्या है? शायद मैं तुम लोगों की कुछ मदद कर सकूं?"

उनमें से एक बोला, "सर, हमारी कहानी बड़ी लंबी है, लेकिन हत्यारे पास में ही हैं। सारांश यह है कि मैं इस जहाज का कमांडर था और मेरे आदमियों ने मेरे खिलाफ विद्रोह कर दिया। बड़ी मुश्किल से उन्होंने मेरी जान बख्शी है और यहां इस निर्जन स्थान पर छोड़ने का फैसला लिया है। ये दोनों भी मेरे साथ हैं, एक मेरा मेट है जबकि दूसरा एक यात्री है।"

मैंने उनकी हिम्मत बढ़ाते हुए कहा, "मैं तुम लोगों को मुक्त कराने की पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन तुम्हें भी मेरी दो शर्तें माननी होंगी।" उसने मेरी सभी शर्तों को मानने का प्रस्ताव स्वीकार किया और मेरे सभी निर्देशों का पालन करने की हामी भर दी।

मैंने उसे अपनी दोनों शर्तें बताईं–'इस द्वीप पर जब तक रहोगे, तब तक मेरी किसी बात का उल्लंघन नहीं करोगे और यदि जहाज पर कब्जा मिल जाए तो मुझे और मेरे आदमी को लेकर इंग्लैंड पहुंचाना होगा।'

उसने मुझे आश्वस्त कर किया कि जैसा मैं चाहूंगा वैसा ही होगा।

मैंने उन्हें तीन फौजी बंदूकें थमाते हुए कहा कि अब मुझे यह बताओ कि तुम आगे क्या करने की सोच रहे हो।

उसने बड़ी ही विनम्रता से कहा, "यदि मैं उसकी मदद करूं तो वह सबको खत्म करने की कोशिश करेगा और ऐसा वह कर भी सकता है, लेकिन विद्रोह के सूत्रधार दो लोग उस जहाज में ही हैं, इसलिए सभी को मारना होगा।"

मैंने उन तीनों के हाथों में बंदूकें थमा दीं और कमांडर को पिस्तौल

भी सौंप दी। दोनों आदमी वहां गए और उन लोगों को आवाज लगाई। जैसे ही एक नाविक थोड़ा सजग हुआ कि पीछे देखते ही जोर से चिल्लाया। तब तक बहुत देर हो चुकी थी और उसने ताबड़तोड़ गोलियां दागीं। उसका निशाना इतना सटीक था कि एक ने तो मौके पर ही दम तोड़ दिया और दूसरा बुरी तरह से घायल हो गया। उसने मदद के लिए आवाज लगाई, लेकिन कप्तान ने उसे जवाब दिया, "अब बहुत देर हो चुकी है। तुम्हें यही सजा मिलनी चाहिए थी।" इसके बाद कई गोलियों से उसका शरीर छलनी कर दिया तथा उसकी जुबान हमेशा के लिए बंद हो गई। उनका तीसरा साथी भी बुरी तरह से घायल हो गया था, जिसे कप्तान की सलाह पर जीवनदान देते हुए उसके हाथ-पैर बांधकर द्वीप पर ही छोड़ दिया गया।

इस दौरान फ्राइडे और कप्तान के मेट को मैंने नाव पर भेजा था, ताकि वहां की स्थिति पर भी नियंत्रण रखा जा सके। द्वीप पर गोलियों की आवाज सुनकर जहाज से भी तीनों साथी बारी-बारी से बाहर निकले थे, जिन्हें फ्राइडे ने बंदी बना लिया। उन तीनों को लेकर वह भी हमारे पास आ गया। इस तरह से हमारी जीत हो चुकी थी।

अब कप्तान और मैं इस जुगाड़ में लग गए थे कि किस प्रकार से जहाज को कब्जे में किया जाए। उसने मुझे बताया कि दूसरे जहाज पर अभी भी तेरह आदमी होंगे, जो कभी भी कोई षड्यंत्र रच सकते हैं।

मुझे इस बात का पूरा विश्वास था कि जहाज पर चालक दल के अन्य सदस्य अपने साथियों के वापस नहीं पहुंचने पर उनका हाल-चाल लेने के लिए जरूर ही द्वीप पर आएंगे। उसके बाद निश्चित ही उस नाव के पास भी जाएंगे। मैंने अपने आदमियों से कहा कि इसके लिए हमें सबसे पहले समुद्र किनारे ठहरी हुई नौका को उलट देना चाहिए। उसे इस कदर बर्बाद कर देना चाहिए ताकि वह किसी काम के लायक नहीं रह जाए। योजना के अनुसार हम लोग वहां गए और नाव से सारे हथियार निकालकर उसे नष्ट कर दिया। हमने नाव की पेंदी में छेद कर दिया था ताकि उसे आगे न ले जाया सके। इतने में उधर के जहाज से
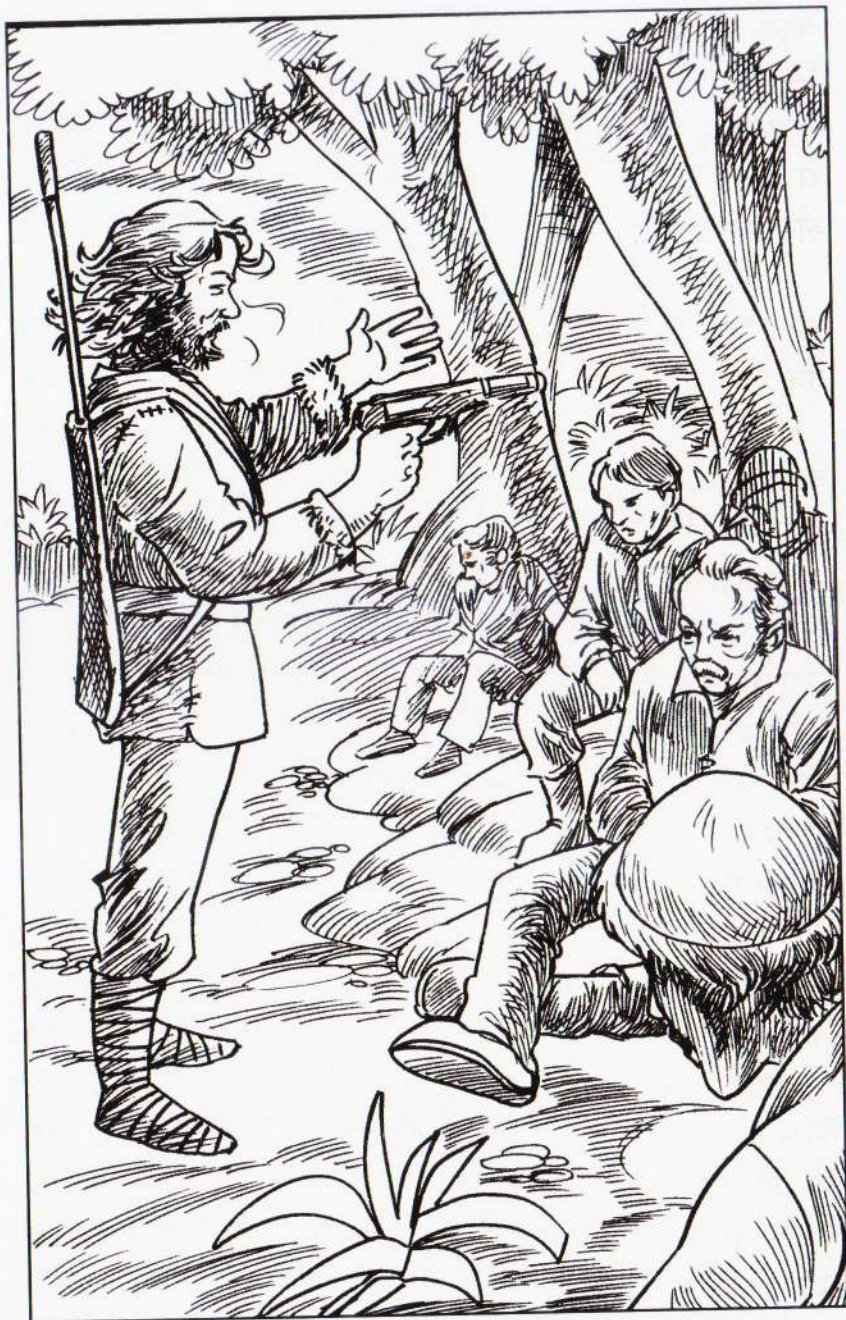
"मैं तुम लोगों को मुक्त कराने की पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन तुम्हें भी मेरी दो शर्तें माननी होंगी," मैंने उनसे पूछा।

बंदूक की गोली चलने की आवाज सुनाई दी। उनकी ओर से मिलने वाले सिगनल तथा फायरिंग का जब कोई जवाब न मिला और जब जहाज भी हिलता-डुलता नहीं दिखा तो वे लोग सतर्क हो गए। मैंने अपनी दूरबीन से देखा कि उन्होंने अपनी एक दूसरी नौका निकाली और हथियारों से लैस तकरीबन दस आदमी उस पर सवार होकर तट की ओर बढ़े।

इस प्रकार सात आदमी किनारे पर आए और तीन आदमी नाव का लंगर डालने की प्रतीक्षा में उसी पर रुके रहे। अब हमारे पास उस नाव तक पहुंचना असंभव था।

जो लोग किनारे पर उतरे थे, वे सभी एक साथ ठीक मेरी रिहाइश वाली पहाड़ी की ओर बढ़ते हुए आ रहे थे। मैं उन लोगों को इधर आते हुए स्पष्ट तौर पर देख रहा था, लेकिन वे मुझे नहीं देख पाए होंगे।

काफी देर तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने के बाद मैंने देखा कि वे अब वापस मुड़ रहे हैं। अब मेरा धैर्य जवाब देने लगा और मैंने देखा कि वे लोग वापस समुद्र की ओर मुड़ रहे थे। जब मैंने उन्हें वापस तट की ओर जाते हुए देखा तो फ्राइडे और कप्तान के मेट को पश्चिम की ओर छोटे क्रीक की तरफ जाने का आदेश दिया। उन लोगों से आधा मील की दूरी बनाए रखने का कहा, साथ ही, यह निर्देश दिया कि हर बार हमारी ओर से पुकारे जाने पर उसकी प्रतिक्रिया जरूर आनी चाहिए। हम जब भी आवाज लगाएं तो इशारा जरूर आना चाहिए। इसके बाद हम लोग उस द्वीप पर जहां तक संभव हो सका, छिपते हुए इस अभियान के लिए आगे बढ़े।

जब वे लोग नाव के पास पहुंचे तो फ्राइडे और मेट ने हमें इशारा किया और हमने भी अपनी ओर से जवाब दिया। आवाज का पीछा करते हुए तट के किनारे-किनारे पश्चिम की ओर हम लोग आगे बढ़ते रहे। वे लोग दर्रे के पास रुक गए थे, जहां पर पानी था। वे उसे पार नहीं कर सके क्योंकि वहां पार करने के लिए नाव की जरूरत थी।

मैंने देखा कि उन लोगों ने दर्रे को पार करते हुए काफी आगे बढ़ने के बाद भूमि के पास हार्बर में तीन में से एक को वहीं छोड़ दिया। बाकी

दो लोग नाव में रह गए और किनारे-किनारे नाव को खेने लगे। फ्राइडे और कप्तान के मेट का इशारा पाते हुए हम लोग दर्रे को पार कर उनकी आंखों से ओझल हो गए। हम लोग इस बात को समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर एक को किनारे पर ही छोड़ बाकी दो लोग वहां से खिसक क्यों गए थे। वह आदमी थका हुआ लग रहा था, वह नींद में झूल रहा था। कप्तान उसके पास दौड़ते हुए पहुंचा और उसे गोलियों से छलनी कर दिया।

उसने बताया कि अभी पांच लोग और हैं। उसने कप्तान से जिंदगी बचाने की क्षमायाचना भी की, लेकिन कप्तान ने उसे विद्रोह में शामिल होने का दंड दिया।

इस दौरान फ्राइडे और कप्तान के मेट ने पूरी मुस्तैदी से अपने कार्य को अंजाम दिया था। वे उन्हें उस जंगल में इतना भटका रहे थे ताकि वे पूरी तरह से थक जाएं। वे इतनी दूर लेकर निकल गए थे कि अंधेरे से पहले नाव तक वापस लौटना उनके लिए मुश्किल था। अब हम अंधेरा होने का इंतजार कर रहे थे, ताकि अंधेरे का फायदा उठाते हुए उन्हें पकड़ा जाए।

कुछ ही घंटों के बाद फ्राइडे मेरे पास पहुंचा। तब तक वो अपनी नौका तक नहीं पहुंच पाए थे। उसने मुझे बताया कि वे लोग अब काफी थक चुके होंगे और अब तेजी से दौड़ने की शक्ति उनमें नहीं बची होगी। हमारे लिए यह अच्छी खबर थी।

जब वे नाव के पास पहुंचे तो काफी हैरान थे, लेकिन यह कह पाना थोड़ा मुश्किल है कि दर्रे के किनारे ज्वार के खत्म हो जाने और अपने दो लोगों के चले जाने से वे भ्रम में थे।

मेरे आदमी उन पर नजर रखे हुए थे और अंधेरा होने का इंतजार कर रहे थे। उन लोगों के पास काफी हथियार थे। इसलिए फ्राइडे एवं मेट होशियारी से उन पर आक्रमण की रणनीति बना रहे थे। इस अभियान में उनकी मदद के लिए मैं स्वयं और कप्तान भी उनके नजदीक पहुंच चुके थे।

इतने में इधर से हमला हुआ और एक नाविक मौके पर ही मारा गया, जबकि दूसरे को भी गोली लग चुकी थी और तीसरा वहां से भाग निकला। गोली की आवाज सुनकर मैं भी तेजी से अपनी पूरी सेना के साथ अगली रणनीति के तहत पूरी सतर्कता से तैयार हो गया। मेरी सेना में अब कुल आठ लोग शामिल हो चुके थे—मैं स्वयं, मेरा लेफ्टिनेंट जनरल फ्राइडे, कप्तान, उसके दो आदमी तथा तीन बंदी, जिनके प्रति हम भरोसेमंद थे और जो हथियारों से लैस थे।

हमारी आठ लोगों की सेना देखकर उन्होंने आश्चर्यचकित होते हुए अपने हथियार नीचे रख दिए और हमसे जिंदगी बख्शने की भीख मांगी।

अब हमारा अगला कदम उस नाव की मरम्मत करना था, जिससे हम जहाज को भी कब्जे में ले सकें। इधर कप्तान अपने लोगों से बातचीत करते हुए आगे की रणनीति तैयार कर रहा था। मैंने कप्तान से पूछा कि क्या वे जहाज पर सवार होकर फ्राइडे और मुझे यहां से निकालने में मदद करेंगे या फिर यहां सभी सातों बंदियों को छोड़कर हम लोगों का यहां से निकल जाना उचित होगा।

कप्तान को इसमें कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन इसके लिए दो नावों की जरूरत थी। इस प्रकार द्वीप पर कुछ जन-हानि के पश्चात शेष बचे लोग दो नावों पर सवार होकर मध्य रात्रि के वक्त वहां से विदा हो गए।

❑❑

अध्याय-13

जैसे ही वह जहाज सुरक्षित हालत में पहुंचा तो कप्तान ने बंदूक से सात बार फायर करने का आदेश दिया, जो मेरे लिए इस बात का संकेत था कि अपेक्षित कार्य में सफलता हासिल हो गई है। मैं यह आवाज सुनकर खुशी से झूम उठा। समुद्र तट की ओर देखते हुए उस समय मुझे तड़के दो बजे के समय का आभास हुआ था।

इस संकेत को स्पष्ट सुनकर मैं तैयार होने लगा। उस दिन मैं काफी थका हुआ था, इसलिए गहरी नींद में सोया हुआ था। अचानक बंदूक की आवाज से मैं थोड़ा हैरान होते हुए उठा था। मैंने सुना कि बाहर मुझे कोई पुकार रहा है, "गवर्नर, गवर्नर," और मैं समझ गया कि यह कप्तान की आवाज है।

जब मैंने ऊपर पहाड़ी पर चढ़कर देखा तो वह मुझे जहाज की ओर इशारा करके बताने की कोशिश कर रहा था कि वह आपके लिए पूरी तरह से तैयार है। उसने मुझसे कहा, "मेरे दोस्त और अन्नदाता, आपका जहाज तैयार है। वह पूरी तरह से आपके लिए है और इस प्रकार हमारे पास सारा सामान आपका है।"

उस हालत में वह बड़ी ही सहृदयता से मेरे साथ पेश आ रहा था। इस घटनाक्रम के बाद हम यह विचार-विमर्श कर रहे थे कि कैदियों के साथ क्या किया जाना चाहिए। क्या हमें उन्हें अपने साथ ले जाना चाहिए या फिर यहीं छोड़ देना चाहिए, खासकर उन दो लोगों के बारे में हम जानते हैं कि वे अंतिम समय तक सुधारे नहीं जा सकते। कप्तान ने कहा कि वह जानता था कि ये इतने ढीठ हैं कि ये उपकार का बदला कृतघ्नता

के रूप में दे सकते हैं। इन्हें इंग्लैंड ले जाना इसलिए जरूरी लग रहा है ताकि वहां इन्हें न्यायोचित सजा दी जा सकेगी और मैंने देखा कि कप्तान भी इस बात को लेकर बहुत दुखी थे।

कप्तान की बातों को सुनकर मैंने जवाब दिया, "यदि वे ऐसा ही चाहते हैं, तो फिर मैं उन लोगों से साथ चलने का आग्रह करूंगा कि उन्हें भी यहां द्वीप पर ही छोड़ देना चाहिए।" कप्तान ने इतना सुनते ही मुझे धन्यवाद दिया।

"ठीक है," मैंने कहा, "मैं उन्हें यहां से भेजने के लिए आपकी खातिर बात करूंगा।" इसलिए मैंने फ्राइडे और दोनों बंधकों को बुलाया और कहा, "तुम लोग मुक्त हो चुके हो।"

उनमें से एक ने मुझसे यह जानना चाहा कि आखिर कप्तान हमारे साथ कुछ भी क्यों नहीं करना चाहते। आखिर कप्तान हमारी जान क्यों बख्शना चाह रहे हैं? वे मेरी दया भावना के कायल हो चुके थे। मैंने उन्हें बताया, "इस क्षमा और दया का मतलब मुझे नहीं मालूम। मैं तो बस इतना जानता हूं कि हमारे सभी आदमियों के साथ तुम भी इस द्वीप से मुक्त हो जाओगे। हम सभी लोग कप्तान के साथ समुद्री मार्ग से इंग्लैंड के लिए रवाना हो जाएंगे।" हालांकि मैंने उनसे यह भी कहा, "यदि वे इसी द्वीप पर अपनी जिंदगी गुजारना चाहें तो वे ऐसा भी कर सकते हैं।"

उन्होंने इस प्रस्ताव के लिए धन्यवाद जताया और आशंका जताते हुए कहा, "इंग्लैंड ले जाकर सूली पर लटकने से बेहतर यही रहेगा कि हम यहीं पर अपनी जिंदगी बिताएं।"

जब उन्होंने यहीं पर रहने की अपनी इच्छा जताई तो मैंने उन्हें अपनी पूरी कहानी सुनाई। मैंने उन्हें वहां जिंदगी बिताने में आसान होने वाली तमाम चीजों की जानकारी दी। मैंने उन्हें बताया कि किस तरह से मैं यहां भटकते हुए पहुंचा था और सुरक्षित ठिकाना बनाने से लेकर अनाज की पैदावार शुरू की थी। किस तरह से मैंने अनाज के टोकरे बनाए, खाना पकाने के लिए बर्तन समेत रोजमर्रा की तमाम चीजें बनाईं। अर्थात् अपनी

पूरी कहानी उन्हें बता दी। उन्हें यह भी बताया कि मैंने स्पेन के सोलह नागरिकों को एक खत लिखा है कि मैं यहां बड़ी बेसब्री से उनका इंतजार कर रहा हूं। वे भी यहीं आसपास किसी द्वीप में भटकते हुए जीवनयापन कर रहे हैं।

मैंने उन्हें जरूरत की तमाम चीजें सौंप दीं। बहुत सारे हथियार और अनाज उनके हवाले कर दिया। साथ ही, बकरियों को पालने, दूध निकालने के बारे में भी उन्हें सबकुछ बताया। मैंने उन्हें बहुत सारे बीज दिए, जिन्हें पाकर वे बहुत ही खुश हुए। इसके अलावा मटर से भरा एक थैला भी मैंने उनके हवाले कर दिया।

मैं सभी चीजों को सौंपने के बाद उन लोगों को छोड़कर जहाज पर सवार होने के लिए चल दिया। हम लोग वहां से शीघ्र ही रवाना होने की पूरी तैयारी में थे।

जब मैं उस द्वीप को छोड़ रहा था तो मैं जहाज पर बकरी की खाल से बनी अपनी उस टोपी को रखना नहीं भूला था, जिसे मैंने खुद ही बनाया था। उसके साथ ही मैंने अपना छाता और तोते को भी ले लिया। मैं उस अपार धन-दौलत को भी रखना नहीं भूला था, जिसका मैं पहले ही जिक्र कर चुका हूं। साथ ही, क्षतिग्रस्त हुए स्पेनिश जहाज से हासिल धन को भी मैंने अपने साथ रख लिया था।

और इस प्रकार, जहां तक मुझे याद है, 19 दिसंबर 1686 को मैं उस द्वीप पर 28 साल, 2 माह और 19 दिन तक रहने के पश्चात, जहाज से रवाना हो गया।

❑❑❑

कहानी पर आधारित प्रश्न

अध्याय-1

प्रश्न 1. रॉबिन्सन क्रूसो के परिवार का वर्णन करें।

प्रश्न 2. रॉबिन्सन जिस जहाज पर सवार था, हम्बर से निकलने पर उसका क्या हुआ?

अध्याय-2

प्रश्न 1. रॉबिन्सन ने अपने दोस्त की विधवा को कितने पाऊंड दिए थे?

प्रश्न 2. जूरी कौन था? रॉबिन्सन ने उसे क्या कहा था?

अध्याय-3

प्रश्न 1. क्या जहाज का कप्तान रॉबिन्सन के प्रति उदार था? यदि हां, तो कैसे?

प्रश्न 2. बारहवें दिन मास्टर ने किस चीज को ऑब्जर्व किया?

अध्याय-4

प्रश्न 1. रॉबिन्सन अपने साथ राफ्ट पर किन चीजों को लादकर ले गया?

प्रश्न 2. मौसम किस तरह का था और रॉबिन्सन कैसे प्रोत्साहित था?

अध्याय-5

प्रश्न 1. जहाज के मलबे में केबिन को ठीक से तलाशने पर रॉबिन्सन ने किन चीजों को ढूंढ़ निकाला था?

प्रश्न 2. टेंट को ठीक-ठाक लगाने से पहले रॉबिन्सन ने क्या किया?

अध्याय-6

प्रश्न 1. रॉबिन्सन ने उस द्वीप पर किस तरह के जानवरों को देखा?

प्रश्न 2. रॉबिन्सन का कुत्ता बिल्ली की ओर क्यों झपटा?

आॅल-टाइम ग्रेट क्लासिक्स

द एडवेंचर्स ऑफ़

रॉबिनसन क्रूसो

'रॉबिनसन क्रूसो' एक ऐसा उपन्यास है, जिसके नायक ने वेनेजुएला के पास, मनुष्यों की पहुंच से काफी दूर, एक निर्जन द्वीप पर अपने जीवन के लगभग 28 वर्ष बिताए।

समुद्री यात्रा के दौरान एक दुर्घटना में अपना बचाव करते हुए नायक उस निर्जन द्वीप पर पहुंच गया था। इस उपन्यास में बहुत साहसिक कथानकों को समेटा गया है। नायक को समुद्र से इतना लगा ... अकेले ही अपना जीवन व्यतीत करने ... जरूरत की अनेक चीजें बनाकर सुवि...
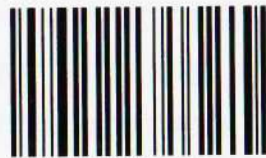
उ... के दौरान कई बार नायक का सामना ... नरभक्षियों और विद्रोहियों ... विजय प्राप्त कर ली तथा ... ल हो गया।

... ज्यादा समय बीत चुका ... और पाठकों की मनोदशा ... पाठकों के बीच अब भी

मनोज पब्लिकेशन्स

ISBN 978-81-310-1754-8

₹ 80